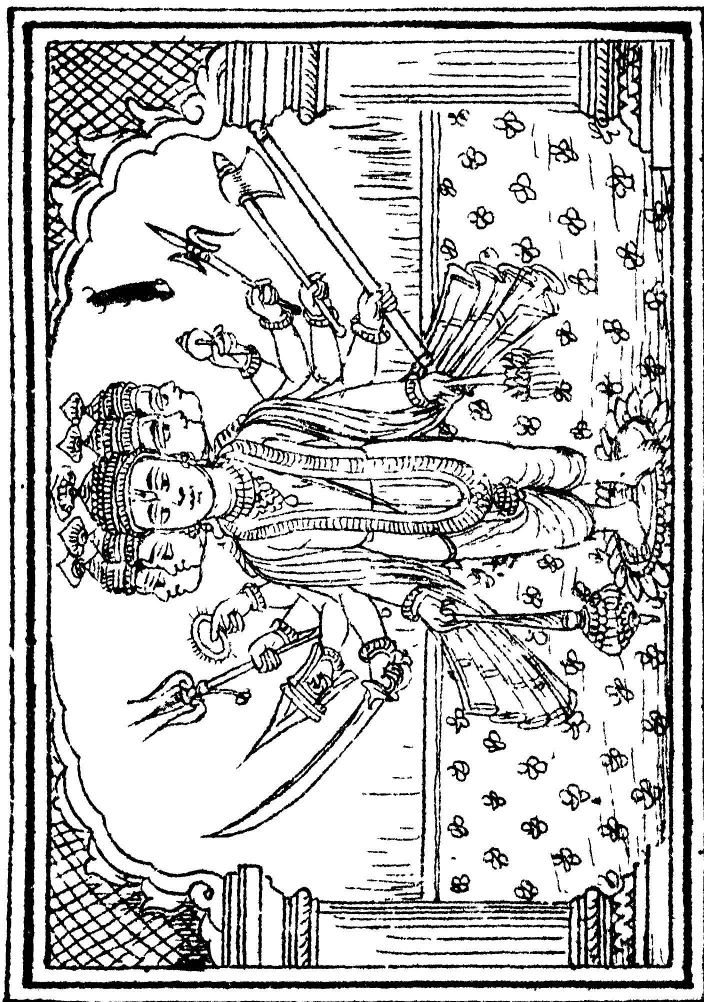
અથશ્રીમદ્ભગવદ્ગીતા

સટીક ગુજરાતી પ્રારભંઃ



॥श्रीगणेशायनमः॥ श्रीगोपालकृष्णायनमः॥ ॥
ॐ अस्यश्रीभगवद्गीतामालामंत्रस्य॥ भगवान्वेदव्या
सऋषिः॥ अनुष्टुप्छंदः॥ श्रीकृष्णः परमात्मादेवता॥
अशोच्यानन्वशोचस्त्वंप्रज्ञावादांश्चभाषसइतिबीजं॥
सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रजेतिशक्तिः॥ अहं
त्वासर्वपापेभ्योमोक्षयिष्यामिमाशुचइतिकीलकं॥नै
नंछिंदंतिशस्त्राणिनैनंदहतिपावकइत्यंगुष्ठाभ्यांनमः॥
नचैनंक्लेदयंत्यापोनशोषयतिमारुतइतितर्जनीभ्यांनमः
॥अच्छेद्योयमदाह्योयमक्लेद्योशोष्यएवचेतिमध्यमा-
भ्यांनमः॥नित्यः सर्वगतस्थाणुरचलोयंसनातनइत्यना-
मिकाभ्यांनमः॥ पश्यमेपार्थरूपाणिशतशोथसहस्रश
इतिकनिष्ठिकाभ्यांनमः॥नानाविधानिदिव्यानिनानाव

र्णाकृतिनिचेतिकरतलकरपृष्ठाभ्यांनमः ॥ इतिकरन्यासः
॥ अथहृदयादिन्यासः ॥ नैनंछिंदंतिशस्त्राणिनैनंदहति-
पावकइतिहृदयायनमः ॥ नचैनंक्लेदयंत्यापोनशोषयइतिमा
रुतइतिशिरसेस्वाहा ॥ अच्छेद्योयमदाह्योयमक्लेद्योशो
ष्यएवचेतिशिखायैवषट् ॥ नित्यः सर्वगतःस्थाणुरचलो
यंसनातनइतिकवचायहुं ॥ पश्यमेपार्थरूपाणीशत-
शोथसहस्रशइतिनेत्रत्रयायवौषट् ॥ नानाविधानिदि
व्यानिनानावर्णाकृतीनिचेतिअस्त्रायफट् ॥ श्रीकृष्ण
प्रीत्यर्थेपाठेविनियोगः ॥ ॐ पार्थायप्रतिबोधितांभग
वतानारायणेनस्वयंव्यासेनग्रथितांपुराणमुनिनामध्ये
महाभारतं ॥ अद्वैतामृतवर्षिणींभगवतीमष्टादशाध्या
यिनीं ॥ अंबत्वामनुसंदधामिभगवद्गीतेभवद्वेषिणीं ॥

॥ १ ॥ नमोस्तुते व्यासविशाल बुद्धे फुल्लारविंदायतपत्रने
त्र ॥ येनत्वया भारत तैलपूर्णः प्रज्वालितोज्ञानमयः प्रदीपः
॥ २ ॥ प्रपन्नपारिजातायतोत्रवेत्रैकपाणये ॥ ज्ञानमुद्राय-
कृष्णायगीतामृतदुहेनमः ॥ ३ ॥ सर्वोपनिषदोगावोदोग्धा
गोपालनंदनः ॥ पार्थोवत्सः सुधीर्भोक्तादुग्धंगीतामृतंमह
त् ॥ ४ ॥ वसुदेवसुतंदेवं कंसचाणुरमर्दनम् ॥ देवकीपर-
मानंदं कृष्णंवंदेजगद्गुरुम् ॥ ५ ॥ भीष्मद्रोणतटाजयद्रथ-
जलागांधारनीलोत्पला ॥ शल्यग्राहवती कृपेणवहनी कर्णे
नवेलाकुला ॥ अश्वत्थामविकर्णघोरमकरादुर्योधनावर्ति
नी ॥ सोत्तीर्णाखलुपांडवै रणनदीकैवर्तकः केशवः ॥ ६ ॥
पाराशर्यवचः सरोजममलंगीतार्थगंधोत्कटं नानाख्यान
ककेसरं हरिकथासंबोधनाबोधितम् ॥ लोकेसज्जनष

द्पदैरहरहः पेपीयमानंमुदाभूयाद्भारतपंकजंकलिम
लप्रध्वंसिनःश्रेयसे॥ मूकंकरोतिवाचालंपंगुलंघयते-
गिरिम्॥ यत्कृपातमहंवंदेपरमानंदमाधवम् ॥ ८ ॥ यंब्र-
ह्मावरुणेंद्ररुद्रमरुतःस्तुन्वंतिदिव्यैःस्तवैर्वेदैःसांगपदक्र
मोपनिषदैर्गायंतियंसामगाः॥ ध्यानावस्थितनतद्गतेनमन-
नसापश्यंतियंयोगिनोयस्यांतंनविदुःसुरासुरगणादेवा
यतस्मैनमः॥ ७ ॥ ॥ टीका ॥ ते राजा पांडु अने धृ
तराष्ट्र ए बेउ विमात्र भाई हता तेमां राजा पांडुनी
बे स्त्री हती एक कुंताणी अने माद्रि तेमां कुंताजीने त्रण
पुत्र थया राजा धर्म थकी युधिष्ठिर नामे पुत्र थयो, वा
युथकी भीमसेन नामे पुत्र थयो इंद्रथकी अरजुन नामे
पुत्र थयो. माद्रीने विषे अश्विनीकुमार थकी नकुल तथा

सहदेवनामे ए पुत्र थया, राजा धृतराष्ट्र थकी गांधारी
नामे स्त्रीने विशेसो पुत्र थया. तेमां मोटो दुर्योधनना
मे पुत्र हतो परंतु राजा धृतराष्ट्र जन्मनो अंध हतो तेथी
राजकारभार दुर्योधनने स्वाधीन हतु ज्यारे राजा यु
धिष्ठिरने जुगटु रमाडी कपटे करीने राज्य लई लीधुं-
अने बार वरशनु वनवास आप्यो ज्यारे वनवास थी
पाछा घेर आव्या त्यारे दुर्योधन पासेथी राज्य मा
ग्यु तो पण आप्यु नहीं ते सारु कुरुक्षेत्रमो युध्धकर-
वा गया ते समे धृतराष्ट्रे पण युध्धनी तैयारी करी तेजो
ईने वेदव्यासजी कहेछे के हे धृतराष्ट्र तमे आंख्यो विना-
युध्धमां जईने सुं करशो त्यारे धृतराष्ट्र कहेछे के हे पिता
अमे युध्धनु वृत्तांत शांभळीशुं ते वात सांभळी व्यास

कहे छे के हे राजा तमारो सारथी ने संजय ते मारो शिष्य
छे जेने अमे वरदान आपीजे छीजे तेथी अहीं बे
ठां सर्व वृत्तांत तमने कहेशे. ते वात सांभळी राजा धृत
राष्ट्र हस्तिनापुरमां रह्या अने कौरव पांडव गीयारअक्षौ
हणी शेन्या लेईने कुरुक्षेत्रमां जई युध्धनी तैयारी करी
त्यां अरजुन जुवे छे तो बेउ सैन्यामां पोताना सगा संबं
धी मित्रतथा कुटंबी ओळखे जेमने कहेम मारुं. अेवुं सम
जने धनुषबाण पृथ्वी उपर नाखी दीधुं अने रथना प
छवाडे जई बेठा. त्यारे श्रीकृष्ण जुवे छे के आ अरजुने-
पोतानु क्षत्रीय धर्म त्यागी दीधुं तेथी अेनु कल्याण थ
शे नहीं वास्ते अेने ज्ञान उपदेश करवुं जोईजे तेथी
जे स्वधर्ममां चालशे अेवुं बिचारीने गीताजीनो उपदेश

आप्यो ते गीता श्रीमद् महाभारतने विषे सर्व श्लोक,
श्री कृष्णना मुखारविंद थी रचेला छे अने वळी बीजा
श्लोको पण वेदव्यासजीअे नीर्माण करेला छे ते गीता-
मां प्रथम श्लोक धृतराष्ट्रना प्रश्ननो छे ॥ ॥ श्लोक
॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेत्तायुयु-
त्सवः ॥ मामकाः पांडवाश्चैव किम कुर्वतु संजय ॥१॥
॥ अर्थ ॥ धृतराष्ट्र संजयने पुछे छे हे संजय धर्म भू-
मि कुरुक्षेत्र तेमां आमारा पुत्र अने पांडुना पुत्र युध्ध
करवा सारुं भेठा मळ्या छे ते हमणा शुं करे छे (आ श्लो-
कमां धर्मक्षेत्र अेवुं वचन छे अेनुं कारण अे छे के कुरु-
क्षेत्र छे ते धर्म क्षेत्र छे. अेमां धर्मथीज युध्ध करे ते-
नी जय थाय अने अमारा पुत्र अधर्मी छे अेनो पराज-

य ल्हेर थशे तेथी न्यलित थई धृतराष्ट्र संजयने
पुछे छे:) ॥ श्लोक ॥ ॥ संजयउवाच ॥ ॥ दृष्ट्वातु पांड
वानीकं व्युढंदुर्योधनस्तदा ॥ आचार्यमुपसंगम्य राजा
वचन मब्रवीत् ॥ २ ॥ अर्थ ॥ संजय धृतराष्ट्रनें कहे
छे के राजा दुर्योधन व्यूह रचनायुक्त पांडवनुं सैन्यने
जोइने ते समयमां द्रोणाचार्यजीना पासे जइने वच
न कहे छे ॥ २ ॥ श्लोक ॥ पश्यैतां पांडुपुत्राणामाचार्य म
हतीं चमूम् ॥ व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तवशिष्येण धीमता ॥
३ ॥ ॥ अर्थ ॥ हे आचार्य हे बुध्धीमान् तमारो शि
ष्य जेवो जे द्रुपद राजानो पुत्र धृष्टद्युम्न तेणे व्यूह रच
नाकरी सज्ज करेली जेवीने पांडुना पुत्रनी सेन्या तेने त
मे जुओ ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ अत्रशूरा महेष्वासा भीमा-

र्जुनसमायुधि॥ युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्चमहार
थः ॥ ४ ॥ ॥अर्थ॥ आ सैन्यमां जे शुरवीरछे ते सं
ग्राम करवांमां भीमसेन अर्जुन जेवाजे धनुषधारी
छे तेना नाम युयुधान विराट अने महारथी द्रुपद॥४॥
॥श्लोक॥ धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्चवीर्यवान्॥
पुरुजित्कुंतिभोजश्च शैब्यश्चनरपुंगवः ॥ ५ ॥ ॥अर्थ
धृष्टकेतु चेकितान अने पराक्रमी काशीनो राजा पुरुजित
कुंतीभोज अने पुरुषोमांउत्तम राजा शैब्यनामा॥५॥
॥ श्लोक ॥ युधामन्युश्चविक्रांतउत्तमौजाश्चवीर्यवान्
॥ सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥ ६ ॥अर्थ
जे समान शूरवीर पाक्रम वाळामां उत्तम अने बळ-
वान जेवो युधामन्यु अने शुभद्रानो पुत्र अभिमन्यु अ

ने द्रुपदीना पांचे पुत्र ए सर्वे महारथी छे ने पुरुश दश
हजार शूरवीरने जोडनण जीते अने सस्त्र विद्यामां तथा
शास्त्रमां प्रविण होय तेने महारथी केहे छे ॥ ६ ॥ ॥
श्लोक ॥ अस्माकंतु विशिष्टायेतान्निबोधद्विजोत्त-
म ॥ नायकाममसैन्यस्य संज्ञार्थं तान् ब्रवीमिते ॥ ७ ॥
अर्थ ॥ पांडवोना सैन्यना शूरवीरोने जोईने दुर्योधन पो
ताना गुरु द्रोण आचारजने केछे के द्विजोत्तम आपणीसे
न्यामां शुरवीरो उत्तम छे तेने तमे जाणो छो तेमना ना
म हुं कहुं ते तमे सांभळो, ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ भवान्भीष्म
श्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः ॥ अश्वत्थामा विकर्ण-
श्च सोमदत्ति स्तथैवच ॥ ८ ॥ ॥ अर्थ ॥ प्रथम (तवान्
नाम तमे अने बीजा पितामह भीष्म करण अने संग्रा

अने जीतवा वाळा कृपाचार्य जेत्था · अश्वस्थामा अने विकर्ण ते समान सोमदत्त राजानो पुत्र भुरीश्रवा ॥ ८ ॥

॥ श्लोक ॥ अन्येच बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः ॥ नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥ ९ ॥ अर्थ अने बीजा राजा जो पण मारावास्ते त्याग कर्यु छे जीवन ते जेणे एवा नाना प्रकारना शस्त्रना प्रहार करवावाळा बहु शुरवीर छे अने सर्व युध्ध करवामां समर्थ छे,

॥ श्लोक ॥ अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् ॥ पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भिमाभिरक्षितम् ॥ १० ॥ अर्थ आपणी अगियार अक्षोहणी सेन्यानुं रक्षण करनार तो भीष्म पितामह छे तो पण असमर्थ पणु जेवामां आवे छे अने पांडुवोनी सात अक्षोहणी सेन्या छे, तेनुं रक्षण कर

नार भीमसेन छे तेथी समर्थ जेवामां आवेछे ते सारु
दुर्योधनना मनमां एवो विचार छे के भीष्म पितामह जोके
ना पक्ष पाती छे ने पांडवोनी सैन्यानुं रक्षण करशे तो आ-
पणी शेन्यानुं रक्षण करनार कोई नथी, तेना तमे विचार क
रो (एक अक्षोहणी संख्या) रथ एक, हाथी एक, पेदल ५
पांच घोडा ३ त्रण एटलाने एक पती कहेछे, एवा त्रण प
तीने, एक सेनामुख कहेछे, एवा त्रण सेना मुखने एक गुल्म
कहे छे, त्रण गुल्मने एक, चमु कहेछे, एवा त्रण चमुने अ
क- अपनीकीनी कहेछे एवी दश १० अनी कीनीने एक अ
क्षोहणी कहेछे कु अक्षोहणी (६५६१००) छ लाख छप
न हजारने एकशो एवी अगीयार अक्षोहणी कोरवनी सेन्यानी सं ६
ख्या तेनु माप (७२१७१००) बोतेर लाख सतर हजार ने-

एक सो (पांडवनी सात अक्षोहणीनी संख्या) ४५९२७००

पीसताळीस लाख ओगणु हजारने सातशें एकंदर सैन्य अ

ढार अक्षोहणीनी संख्या (११८०१८००) एक करोड अग्यार

लाख नव हजारने आठशें ॥ १० ॥ श्लोक ॥ अयनेषु च

सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः ॥ भीष्ममेवाभिरक्षंतु भवं

तः सर्व एव हि ॥ ११ ॥ अर्थ- हवे जे जे ठेकाणे शत्रुना सै

न्यना प्रवेशना स्थान छे. ते ते ठेकाणे पोत पोताना जुथ

लेईने सावध थईने उत्साही अने तमे सर्व मळीने भीष्म

पिता महनी रक्षा करो, कारण के कोईपण शत्रुनां सैन्य नो

हुत भीष्म पीता पासे आवी शके नहीं ॥ ११ ॥ श्लोक ॥

तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः ॥ सिंहनादं विन

द्योच्चैः शंखं दध्मौ प्रतापवान् ॥ १२ ॥ अर्थ ॥ जेवा प्र

तापी अने कुरु वंशमां मोटा एवा पितामह जे भीष्म ते दु
र्योधनने हर्ष उत्पन्न करवा सारुं सिंहना शब्दने निंघाड
रे एवा स्वरे करीने पोतानो शंख वगाडवा लाग्या ॥ १२ ॥
॥श्लोक॥ ॥ ततः शंखाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः
सहसैवाभ्यहन्यंत स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥ १३ ॥ अर्थ
ज्यारे भीष्म पीताए शंख वगाड्यो ते सांभळीने बधी सै-
न्यमां शंख, भेरी, ढोल, नगारां, रणशींग, एवां वाजींत्र व
गाड्यां तेनो नाद भयंकारी थवा लाग्यो ॥ १३ ॥ ॥श्लो
क॥ ॥ ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यंदने स्थितौ ॥ माध-
वः पांडवश्चैव दिव्यौ शंखौ प्रदध्मतुः ॥ १४ ॥ अर्थ॥
हवे ते उपरांत श्वेतवर्णना चार घोडा जोड्या छे जेमां ए-
वो जे मोटो रथ ते उपर बेठेला श्री कृष्ण अने अर्जुन पोतपो

तानां दिव्य शंखनो नाद करवा लाग्या ॥ १४ ॥ श्लोक ॥
पांचजन्यं हृषीकेशो देवदत्तो धनंजयः ॥ पौंड्रं दध्मौ म
हाशंखं भीमकर्मा वृकोदरः ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ हृषीके-
श एवा जे श्रीकृष्ण पोताना उत्तम एवा जे पांचजन्य ना
मे शंख वगाडवा लाग्या धनंजय एवा जे अर्जुन तेमणे
पोताना देवदत्त नामे शंख वगाड्या लाग्या त्यजने आपे
एवा छे काम तेना, वळी उदरमां वृकनामा अग्नी जनी प्र
जळछे जेने एवा जे भीमसेन तेमणे पोताना पौंड्र नामे
मोटा शंखने वगाडवा लाग्या ॥ १५ ॥ श्लोक ॥ अनंतवि
जयं राजा कुंतीपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ नकुलः सहदेवश्च सुघो
षमणिपुष्पकौ ॥ १६ ॥ अर्थ ॥ कुंतीजीना पुत्र एवा जे रा
जा युधिष्ठिर तेमणे अनंत विजय नामे शंखने वगाडवा-

लाग्या, माद्रिना पुत्र जेवा ने नकुळ ते अने सुघोष नामे शं
ख वगाडवा लाग्या, अने सहदेव मणिपुष्पक नामे शंख
वगाडवा लाग्या ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ काश्यश्च परमेष्वासः शि
खंडी च महारथः ॥ धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापरा
जितः ॥ १७ ॥ अर्थ ॥ अने उत्तम छे धनुष्य ते जेनुं जेवा
ने काशीराज अने महारथी शीखंडी अने धृष्टद्युम्न त
था, विराट राजा अने शत्रुए ने जीती शके नहीं जेवा ने
सात्यकी ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृ
थिवीपते ॥ सौभद्रश्च महाबाहुः शंखान्दध्मुः पृथक्पृ
थक् ॥ १८ ॥ अर्थ ॥ हे पृथ्वीपते हे धृतराष्ट्र द्रुपदरा
जा अने द्रुपदीना पुत्र सर्वे अने मोटी छे भुजा ते जेनी
जेवो सुभद्राना पुत्र अभिमन्यु ते पण पोताना शंखो

नो नाद करवा लाग्या ॥१८॥ श्लोक ॥ सघोषो धार्त्तराष्ट्राणां हृदयानिव्यदारयन् ॥ नभश्चपृथिवीं चैवतुमुलोव्यनुनादयन् ॥१९॥ अर्थ ॥ ते शंखोना नादे करी धृतराष्ट्रना दुर्योधनादी सोपुत्रना हृदय विदारण थया अने आकाश पृथ्वी मां भयंकर शब्द व्यापी गयो; ॥१९॥ ॥
श्लोक ॥ अथव्यवस्थितान् दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्कपिध्वजः ॥ प्रवृत्तेशस्त्रसंपाते धनुरुद्यम्यपांडव ॥२०॥ अर्थ ॥ ते उपरांत सैन्य धृतराष्ट्र राजनने देखे के हे महीपती त्यां मोटा घोर शब्द नीवर्त थया पछी पोतानी परस्पर सैन्य मां शस्त्र चालु थयां ते जोईने कपीध्वज जेवाले अरजुन पोतानुं धनुष्य सज्ज करीने तैयार हेवा जेवाले अर्जुन ॥२०॥ श्लोक ॥ हृषीकेशंतदावाक्यमिदमाहमहीपते

॥सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥ २१ ॥ अर्थ
हे महीपते हृषीकेश एवाने श्रीकृष्ण तेमना प्रत्ये वचन
बोलवा लाग्या हे अच्युत आपणी तथा परसैन्यनी मध्य
मां मारो रथ स्थापन करो ॥ २१ ॥ श्लोक ॥ यावदेतान्नि
रीक्ष्येऽहं योद्धुकामानवस्थितान् ॥ कैर्मया सह योद्धव्यम
स्मिन् रणसमुद्यमे ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ अने पर सैन्यमां यु
द्धनी इच्छा राखी उभेला तेमने जेवाने हुं इच्छुं छुं के प्र
थम आ रण भूमिमां मारी साथे युद्ध करवा योग्य को
ण छे ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र स
मागताः ॥ धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥२३॥
अर्थ ॥ अने दुर्बुद्धिवान धृतराष्ट्रनो पुत्र जे दुर्योधन
तेना सैन्यने वीशे युद्ध करवा सारि आवेला अने एनुं

मीथ ईच्छुनारा एवा जे शुरवीरो तेमने जोवाने हुं ईच्छा
रा खुछुं ॥२२॥ ॥ संजय उवाच ॥ ॥ एवमुक्तो हृषीके
शो गुडाकेशेन भारत ॥ सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयि-
त्वा रथोत्तमम् ॥ २३ ॥ अर्थ ॥ संजय धृतराष्ट्रने कहेछे
हे महिपते भरतवंशमां उत्पन्न थएला हे धृतराष्ट्र गु
डाकेश (ने नींद्रा तेने जीतवा वाळा एवा जे अर्जुन तेम
णे भगवान प्रत्ये कह्युं के हे कृष्ण मारो रथ बे सैन्य-
ना मध्यमां उभो राखो ते वचन सांभळी बेउ सै-
न्यना मध्यमां रथ उभो राखीने ॥२४॥ श्लोक ॥
भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषांच महिक्षिताम् ॥ उवाच पा-
र्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥ २५ ॥ अर्थ ॥ भी
ष्म द्रोणाचार्य, छे मुख्यने मां, एवा जे राजा जो तेआ

गळ श्री कृष्णजे केह्युं छे के हे कुंतीपुत्र आ सर्वे कुरुवंशीओने ज्यो-
ओने तमे जुओ ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः
पितॄनथ पितामहान् ॥ आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रा-
न्पौत्रान्सखींस्तथा ॥ २६ ॥ अर्थ ॥ ते समे (पार्थ) अ-
र्जुने अर्जुन बंने सैन्यना मध्यमां उभेलाओने जुवे छे तो-
पीता समान भूरीश्रवादीक काकाने आदीलईने पीतामह
जेवाने भीष्म सोमदत्तादी अने आचार्य द्रोणाचार्यादी
क मातुल शल्यने शकुनीने आदीलईने जेवा दुर्योधनादिने
पोताना पांचपुत्रोने तेनापुत्रोने अने सखा जेवा अश्वत्थामा
ने जयद्रथादी ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेन-
योरुभयोरपि ॥ तान्समीक्ष्य स कौंतेयः सर्वान्बंधूनवस्थि-
तान् ॥ कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत् ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ ससरा एवा ने दुपदादी अने सुहृद एवा ने कृत व
र्मादी जे सर्वे सैन्यमां उभा रहेला ओने जोईने कुंती पुत्र ए
वा ने अर्जुन. अती कृपा ए युक्त दुःख अने वश थईने श्री कृष्ण भ
गवानने वचन कहे छे॥ श्लोक॥ ॥अर्जुन उवाच॥ ॥दृष्ट्वे
मं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितं ॥ सीदंति मम गात्रा
णि मुखं च परिशुष्यति ॥ वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जाय
ते ॥ २९ ॥ अर्थ ॥ हे श्रीकृष्ण युद्ध करवानी इच्छा ने मने
एवा उभेला ने अमारा बंधुजनो तेमने जोईने मारुं शरीर
शीथल थई जायछे अने मुख शुकाई जायछे अने मारा देह
ने विषे कंपन थायछे रोमांचित उभा थायछे ॥ २९ ॥ श्लोक ॥
गांडीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते ॥ नच शक्नोम्यव
स्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥ ३० ॥ अर्थ ॥ अने हाथमांथी

गांडीव धनुष्य ते पण पडी जायछे· अने मारा शरीर नी त्वचा
बळेछे· तेथी हुं आ रण भुमीमां ऊभो रहेवाने समर्थ नथी
अने मारुं मन भमणाना पंथ जेमछे ॥ ३० ॥ श्लोक ॥
निमित्तानिचपश्यामिविपरीतानिकेशव ॥ नचश्रेयोऽनुप
श्यामिहत्वास्वजनमाहवे ॥ ३१ ॥ अर्थ ॥ हे केशव निमि
त्तने शुकुन ते पण मने अवळा जेवामां आवेछे अने
संग्रामने विशे मारा भाई ओने मारीने पाछळ शुं क-
ल्याण थशे ते पण हुं जोतो नथी ॥ ३१ ॥ श्लोक ॥ नकां
क्षे विजयंकृष्णनचराज्यंसुखानिच ॥ किंनोराज्येन गो
विंद किंभोगैर्जीवितेनवा ॥ ३२ ॥ अर्थ ॥ हे कृष्ण हुं सं
ग्रामने विशे शत्रुने जीतवानी इच्छा राखतो नथी अने
राज्यनी पण इच्छा राखतो नथी ते मज सुखनी पण इ

च्छा राख्यतो नथी हे गोवींद आमने राज्यनुं शुं प्रयोज
नछे अने भोग भोगववानुं शुं प्रयोजन छे; ने आयुष्य
भोगववानुं पण शुं प्रयोजन छे; ॥ ३२ ॥ श्लोक ॥ येषा
मर्थे कांक्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानिच ॥ तइमेवस्थि
ता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानिच ॥ ३३ ॥ अर्थ ॥ हे
कृष्ण हुं जे मनावास्ते राज्यनी इछा करतो हतो अने भो
गनी इछा करतो हतो अने सुखनी पण इछा करतो ह
तो ते आ सर्वे प्राण अने धनने मुकीने युद्धमां उभा
रहेल्या छे ॥ ३३ ॥ श्लोक ॥ आचार्याः पितरः पुत्रास्त
थैवचपितामहाः ॥ मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः
संबंधिनस्तथा ॥ ३४ ॥ अर्थ ॥ ए रीते अर्जुन श्री
कृष्णने कहे छे आ रणभुमिमां मारा सामने युद्धक

रथाने ऊभेलाछे तेडोई आव्यांछे, तेमांकोई पीता
अरोजगर ऊभेलाछे. तेमांकोई पुत्र अने कोई पीतामह स
मान अने कोई मामा. कोई स्वसुर कोई पौत्र कोई सा-
ळा अने बीजापण संबंधी लोकछे ॥ ३४ ॥ श्लोक ॥
एतान्नहंतुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन ॥ अपित्रैलो
क्यराज्यस्य हेतोः किंनुमहीकृते ॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ ते
सारे हे मधुसूदन त्रण लोकना राज्य सारु जेओ मुने
मारशे तो पण हुं एमने मारवानी इछा राखतो नथी
त्यारे पृथ्वीना राज्य सारु शुं करवा मारे ॥ ३५ ॥ श्लोक ॥
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः काप्रीतिः स्याज्जनार्दन ॥ पाप
मेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥ ३६ ॥ अर्थ ॥
हे जनार्दन धृतराष्ट्रना पुत्रोने मारीने अमारे मन शुं प्र-

सन्न थशे आ आततार्ई ने मारा (शत्रुओ) तेमने
जोहुं मारीश तो मने पाप लागशे आततार्ई छ प्रकारना
छे जे माणस पारका घरमें आग लगाडे छे ते, जे बीजा-
नेघस्मामध्ये झेर खवरावे छे ते २ जे माणस शस्त्र बांधीने सन-
मुख युद्ध करवाने आवे छे ते ३ जे माणस पर द्रव्य-
हरण करे छे तो ४ जे माणस पृथ्वि हरण करे छे ५ जे मा-
णस पारकी स्त्री हरण करे छे ते ६ ए छ प्रकारना आत-
तार्ई जाणवा ॥ ३६ ॥ श्लोक ॥ तस्मान्नार्हा वयं हंतुं
धार्तराष्ट्रान्स्वबांधवान् ॥ स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः
स्याम माधव ॥ ३७ ॥ ॥ अर्थ ॥ ते वास्ते अमारा-
बंधु जे धृतराष्ट्रना पुत्रो तेमने मारवाने हुं योग्य नथी-
हे माधव अमे त्यार्ई ओने मारीने केम सुखी थइशुं ॥

॥ ३७ ॥ श्लोक॥ यद्यप्येते नपश्यंति लोभोपहतचेतसः ॥ कुलक्षयकृतंदोषं मित्रद्रोहेचपातकं ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ हे जनार्दन लोभेकरीने नाश पाम्यो छे बुध्धी तेने जेनी एवाजे कुर्यो धनादिक कुलक्षय थाय तेनो दोस अने मीत्रनो द्रोह थाय तेनुं जे पाप ते ए जनता नथी ॥ ३८ ॥ श्लोक ॥ कथंनज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुं ॥ कुलक्षयकृतंदोषंप्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥ ३९ ॥

अर्थ ॥ ॥ हे जनार्दन कुलक्षयनो जे दोष ते जाणवावाला एवा जे अमे ते अमारे आ कुलक्षयनाजे पाप तेथी रही तथवाने केम न जाणवुं जोईए जरुर जाणवुं जोईए ॥ ३९ ॥ श्लोक ॥ कुलक्षयेप्रणश्यंति कुलधर्माः सनातनाः ॥ धर्मेनष्टेकुलंकृत्स्नमधर्मोभिभवत्युत ॥

॥ ४०॥ अर्थ॥ अने कुळनो नाश थवाथी (सनातन)
जुना एवा जे कुळना धर्म ते नास थई जाय छे; अने क
रीथी धर्म नास थवाथी सर्व कुळ अधर्म पुडलपाअछे ॥
४०॥ अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यंति कुलस्त्रियः ॥
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः ॥ ४१॥ अर्थ॥
हे कृष्ण कुळमां अधर्म प्राप्त थवाथी कुळमानीजे स्त्रीयो
(ते व्यभिचारणी) नाम परपुरुषनु मुख जोवावाळी या
अछे; हे (वार्ष्णेय) विष्णिवंशमां उत्पन्न थएला हे
भगवान ते दुष्ट स्त्रीयोमां वर्णसंकर जन्म उत्पन्न थाअ
छे; (वार्ष्णेय) केवाथी जेउ कुळमी शुध्धता प्रगट देखा
डी जेम पिता एवाने वसुदेव तेनु जादव कुळ छे अने मा
ताने देवकी तेनु वे ष्णि कुळ छे एमां एकारण छे के अमा

रे कुळ तमारा कुळ उपरोपर शुध्ध रेहेवुं जोईए; ॥ ४१ ॥
श्लोक ॥ संकरोनरकायैव कुलघ्नानांकुलस्यच ॥ पतं-
ति पितरोह्येषांलुप्तपिंडोदकक्रियाः ॥ ४२ ॥ अर्थ ॥
अने जे वर्णसंकर थाय कुळ घाती पोताना कुळ नरकने वा
स्ते छे तेनु कारण जेने लोपथई गएछे; पींडउदक ॥ या तेने
नी जेवाने नापुरवाने स्वर्गमां थी पृथ्विउपर पोडे छे; ॥ ४२
॥ श्लोक ॥ दोषैरेतैः कुलघ्नानांवर्णशंकरकारकैः ॥ उ
त्साद्यंतेजातिधर्माः कुलधर्माश्चशाश्वताः ॥ ४३ ॥ ॥
अर्थ ॥ वर्ण शंकर ने थाय तेथकी करेला जेवाने दोशा ते
एे करी कुल घाती जो छे ते जातीधर्म अने सनातन जेवा
ने कुळना धर्म ते मुळ सहीत नाश थई जायछेः ॥ ४३ ॥ श्लो
क ॥ उत्सन्नकुलधर्माणांमनुष्याणांजनार्दन ॥ नरके नि

पतंवासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥ ४४ ॥ अर्थ ॥ हे जनार्दन
छेदन थआछे कुळना धर्म जेमना एवा मनुष्योने नरकने वि
शे (अवश्य) नाम निश्चे वास थाअछे जेम अमे धर्मशा
स्त्रना विशे पुर्वे सांभळेलुछे ॥ ४४ ॥ श्लोक ॥ अहोबत
महत्पापंकर्तुंव्यवसितावयम् ॥ यद्राज्यसुखलोभेन हं
तुंस्वजनमुद्यताः ॥ ४५ ॥ अर्थ ॥ अहो एतिखेदे बहुप
श्चात्ताप करवानी वातछे के नायवन्ने अमे मोहुंपाप करवा
ने निश्चे करीअे छीअे के राज्यमळवाथी शुखथशे अेला
लथी अमारा बंधु जनोने मारवाना उपायो करी अेछी
अे; ॥ ४५ ॥ श्लोक ॥ यदीमाम प्रतीकारमशस्त्रंशस्त्र
पाणयः ॥ धार्तराष्ट्ररणेहन्युस्तन्मेक्षेमतरंभवेत् ॥ ४६
॥ अर्थ ॥ हे मधुसूदन शस्त्र धारण कर्याछे हाथमां जेम

एरुअेवाने धृतराष्ट्रना दुर्योधनादि पुत्रो अने शस्त्र रहीत
अने सनमुख युध्ध करतोनथी अेवोने हुं तेमने रणमांन्ने
मारशे तोपण मारिं अतीशे कल्याणथशे; ॥ ४६ ॥ श्लोक
॥ ॥ संजयउवाच ॥ ॥ एवमुक्त्वाऽर्जुनः संख्ये रथो
पस्थ उपाविशत् ॥ विसृज्यसशरंचापं शोकसंविग्न·
मानसः ॥ ४७ ॥ इतिश्री मद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्म·
विद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुनविषादयोगो
नामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ टीका ॥ संजय कहेछे यतराष्ट्र
अर्जुन अेम कहीने पोतानुं धनुष्यबाणनाखीने शोकातुरथको
थतोल्लरथोनानी वचेरथने मध्यत्नागे बेशतोहुवो·४७ इतीश्री
भगवद्गीतार्थ दीपिकायां अरजुन विषादयोगोनाम प्रथ·
मोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

॥श्रीगणेशायनमः॥ श्लोक॥ संजयउवाच॥ तंतथाकृ
पयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्॥ विषीदंतमिदंवाक्यमु
वाचमधुसूदनः॥१॥ अर्थ॥ संजय धृतराष्ट्रने कहे छे के
हे राजन पोताना संबंधीओने जोईने कृपाए करीने युक्त छे
हृदय तेनुं जेवा अने अश्रुए करीने भरेलां छे नेत्र
तेने मने जेथाने घणी शोकातुर जेवाने अर्जुन तेने मधु
सूदन एवा भगवान ते वचन कहे छे॥१॥ श्लोक॥
कुतस्त्वाकश्मलमिदंविषमेसमुपस्थितं॥ अनार्यजु
ष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन॥२॥ अर्थ॥ हे अर्जु
न अनार्य जे अधम जन तेने सेवन करवा योग्य अने
स्वर्ग प्राप्त थवा न देनार अपकीर्ति करवा वालो एवो जे आ तने
उत्पन्न थयेलो मोहरूप अज्ञान ते आ रणभूमीमां कु

युद्ध करवाना समयने विशे तने क्यांथी प्राप्त थयो; ॥२॥

श्लोक॥ क्लैब्यंमास्मगमः पार्थनैतत्त्वय्युपपद्यते॥ क्षुद्रंहृदयदौर्बल्यंत्यक्त्वोत्तिष्ठपरंतप॥ ३ ॥॥ अर्थ॥ हे पार्थ कुंताजीना पुत्र अर्जुन तमे कायरताने ग्रहण करो नहीं जे कायरता तमने जोईए नहीं. तेनुं कारण जे छे जे तमो शत्रु ओने संताप करवा वाळा छो तेटला माटे. तुच्छ जेवुं जे अंतःकरणनुं दुर्बलपणुं तेने त्याग करीने हे आप युद्ध करवा सारुं धनुष्यबाण लेईने उभा रहो ॥ ३ ॥ श्लोक॥ अर्जुनउवाच॥ कथंभीष्ममहंसंख्ये द्रोणंचमधुसूदन॥ इषुभिः प्रतियोत्स्यामिपूजार्हावरिसूदन॥ ४ ॥ अर्थ ॥ अर्जुन श्रीकृष्णने कहे छे के हे मधुसूदन हुं संग्रामने विशे पितामहने भीष्म अने अमारा गुरु [illegible] द्रोणाचार्यजी ते

मनी संगाते बाणे करीने केम युध्ध करीश हे अरीसू-
दन ए बेउ जण पूजन करवा योग्य छे. आश्लोकमां बे संबो-
धन छे तेनुं कारण मधुसूदन कह्युं ने भगवानने कह्युं तेनु ता-
त्पर्य के हे मधु दैत्यना नाश करवावाळा छो. अने मने स्वज-
न संगाथे युध्ध केम करावो छो ने अरी सुदन ने भगवानने
कह्युं तेथी आप शत्रुओना हरनार छो परंतु आ अमा-
रा घडीलो गंधाक्षत पुष्पे करीने पुजवाला थकुं ते उपर बा-
णनो प्रहार केम करावो छो ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ गुरूनहत्वा
हि महानुभावांश्छ्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके ॥ हत्वा-
र्थकामांस्तु गुरूनिहैव भुंजीय भोगान् रुधिरप्रदिग्धान्
॥ ५ ॥ अर्थ ॥ अने आलोकने विशे मोटो प्रतापवाला
गुरुने मार्याविना जे भीख मागीने खावुं ते अतिशे उत्त-

म छे. परंतु अर्थकामना वाळा एवो ने पुरुश पोताना गु
रुने मारीने भोग भोगवे छे ते भोग आलोकने विशे ते
रुधीर समान जाणवा. तेनु तात्पर्य एछे ने. तेने स्वर्ग प्रा
प्तिना थाय नस्त्द ॥ श्लोक ॥ नचैतद्विद्मः कतरन्नो ग
रीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः ॥ यानेव हत्वा न जि
जीविषामस्तेवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥ अर्थ
एवे अर्जुन नो अभिप्राय एछे ने के धर्मी अमे अधर्मी
ने अंगीकार करी युध्य करीशुं तेमां आपणे हारीशुं वा
जीतीशुं तेनो निश्चय नथी ए कारण माटे श्री कृष्णने अ
र्जुन कहे छे के हे कृष्ण न्याय अथवा परान्य ए बेउमां अमने
शुं अधीक छे. के मके अमे एने जीतीशुं अथवा ए अमने
जीतशे ए पण अमे जाणता नथी अने ए मने जीतवुं ए.

अंते हाथी समान छे. तेहनुं कारण ए छे जे ने मारीने अमे
जीववानी इच्छा राखता नथी ते आ धृतराष्ट्रना पुत्रो रणभू
मिमां मारा सनमुख उभाछे ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ कार्पण्यदोषो
पहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः ॥ यच्छ्रेयः
स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्न
म् ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ हे कृष्ण जेमने मारीने अमे केम जीवीशुं
एवुं मारा मननुं कृपणपणुं छे अने पोतानुं कुलक्षय करवो
तेनो दोष. ए बेउ वातमां हारी गयो छे स्वभाव जेनो ए
वो जे हुं ते मन धर्मने विशे मुढ छे चीत्त ते जेनु तेथी युध्य मु
कीने भीक्षा मांगवी ए क्षत्रीओनो धर्म छे अथवा क्षात्रि-
ओने भीख मांगवी ए अधर्म छे एम सद्ग्ध छे माटे
जेनुं एवो जे हुं तमने पुछुं छुं के जेथी मारुं निश्चय कल्याण-

कारक होयते कहो केमके हुं तमारो शिष्यछुं एवासते त-
मारे शरणे आवेलुं छुं माटे मने बोध आपो केमके
शिष्यनो बोध आपवो योग्यछे ॥७॥ श्लोक ॥ नहि प्रप
श्यामीममापनुद्याद्यच्छोकमुच्छोषणमिंद्रियाणां ॥अ
वाप्यभुमावसपत्नमृद्धं राज्यं सुराणामपिचाधिपत्यम् ॥
८ ॥ अर्थ ॥ हवेते उपरांत अर्जुन पोताना मनने विशे था-
करवा लाग्यो के आचीत्त भगवान एम केहेशे के पोतानु कल्या
ण पोताथी करवुं थायछे ते माटे एवाशने केहेछे के, हे कृष्ण आ-
लोकने विशे पृथ्वीमां शत्रु वगरनुं समस्त राज्य मळे अने प
रलोकने विशे स्वर्गादिक राज्य मळे तो पण मारी ईंद्रीयोने शुक
ववावाळो एवो जे शोक तेने दुर करे एवो जे उपाय ते हुं निश्चे
जोतो नथी आप अमने उपदेश करी जेम जाणो प्रायछे ॥८॥

॥श्लोक॥ संजयउवाच॥ एवमुक्त्वाहृषीकेशं गुडाकेशः
परंतपः॥ नयोत्स्यइतिगोविंदमुक्त्वातूष्णीं बभूवह॥९॥
अर्थ॥ संजय धृतराष्ट्रने कहेछे के हे राजन् शत्रुओने संताप
करवावाळा अने वळी नींद्राने पण जीतवावाळा एवा जे अर्जु
न ते श्रीकृष्णने पूर्ववचन कहेछे. अने प्रसिद्ध जेम थाय
तेम बधाना सांभळता वचन कहेछे के हुं युध्ध नहीं करूं ए
वा गोविंद शर्व इंद्रियोना अंतर जामी श्रीकृष्णने वचन कहीने
छाना माना बेशी रह्या. आ श्लोकमां संजये धृतराष्ट्रने तपी
केशो ए पदथी जणाव्युं के सर्वनी इंद्री ओना प्रेरक श्रीकृष्ण
छे ते तमारा पुत्रोना मानसीक पापने जाणे छे. एवास्ते ध
र्मक्षेत्र एवुं जे कुरुक्षेत्र तेने विशे पापी पुरुशोनो नाश करशे
॥९॥ श्लोक॥ तमुवाचहृषीकेशः प्रहसन्निव भारत॥ से

नयोरुभयोर्मध्ये विषीदंतमिदं वचः ॥१०॥ अर्थ ॥ हे भा
रतराज धृतराष्ट्र, बे सेन्याओना मध्यने विषे विशादयुक्त थ
येला एवा लज्जावान एवा अर्जुनने जेम हसता होय ते
म श्री कृष्ण भगवाने आगळ वचन कहेशे ते वचन बोलवा
लाग्या. के जेथी आतमा अने परमात्मानुं यथार्थ ज्ञान अने
तेनु प्राप्तिनुं उपाय रूप ते कर्म जोग अने भगती योग युक्त
वाक्या ॥ नत्वेवाहं जातुनासं ॥ अही थी ते ॥ अहं त्वां स
र्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ॥ पर्यंत वाक्य केवा ला
ग्या ॥ श्लोक ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अशोच्यानन्वशोचस्त्वं
प्रज्ञावादांश्च भाषसे ॥ गतासूनगतासूंश्च नानुशोचंति
पंडिता: ॥११॥ अर्थ ॥ जोग्य के मां श्रेष्ठ एक आचार्य
एरीते अर्थ करे छे आ देह अने आत्माना अविवेक थी अ-

ने शोक उत्पन्न थाय छे. तेथी विवेक ढंकाइ गया माटे लगवा
न जेथाने श्री कृष्ण ते अरजुनने कहे छे के तमे ने नही शोक क
रवा लायक एवा जे बंधु तेनो शोक करो छो के आ स्वज
नोने जोइने मारुं गात्र शीथल थाय छे ए आदी लेइने.
त्यां तमने आवा कठीन स्थानकने विशे शोक केम उत्पन्न
थयो छे ए आदी वचने करीने अर्जुनने ज्ञान आप्युं तो
पण प्रज्ञावादने अमे भीष्मने केम मारीए एवां पंडीत वच
न कहे ते प्रमाणे केवळ तमे बोलो छो परंतु हे अर्जुन तुं पं
डीत नथी केम के मरीगएला एवा अने जीवता एवा जे पो.
ताना स्वजन बंधुनुं पंडीत जनो शोच्य नथी करता ने एवा के
मरीगएलानो मरवानो शोक अने जीवता बंधु विना केम
जीवीशुं एवा शोच पंडित जनो नथी करता एवो एक आ

पार्थनो मनछे हवे बीजुं सिध्धांतीनो नो करेलो अर्थ ल
खीयेछीये. श्री कृष्णे जोयुं के आ अर्जुनने धर्म अधर्मनुं
ग्नान नथी तेवास्ते आ धर्मने अधर्म मानीछे अने स्वधर्मने
धर्म मानेछे ने धर्म जकडवानी इच्छा करे छे तेथी एनो मोह-
नाश करवो जोइये ते माटे आत्म दर्शन विनानाश थवानो न
थी. अने ग्नान विना आत्म दर्शन थवानुं नथी अने निष्काम क
र्म विना ज्ञान थवानुं नथी ते निष्कामकर्म अध्यात्म शास्त्र
विना थवानुं नथी ते अध्यात्म शास्त्र कहुं छुं देह अने आत्मा
नो विवेक विचारीने भगवान कहे छे के हे अरजुन तमे शोक क
रवाला जोग नहीं तेनो तो शोक करोछो अने वचन ने बोलो-
छो ते पंडितना वचन बरोबर बोलोछो के अमारा पितृओ
श्राध्ध तर्पण विना स्वर्गमांथी [illegible] पडशे ते आ

आ स्वर्गनुं अने स्वर्गथी पडवुं जे आद्य पिंड करवापी थानकु
रवाथी तेने स्वाधीन नथी केमके पोताना करेला पुन्यपापने स्व
र्गादि स्वाधीन छे ॥ क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोके विशंति ॥ जे आ
दीलेईने नीश्चय करी पुन्य अने पाप आत्माने स्वाधीन छे कोई
पण देहने स्वाधीन नथी. जेपण पुत्रादिकना करेला श्राद्धादि
कनथी पुण्य ते पण मळे छे केमके देह अने आत्माना संजोगथी
प्राप्त थाय छे. परंतु श्राद्ध नहीं करवाथी स्वर्ग माथी पडवुं
एवं थवानो संभव कोई पण कालमां नहीं आ देह नित्यनाश
वान छे अने आत्मा अखंड छे ए वास्ते गतासु देह छे अने
अगतासु आत्मा छे जे बेउ सोक करवा लाअक नथी ॥ नास
तो विद्यते भावो नाभावो विद्यते ततः ॥ ए आदि प्रमाणोथी एवुं स
मजीने पंडीत जन छे ते शोक करता नथी एवास्ते तमे पणए

जोगनथी॰ केहुं आ बंधुओ संगाथे युध्य नहीं करूं अने भीष्म॰
मांगीस एवुं कहेयाथकी एवुं जणाव्ये तेमे देहना स्वभाव
ने देह थकी ज्यारे एवा आत्माने पण नथी जाणता॰ एव्या
त्मा एवोनथी? के जन्म थईजाछे॰ अने मरवा थी नथी जन्म
तो अणे जे मरेछे ते आ देहछे एवास्ते ए बेउनो शोक नकरवो
जोईये अने आयुधारीकने कर्म ते निष्काम करवाथी आत्मानु
ने स्वरूप ते देखाडवा चालुछे पोतपोताना कर्म मालिन थईने
मनुष्य जे छे ते सिध्धीने पामेछे ए आदी ने वाक्यना प्रमाण॰
तेथी युध्य करो एम अर्थ प्रायछे॥११॥ श्लोक॥ नत्वेवा
हंजातुनासंनत्वंनेमेजनाधिपः॥ नचैवनभविष्यामः स॰
र्वेवयमतःपरम॥१२॥ अर्थ॥ श्रीकृष्ण कहेछे के हे अर्जुन॰
प्रथम आत्मानो स्वभाव तमे सांभळो हुं सर्वनो ईश्वर॰

हुंने आकाळने आदी लेईने अनादी काळ पर्यंत शुं हुं नहीं
हतो एम नथी हुं त्यारे पण हतो अने तमे शुं नहता एमन
हीं तमे पण हता. एमज आ सर्व राजा नहीं हता? अर्थात
हता अने ए काळ शिवाय अमे तमे अने आ सर्व नहीं हता
शुं? अर्थात् हता. आहियां ए अभिप्रायछे के जेम हुं सर्व-
नो ईश्वर नित्यछुं तेमज तमे सर्व जेनज्ञ नित्य छो. अहीयां
जेउ सिध्धांती कहेछे के अमे तमेने आ जेहुं कवाथी ईश्वा
यछे के आत्मा अने परमात्मानो भेद ए परमार्थीक छे
एथी भगवाने कह्युं के अज्ञानथी मोह उत्पन्न थयो छे
तेने एवाने अर्जुन तेना मोह निवृत्तिने वास्ते परमार्थीक उ
पदेशनो मंत्रवछे जेम के उपाधीक भेद हतो तो तत्वउपदे
शकरवाना समयनं विशे आ भेदनो के उपदेश ते नहीं कर.

ता एवास्ते श्रीकृष्णे जे कह्यो तेज सत्यछे अने श्रुति
पण कहेछे के ॥ नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानामेको बहू
नां यो विदधाति कामानिति ॥ श्रुतिनो अर्थ. जे अनुनि
त्य चैतनछे तेनुं जे एक नित्य चैतन पणुंछे ते कामना पुर्ण
करताछे जे कोई कहे के ए अज्ञानकृतछे तो तेनो उत्त
रछे के परमार्थ दृष्टिना अधिष्ठाता अने आत्मयथात्म
थी नित्य निवृत्त थएलुंछे अज्ञान जेनुं एवो जे नित्यस्व
रुप परमेश्वर ने श्रीकृष्ण तेने विशे अज्ञानथी उत्पन्न थए
लो जे स्नेह तेना दर्शननुं कार्य ते केम संभवे त्यां पण कोई
एम कहे छे के श्रीकृष्ण पण अज्ञानी छे तेनो ए उत्तरके अ
ज्ञानीना उपदेशनुं पण प्रमाण नथी त्यारे कोई एम कहे के
श्रीकृष्णे अभेदनो निश्चय करेलो [illegible] आमीतानुय

त्ति एटले ज्ञानरूप अल्पज्ञता जे छे ते एकेवा जेवुं छे.
अने वस्त्र शरीरपर बंधन करवा योग्य नथी त्यारे तेनु उत्त
र एछे जे मरीचीनुं जल, ने मृगतृष्णा जल तेने बांधीता
नुवृत्ति करे छे तेने जल जाणवा वाळा जळ लेवा सारु जे शो
तो ते अज्ञानी छे जेथी जे भेदते मिथ्या छे अने गीता शास्त्र
ने विषे उपदेश करे छे तो आ शास्त्रने उपदेश करवा वाळो
पण वगरनो छे अने भेदविना उपदेशनो पण संभव नथी
अने परमेश्वरने विषे पण आ संभवन नथी के प्रथम अ
मे अज्ञानी हता ते शास्त्र जाणवाथी ज्ञान उत्पन्न थयुं छे
जेमने अने शास्त्राध्ययनथी ज्ञान उत्पन्न थाय छे तेने
कोई कोई काळने विषे अज्ञानपण उत्पन्न थाय छे अने सं
भव पण श्रीकृष्णने विषे नथी ते मज श्रुति कहे छे.॥ यः

सर्वज्ञः सर्ववित् पराऽस्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभा
विकी ज्ञान बल क्रिया च वेदाहं समतीतानि वर्त्तमानानि
चार्जुन भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन इत्यादि
जेतले ए प्रगट थाय छे तेए विना उपदेशे ज्ञान करे त्यां कोई
एम कहे छे के अर्जुन श्रीकृष्णनो प्रति बिंब छे ते पोत पोता
ने उपदेश राख्या छे. त्यां समजवुं जे एम के भणी काय
जे आदि वस्तुने विशे पोतानुं प्रति बिंब जोया विना उन्म
त्त थयेलो एटलो कोई पण वात नहीं करे तेम करशे तो
ते उन्मत्त जाणवो ते वास्ते एना वचननुं प्रमाण नथी. अ
ने तेने परंपरा गुरु थकी जे ज्ञान थशे तेने पण उपदेश
करवानो संभव नथी थई शकतो. ए वास्ते शिष्यने उपदे-
श करवानो प्रयोजन नथी [illegible] ज एवे [illegible]

तछे त्यारे शीष्य अनेज्ञानपणुं उत्पन थयुं तेवास्ते उपदे-
शने करवो ते निश्प्रयोजन छे तेमाटे लखे छे तेज सिध्य छे
जे निश्चे थाय छे -॥१२॥ श्लोक॥ देहिनोस्मिन्यथा देहे कौ
मारं यौवनं जरा॥ तथा देहांतर प्राप्ति र्धीरस्तत्र न मुह्यति॥
॥१३॥ अर्थ- जेम आ देहने विशे जीवने कुमार अवस्था
अनि जोबन अने वृद्धावस्था थाय छे तेथी कुमार अव
स्थानो थईने जोबन अवस्थाने थाय छे जोबन अव-
स्थानो नाश थईने वृध्धपणाने थाये छे अने वृध्धावस्थानो
नाश थईने आ देह नाश पामीने बीजो देह प्राप्ती थाय छे
त्यां स्थीर बुध्धिवाळा एवा जे धीर पुरुष ते शोक करता नथी-
त्यांहां भगवान एवा जे श्रीकृष्ण ते मने अत्ती प्राय छे के
शस्त्र धारीने पुरुष ते पोताना [illegible] संगाथे युध्ध

कर्यु जे उचीत नाम योग्य छे. ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ मात्रा-
स्पर्शास्तु कौंतेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ॥ आगमापा
यिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ हे कुं-
तानापुत्र अर्जुन मात्राने इंद्रियो तेमना शब्द स्पर्श
रूप, रस, गंध, शीत, उष्ण, (मृदु) कोमळ पुरुष कठीण अने
शास्त्रादि प्रहार अने संजोग वियोगादि दुःख अने देवावा
ळा छे ते पण हे भारत तमे भरत वंशीछो अने ते आग-
मापाई ते उत्पन्न थावुं अने नाश थवु अर्थात् एमो करे
तां शुभ दुःख था अछे अने नाश था छे एटला माटे
ए अनीत्य छे माटे तमे शहन करो ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ यं
हि न व्यथयंत्येते पुरुषं पुरुषर्षभ ॥ समदुःखसुखं धी
रं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ हे पुरुषश्रेष्ठ

अर्जुन सुख अने दुःख ए बे समान छे जे ने एवा
धीरपुरुषने जे पीडानथी करी शकता ते पुरुष मोक्षने पामे छे
॥१५॥ श्लोक ॥ ऽ नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्य-
ते सतः ॥ उभयोरपि दृष्टोंतस्त्वनयोस्तत्वदर्शिभिः ॥१६॥
अर्थ ॥ जे आत्मानुं नित्यत्वस्वभावीक पणुं छे अने देहो
नुं नाश पणुं छे तेनुं अशोक निमित्त कहे छे तेनो उपरागता
सूनगतासुंश्च नानुशोचंति पंडिताः ॥ एवचनेकराने
एनो स्पष्ट अर्थ देखाडी एछी ए ॥ नासत ॥ ए श्लोक
करीने असत जे शरीर छे तेनो शत भाव थतो नथी अने शत
जे आत्मा तेनो असत भाव नथी एवो जे देह अने आत्मा
ए बेउनो तत्वज्ञानी पुरुषो ए निश्चे करी जोयुं छे हवे देह
जे छे ते अचेतन वस्तु छे तेथी एनुं असत नाम जो कुंस

रूपछे॰ अने आत्माने छे ते चैतन्यछे माटे तेथी सतनाम
सायु स्वरूपछे एवो निर्णय करेलोछे तेज्या अर्थ आगळ
नाश्लोकना विशे स्पष्टनाम पुछ्ळोकरीशुं॥ अविनाशिनु
तद्विद्धि अने अंतवंतइमेदेहा ए बे श्लोके करीने ॥
श्लोक॥ अविनाशितुतद्विद्धियेनसर्वमिदंततम्॥ वि-
नाशमव्ययस्यास्यनकश्चित्कर्तुमर्हसि॥१७॥ अर्थ॥
हे अर्जुन आत्मानु अविनाशीत्वपणु केवुंछे ते हुं तमने कहुं
छुं॰ जे आत्मतत्व करीने ए सर्व अचेतन तत्वव्यापी रहेलुंछे
ते आत्म तत्वने अविनाशी तमे जाणो, जे व्यापक वस्तु छे॰
ते अति सूक्ष्म छे, अने व्याप्यने कोई पण नाश करी शकतो नथी
अने जे वस्तुमां व्यापी रहेयछे ते वस्तुना शस्त्र [illegible] आदिक
वायु उत्पन्न करीने नाश करी शकेछे ए वास्ते आत्मतत्व

ने छे ते अविनाशी छे केमके अव्यय छे अर्थात तेथी घट
तुल्य वधतु नथी ॥१७॥ श्लोक ॥ अंतवंतइमेदेहानित्य-
स्योक्ताशरीरिणः ॥ अनाशिनोऽप्रमेयस्यतस्माद्युध्यस्व
भारत ॥१८॥ अर्थ ॥ हवे नाश रहीत अने प्रमाण रहीत
अने नित्य एवो जे शरीरमां अंतरजामी जे आत्मा तेनो जे
आ देह छे ते नाशवंत छे केमके जे आ देह ते घटे छे अने व
धे छे तेथी जे घटे वधे तेनो नाश पण छे अने आ अप्रमेय
छे अर्थात् चैतन्य जे छे तेनुं प्रमाण कोई करी शकतु नथी अ
ने अचैतन्य वस्तुने जे जाणवा वाळो छे तेनो खुलाशो ते
रमां अध्यायने विशे करीशुं ॥ एतद्योवेत्तितंप्राहुःक्षेत्र-
ज्ञमितितद्विदः ॥ हे अर्जुन आत्मा जे छे ते देह वधवा घ
टवाथी वधतो घटतो नथी अने आ देहने जाणवावाळो छे

तेथी आ आत्मा देहथी न्यारो छे अने एक रस अने नि-
त्य छे एवास्ते आत्माने अविनाशी पणु छे अने देहने
नाशपणु छे ने एबेउ शोच करवा लायक नथी एवा स्ते-
शस्त्रपात अने पुरुशा वाक्या इक स्पर्शते पोताने विशेअ
थया जीवने विशे ने प्राप्त थयो तेने धीरज धारण करी
ने शहन करो अने मोक्ष साधन ने छे तेइलानु संधान रही
त छे तेथी युध्य रूपने तमारि कर्म तेनो आरंभ करो ॥१८॥
श्लोक॥ यएनंवेत्तिहंतारं यश्चैनंमन्यतेहतम्॥ उभौतौ-
नविजानीतोनायंहंतिनहन्यते ॥१९॥ अर्थ॥ हे अर्जुन
ने पुरुश आ आत्मा मारनार करीने जाणे छे. अने जे एने बी
जा कारणे करीने मरेलो जाणे छे ते बेउ अज्ञानी जाणवा एआ
त्मा नथी कोईने मारतो अने नथी [illegible] तमा जवुं अने

मरवुं ते शरीरनुं संजोग विजोगनुं कारण छे. जगतमां आत्म
एजे छे तेणे हिंसादिक नकरवुं तेनो मतलब एछे जे उत्तम
शरीर बहुपुण्यकर्याथकी मळे छे एवास्ते विजोगन करवो॥१९॥
॥श्लोक॥ नजायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा
वा न भूयः ॥ अजो नित्यः शाश्वतोयं पुराणो हन्यते ह-
न्यमाने शरीरे ॥ २० ॥ अर्थ ॥ हे अर्जुन आत्मा जे छे ते-
कोईकाळमां पण जन्मतोनथी अने मरतो पणनथी. अने थयो
पणनथी अने थवानो पणनथी एटला माटे जे आत्मा जे छे
ते अजन्मा छे अने (नित्य) एकरस छे अने (सास्वत) स
दारहेवावाळो छे अने (पुराण) अर्थात् प्रथम पण एवो जे
हतो एजे कारणेकरी शरीरना नाश थवाथी पण आत्मानो नाश
थतोनथी. ॥२०॥ ॥श्लोक॥ वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजम-

व्ययम् ॥ कथंस पुरुषः पार्थकंघातयति हंतिकम् ॥ २१ ॥
अर्थ ॥ जे पुरुष आत्माने अजन्मा अने अविकारी (नित्य)
एकरूप नाशरहित जाणे छे हे अर्जुन ते पुरुष कोने केम म
रावे अने कोने केम मारे अर्थात् एने कुं मरावीश अथवा मा
रीश एनो शोच करवो ने अनात्मज्ञान मुकछे तेवा कोशो-
कनो त्याग करीने तमे युध्य करो ॥ २१ ॥ श्लोक ॥ वासांसि जी
र्णानि यथा विहाय नवानि गृण्हाति नरोऽपराणि ॥ तथा-
शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥ २२ ॥
अर्थ ॥ कदापी शरीर नाश थवाथी आत्मानो नाश नथी तथा
पी शरीर वियोगनो तो शोक करवो जोइए एवो अर्जुन नो
अभिप्राय समजीने श्री कृष्ण वचन कहे छे के जेम जगतमां म
नुष्य जीर्ण वस्त्रनो त्याग करीने नवीन वस्त्रने धारण करेछे

तेमज जुर्णे देहनो त्यागकरीने आ जव बीजा नवी देहधा
रण करेछे अर्थात आधर्मयुध्धने विशे शरीर त्याग करवा
थी मोक्ष अथवा (दिव्य)नाम देवतानुं शरीर प्राप्तथायछे
एवास्ते तमेने शोक करोछो तोशोक करवानुं कारणनथी ॥
२२॥ श्लोक ॥ नैनंछिंदंतिशस्त्राणिनैनंदहतिपावकः॥ न
चैनंक्लेदयंत्यापोनशोषयतिमारुतः॥ २३ ॥ अर्थ ॥ ॥अ
विनाशितुतद्विद्धियेनसर्वमिदंततम् ॥ हे अर्जुन एथाज्य
ने मे तमने प्रथम कह्युं हतुं ते अविनाशी ने ईश्वर तेने शुज
थी रामजवामां आवे तेथी फरी पण निश्चय करीएछीए
जे आत्माने शस्त्र छेदन करतुं नथी जेने अग्नि बाळतोन
थी अने वायु वडेशुकातोनथी ॥२३॥ श्लोक ॥ अच्छेद्यो
ऽयमदाह्योऽ यमक्लेद्योऽशोष्यएवच ॥ नित्यःसर्वगतः

स्थाणुरचलोयंसनातनः ॥ २४ ॥ अर्थ ॥ ओ आत्मा छेदन करवा योग्य नथी अने बाळवा योग्य नथी अने लीलवा योग्य नथी अने शुकववा योग्य थतो नथी तेथी आ आत्मा नित्य छे सर्व देव अने मनुष्यादी शरीरोने विशे व्यापी रह्यो छे. स्थिरस्वभाव अचल छे अने सनातन छे ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ अव्यक्तोयमचिंत्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ॥ तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥ २५ ॥ अर्थ ॥ अने अव्यक्त नाम अति सूक्ष्म छे तेथी मगर नेत्रोमां आवतो नथी अने चिंतवन नाम मनवामां पण आवतो नथी अने अविकार नाम विकार रहित छे एवा आ ओने एवुं जाणीने तमे शोच करवा ना नथी पारथा श्लोक ॥ अथचैनंनित्यजातंनित्यं वा मन्यसे मृतम् ॥ तथा

पित्वंमहाबाहोनैनंशोचितुमर्हसि ॥ २६ ॥ अर्थ ॥ भगवा
न अर्जुनने कहेछे हे महाबाहो जेतमे आ आत्मा नित्य ज
न्मेछे अथवा नित्य मरेछे एवुं जाणशो तो पण शोच करवा
योग्य नथी कारणके जन्म मरण पण अनिवार्य छे ॥ २६ ॥
श्लोक ॥ जातस्यहि ध्रुवोमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच ॥ त-
स्मादपरिहार्येर्थेनत्वंशोचितुमर्हसि ॥ २७ ॥ अर्थ ॥
जे मरे जेनो जन्म छे तेनुं मृत्यु पण निश्चे छे अने जे मरेछे
तेनो जन्म पण निश्चे छे एवास्ते जेनो परिहार नथी तेनो शो
च न करवो जोईए तेथी तमे पण शोच नहीं करो ॥ २७ ॥
श्लोक ॥ अव्यक्तादीनिभूतानिव्यक्तमध्यानिभारत ॥
अव्यक्तनिधनान्येवतत्रकापरिदेवना ॥ २८ ॥ अर्थ ॥
हे अर्जुन विद्यमान द्रव्यनी प्रथम अवस्थाने विशेषकरे

अने अवस्थांतर प्राप्तिथाय ते जोवाथी जे अति अत्यं
शोक छे तेनो पण मनुष्यादिकोने विशे शोकनो संभव नथी
ते हुं कहुं छुं हे भारत भरतवंशोत्पन्न अर्जुन मनुष्या
दीक भूत छे तो पण जनमने विशे प्रथम जणातानथी अ
ने जन्म्यापछी अने मरवा पेहेलां जेम मध्य अवस्थाने वि
शे भगवानने जुओ छे फरी अंत अवस्थाने विशे पण ज
णातानथी त्यां शोक केम करवो जोइये ॥२८॥ श्लोक ॥आ
श्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः
॥ आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चि
त् ॥२९॥ अर्थ ॥ हे अर्जुन शरीरने आत्मा जणातो य प
ण शोक करवानुं कारण नथी एवुं कह्युं ने अने शरीरथ
की न्यारो जे आत्मा तेने विशे [illegible] करवावाळा

(कहेवा) न्हेवावाळा (वक्ता) केवावाळा तेपण आत्माने जाणवा
ने दुर्लभ छे पूर्वे ने लक्षण कह्यां ते युक्त एवो अने सर्वेथी वि
लक्षण ने आत्मा तेने कोईक एक मोटा तप थएल्नां पाप नाश
थई गयां छे अने पुन्य प्राप्त थयां छे एवा ने मनुष्य आश्चर्य नी
पेठे जुए छे तेमज बीजा मनुष्य आश्चर्य प्रकार कहे छे तेमज
वळी बीजा पुरुष ए आत्माने आश्चर्य नी पेठे सांभळे छे अने
कोईक एक मनुष्य सांभळे छे तोपण निश्चे जाणतो नथी अर्थी
त् ए आत्मा स्वरूपने निश्चे लेवुं कहेवुं सांभळवुं अने जाणवुं ते
पण दुर्लभ छे एम कह्युं छे ॥२९॥ ॥श्लोक॥ देही नित्यमवध्यो
ऽयं देहे सर्वस्य भारत॥ तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुम
र्हसि॥३०॥ अर्थ ॥ हे अर्जुन सर्व देवतादिक सर्व ना शरी
रोने विषे आत्मा अवध्य छे अर्थात् ते शरीरोनो नाश थवा

थीऽनेनोनाशथतोनथी जेवास्ते आ सर्वे तीर्थादिकोनोतमेशो
चकरवायोग्यनहीं॥३०॥श्लोक॥स्वधर्ममपिचावेक्ष्यनविकंपितुम
र्हसि॥धर्म्याद्धियुद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्यनविद्यते॥३१॥अ
॥अनेजेआवर्तमानयुद्धतेजवहिंसायुक्तछेतोपणजेमअग्नि
ष्टोमादियज्ञप्रयोगरतमारोस्वधर्मछेएवुंजाणीनेपणतमारेध्या
नधरीनेर्ध्एनेहींकेमकेक्षत्रिओनेधर्मयुध्धकरवुंएविनाबीजुंउ
पायकल्याणकारकनथीजेमअग्निष्टोमयज्ञनेविशेछागनेमारछेत
मांतेछाग(बकरा)नोतुच्छदेहछूटीनेदिव्यशरीरमळेछेएवास्ततेयज्ञ
नेविशेब्राह्मणनेछागमारवानोदोशनलागेछेएतेमांपुण्यछे
एमजयुध्धनेविशेजेशस्त्रलेईनेपोतानाशत्रुप्रआवीनेलडेछे
तेउपरशस्त्रनाखवानोदोशनथीकेमकेजेशास्त्रमांलख्युंछे॥श्लोक॥ ३१
द्वाविमौपुरुषौलोकेसूर्यमंडलभेदिनौ॥ [illegible] योगयुक्तश्च

रणेचाभिमुखेहतः ॥३१॥ अर्थ ॥ हे अरजुन जे श्लोकनो अर्थ
कुंते सांभलकआ जगतमांये पुरुषो सूर्यमंडलनो भेदीने श्रेष्टपदनेप्र
त्तथायछे जे पुरुषयोगयुक्तछे संन्यासी अने बीजो जे रणने विशे
सनमुखयुध्यकरीनेमरणपामेछे ते मनुष्यशरीरमुकीने स्वर्गतीने
आप्तथायछे त्यारे तेकर्मने विशेषापनर्थी पुण्यनछे जे मोटांपुरुष
नीकरेलीकामलीठितारीनेतेनाउपरचुशालो ओरडयात्यागे ओराये
श्रेष्टछेवानीयछे ते विचारकरीने युध्यकरो ॥ श्लोक ॥ यदृच्छाचो
पपन्नंस्वर्गद्वारमपावृतम् ॥ सुखीनःक्षत्रियाःपार्थलभंतेयुद्ध
मीदृशम् ॥३२॥ अर्थ ॥ हेपृथापुत्रअर्जुन पोतानी मेले मेहनतविना
प्राप्तथएलुं अने खुल्लुंथएलुं स्वर्गनुं द्वारएवुंजे आ युध्य अर्थात् पु
ण्यवान एवोजेक्षत्रियोते शुभघडे पामेछे ॥३२॥ श्लोक ॥ अथचेत्व
मिमंधर्म्यंसंग्रामंनकरिष्यति ॥ ततःस्वधर्मंकीर्तिंचहित्वापा

पमवाप्स्यसि॥३३॥ अर्थ॥ जे कदापि एम तमे आ धर्मयुध्य नहीं करशो
तो पोताना स्वधर्मने अने नीतीनो पण नाश करीने पापने पामशो॥३३॥
श्लोक॥ अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यंति तेऽव्ययाम्॥ संभावित
स्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते॥३४॥ अर्थ॥ अने लोक पण तमारी अ
खंड अपकीर्ति आ जगत माां वरणन करशे ते अपकीर्ति नशवान पुरुषोने आ
गते न विशे मरवा तेथी पण अधिक छे॥३४॥ श्लो॰॥ भयाद्रणादुपर-
तं मंस्यंते त्वां महारथाः॥ येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघ
वम्॥३५॥ अर्थ॥ अहो वे धुन्नो जारने हथी अने द्याथी युध्य नहीं
करतो मारी अपकीर्ति थशे एवो अर्जुनना जीमां यसमजने-
श्रीकृष्ण भगवान वचन कहेवा लाग्या के आ दुर्योधनादि महारथीओ
ने आ समयने विशे प्रथम पुशूरवीर तमने मानने नेमनी संगाथे
युध्य नहीं करवाथी अपमान थाज्य [illegible]

हूनव दिष्यंतितवाहिताः॥ निंदंतस्तव सामर्थ्यं ततोदुः
खतरंनुकिम्॥ ३६॥ अर्थ॥ एकारणथी आने दुर्योध
नादिक तमारा शत्रुओ तमारा सामर्थ्यने निंदशे अने नहीं
बोलवा योग्य एवा घणा वचन बोलशे अर्थात् जेमके हे शेठ अ
र्जुननुं सामर्थ्य कांईपण शूरवीरोना सनमुख युद्ध करवाने
नथी अने केवळ शोलासारु शस्त्र धारण करेला छे जेम स्त्रीओ
ना आभुषणने विषे सिंह अने सर्पादिकना चित्रामण होय छे
तेने स्त्री धारण करे छे परंतु साक्षात सिंह सर्पादिक जोवाथी—
भागीत्याग करशे एप्रमाणे अर्जुनना धनुष्यादिक शस्त्र केव्या
रे एम दुर्योधनादिक बोलशे त्यारे एथी अधीक दुःख बीजुं
कीयुं छे; अर्थात् आदुःखथकी मरवुं श्रेष्ट छे एम मानशो॥
३६॥ श्लोक॥ हतोवाप्राप्स्यसिस्वर्गं जित्वावाभोक्ष्यसे

महीं ॥ तस्मादुत्तिष्ठ कौंतेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥ ३७ ॥
अर्थ ॥ केडों तेय ते निंदाकुं के दुःख तेथी शूरवीरने युद्धने-
विशे भीष्मने हाथे मरवुं था· तेने मारवुं ए उत्तम छे एम
श्रीकृष्ण अर्जुनने केहे छे के धर्मयुद्धने विशे भीष्मना मा-
रवाथी मरशो तो तमने मोक्ष मळशे ने भीष्मशत्रुओने
मारशो तो पृथ्वीनो अखंड राज्य (शत्रु विनानुं) राज्य तमो
गवशो ते वास्ते हे अर्जुन तमे युध्य करवुं एवुं निश्चय करी
ने हाथमां धनुष्यबाण लेईने उठी उभा था ओ ॥ ३७ ॥ ॥
श्लोक ॥ सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ॥
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥ ३८ ॥ अर्थ ॥
अने सुख दुःख अने लाभ अने अलाभ जय अने अजय एने बरोबर मा-
नीने फरीथी युध्धनो उद्यम करशो ए कारणथी तमे पाप नहीं

लागशे अने इत्यादिनु संधान रचीत युध्धरूपने पोतानो स्वध
र्म करशो तो तमने मोक्ष मळशे तेनो उत्तर - ॥ स्वेस्वेकर्म-
ण्यभिरतः सिद्धिं विंदंतिमानवाः ॥ अेप्रमाणे करीने मो
क्षथशे ॥ श्लोक ॥ एषातेऽभिहितासांख्ये बुद्धियोगे-
त्विमांशृणु ॥ बुद्ध्यायुक्तोययापार्थकर्मबंधंप्रहास्यति
॥ ४०॥ अर्थ ॥ श्री कृष्ण कहेछे के हे अर्जुन ने बुध्धियु
क्त कर्म योग तेनुं महात्म कहुं छुं आ बुध्धि युक्त कर्म जोग
ने विशे अर्थात् निष्काम कर्मयोगने विशे प्रारंभनुं पण ना
श नथी. अर्थात् प्रारंभ करीने समाप्त थाय तो पण ते नि
ष्फळ नथी अने न्युन अधीकतानुं पण नथी अधर्म तो थो
डो आरंभ पण संसारीक भयथी रक्षण करेछे हे पा
र्थ ॥ नैवेहनामुत्रविनाशस्तस्य विद्यते ॥ अेनुं बुआशोआ

गळ तमनेकहीशुं ॥ ४० ॥ श्लोक ॥ व्यवसायात्मिका बुद्धीरे
केह कुरुनंदन ॥ बहुशाखाह्यनंताश्चबुद्धयोव्यवसायि
नाम् ॥ ४१ ॥ अर्थ ॥ हे अर्जुन काम्यकर्मविषयिक बुद्धीथ
की मोक्षसाधनभूत बुद्धीनभेद हमाटे छे आ शास्त्रमां
अने सर्वकर्ममां निश्चयात्मक बुद्धि एकज छे मुमुक्षुने करवायो
ग्य कर्ममां जे बुद्धि छे तेने व्यवसायात्मिका केहे छे- अर्थात् नि
श्चयात्मिका ते एकज छे. जेथी आत्मस्वरूप निश्चय थाय छे.
अने काम्यकर्म विषयिक बुद्धि अव्यवसायात्मिका केहे छे. त्यां
कामना विकारने विशे देहथकी प्रथम (जुदी) अने आत्मस्व-
रूपनो अस्तित्वमात्र छे परंतु आत्मस्वरूपनो यथार्थ निश्च-
य थतो नथी. आ निश्चयात्मिक बुद्धिने विशे मोक्षसाधन नि
मित्त सर्वकर्म छे. एवा सर्व एकज छे. अने काम्यकर्म विशयने

विषे, स्वर्ग, पुत्र, पशु, अने अन्न धन इत्यादिक अनेक कामना-
ओछे; एवास्ते ते काम्यकर्मवाळा ओनी बुद्धि अनेकछे त्यां
पण एक कामना निमित्त कर्म करीने अनेक स्थळोनी इच्छाक-
रे छे जेमके पुत्र प्राप्त थाय ए कामना सारि यज्ञ करीने, आयु-
ष्यादिकनी ते इच्छा करे. ते वास्ते बहुशाखा अर्थात् ते बुद्धि मां
बहुशाखाओ छे एवास्ते मोक्ष साधन रूपने कर्म ते उत्तम छे-
एनो ए अभिप्रायछे ॥ ४१ ॥ श्लोक ॥ यामिमां पुष्पितां वा-
चं प्रवदंत्य विपश्चितः ॥ वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति-
वादिनः ॥ ४२ ॥ अर्थ ॥ हे पार्थ आजगतमां अज्ञानी पुरुष
छेते केवळ वेदनावाद करवावाळा. अर्थात् वेद मां स्वर्गादिक
ळने कहेलां छे तेने ग्रहण करवावाळा तेशुं कहे छे के स्वर्गप्राप्ति
थवुं एसमान बीजो पदार्थ कोई नथी एवुं कहेवावाळा ॥ ४२ ॥

॥श्लोक॥ कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदां ॥ क्रि-
याविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ॥ ४३ ॥ अर्थ ॥ अने
कामनाभा छे चित्तने मनुं एवा पोते पण स्वर्गने सारुं माने छे ए
वाने पुष्प समान रमणीय अने, जन्मकर्म रूप फळने आपनारी
ए त्नोगतथा ऐश्वर्य निमित्त क्रियाछे तेमां एवी आवाणीने के
हे छे ॥ ४२ ॥ श्लोक ॥ भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेत-
सां ॥ व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ॥ ४४ ॥
अर्थ ॥ एवा जे लोग अने ऐश्वर्यमां आशक्त थ येला एवा
अने वेदवाणी एकरीने हरीगएलुं छे चित्त तेमनुं तेनामनने-
विषे निश्चयबुद्धि प्राप्त थती नथी ॥ ४४ ॥ श्लोक ॥ त्रैगुण्यवि
षया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन ॥ निर्द्वंद्वो नित्यसत्वस्थो नि-
र्योगक्षेम आत्मवान् ॥ ४५ ॥ अर्थ ॥ अर्जुन केहे छे हरीने-

मात पिताथी पण अधीक पालन करवा वाळा अने वेदने छे ते
अति अल्प फलदायक छे अने फरी जन्म आपवा वाळा एवा
जे कर्मोने केम करो छो अने वेदमां कहेलां एवा जे कर्मनो त्याग करवुं
ते केम करो छो एशंका उपर भगवान एवा जे श्री कृष्ण ते कहे छे हे अ
र्जुन त्रण गुण छे जे मा तेनो त्रैगुणी कहे छे अर्थात् आ जगतने
विशे पुरुष घणा छे ते पुरुषोने विशे केटलाक सत्व गुणी छे अ
ने केटलाक रजोगुणी छे केटला एक तमोगुणी छे; ए प्रमाणे पु
रुषोना विषय बताववा वाळा वेद छे त्यां तमे निस्त्रैगुण्य थाओ.
अर्थात् रजोगुण तमोगुणने त्यागी अने सात्विक गुणनुं
ग्रहण करो. अने निर्द्वंद्व नाम संसारीक सुख दुःख थकी रहित था
ओ अर्थात् तेने सहन करो निरंतर सत्वगुणने विशे मन रा
खो अर्थात् कामना रहीत जे कर्म ते करम करो अने निरजोगक्षे

मने छे ते अप्राप्त वस्तु छे तेमाटे सारी अमे रहीए छीए जेज
ने ने वस्तु प्राप्त थाअछे तेनुं रक्षण करवुं तेने क्षेम कहे छे; तमे
जे एनी इच्छानाराओ अने आत्मस्वरूप ने छे तेने जेवा
सारु तमे उद्योग करो; ओ जीवने अर्थ; ॥ वेदाः त्रैगुण्य विषयाः
॥ वेद माटे गुणने प्रगट करवावाळा छे तेवास्ते हे अर्जुन त
मे निस्त्रैगुण्य थाओ नाम निश्चे वैदिक ने कर्म छे ते करो नि-
स्त्रैगुण्य ने शब्द छे तेना आदिने विशे निर एवे नामे ने अव्य
य छे तेनो निश्चय एवो अर्थ थाअछे अने निर निश्चय नि-
षेध पोः जे ने शब्द छे तेनुं अमरकोशमां प्रमाण छे हवे सांअ
र्जुन नामन मांशका प्राप्त थई ने वैदक कर्म ने छे ते अने करे-
तेथी कुडीयु कर्म कर ते उपर भगवान कहे छे के हे अर्जुन निर्द्वंद्व
थईने नित्य सिद्धि अने असिद्धि ते ने सम जाणीने रक्षण करो

अने आत्माने मन तेने वशीकरो ॥ ४४ सात्विक जे कर्म छे ते
करो निर्द्वंद्व अर्थात् सुखदुःख लाभ अलाभ अने जय पराजय-
अने पापपुन्य जेछे तेने ईश्वर मानीने तमे सहन करो अने ॥
४५ ॥ श्लोक ॥ यावानर्थउदपाने सर्वतः संप्लुतोदके ॥ तावा-
न्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥ ४६ ॥ अर्थ ॥ प्रथम
तमने जेम कह्युं जे वेदने विषे त्रिगुणात्म कर्म कहेलांछे त्यां तमे
पण सात्विक कर्म करो तेनुं सुख्याशो कहुं करीछुं समग्र वेदमां
कहेलां जेवां जे कर्म ते सर्वने ग्रहण करवा जोग नथी केमके
जेम कुवा वावडी तलाव जे आदी लेईने जेटला जलना थानक
जे सर्व छे तेमां पाणी भरेलुंछे तेमांथी मनुष्योने जेटली
इच्छा होय तेटलुं ग्रहण करेछे जेम जे ब्राह्मणने छे ते ब्र-
ह्म परमात्माना उपार सज्ञाना करवा वाळा ओने सर्व वेद

थी सात्वीक कर्मने छे ते ग्रहण करवुं योग्य छे ॥४६॥ श्लोक
॥ कर्मण्येवाऽधिकारस्ते माफलेषु कदाचन ॥ माकर्मफ-
लहेतुर्भूर्मातेसंगोऽस्त्वकर्मणि ॥४७॥ अर्थ ॥ हे अर्जु
न हवे सत्व गुणने विशे स्थितनाम रह्या एवा जे मुमुक्षु ते
ने जेटलुं ग्रहण करवुं जोइए ते हुं कहुं ने सात्विक नित्यनै
मित्य अने काम्य जे कर्म एमां कोइ पण फल करी सुकृत जे
सात्विकथामा आवे छे एवां जे कर्म तेमां केवळ तमने ग्रह-
ण करवानो अधिकार छे अने फळने विशे पण जे भोगववा
नी इच्छा ते पण तमे कारण रुप नथी ओ अने अकर्म जे छे ते
कर्म न करवुं तेने कहे छे जे पेके तमे पूर्वे एवुं कह्युं जे हुं रण भू-
मिने विशे युद्ध नहीं करुं एम अकर्मने विशे पण तमारी नीग
आनथी ए तात्पर्य के कर्म करवुं एज योग्य छे तेनुं कारण आ

गळेछ्याडीशु ॥ ४६ ॥ नकर्मणामनारंभान् नैष्कर्म्यं पु
रुषोऽश्नुते ॥ एवा सन हे अर्जुन कर्म करवु पण फळनी ई
च्छा न राखवी निष्काम कर्म थकी मोक्ष प्राप्ति थाय छे ॥४७
॥ योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय ॥ सिध्य
सिध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥ ४७ ॥ अर्थ ॥
हवे प्रथम श्लोकनो अर्थ प्रगट बतावी एछी ए हे अर्जु
न सिध्धि अने असिध्धिने विशे सम रही करी अने योग
मां रहेलां एवा ने राज्यं धुर्यत्यादीकोने विशे ने आशक्-
ती छे तेने अथवा फळने विशे आशक्ती छे तेने मुकीने कर्म
करो अने ने सिध्धि अने असिध्धि ने बरोबर छे तेने जो
गकहे छे अर्थात् चित्तनी ने समाधानी छे तेने पण जोग
कहे छे, तेनुं तात्पर्य एछे ने चित्त स्थिर करीने कर्म करो ॥४८॥

श्लोक ॥ दुरेणह्यवरंकर्म बुद्धियोगाद्धनंजय ॥ बुद्धौशर
णमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥ ४९ ॥ अर्थ ॥ जे कहे-
शोक तमे जेह वारंवार केम कहो छो एवास्ते हुं कहुं छुं के-
हे धनंजय अर्जुन ने बुद्धी जोगथी बीजुं कर्म छे ते अत्यं
त निच छे कारण बुद्धीजोग छे ते संसारीक दुःखनो-
नाश करवावालो अने मोक्षने आपवावालो छे ः अने विना
ने कर्म छे ते बंधन करवावालुं छे एवास्ते बुद्धीने विशे प्रव
तथा ओहे मह इफलनी इच्छा करवावाला कृपणनाम अति
लोती छे हवे बुद्धी जोग ते शुं छे हुं तमने कहुं छुं जेम लम
णा कहयुं बुध्यकुलना त्याग विषयथा आवां नर कर्मनी सि
द्धि अने असिद्धिने विशे जे समत्व विषयजे छे तेने बु
द्धीयोग कहे छे एटव्ययसाथात्मिका बुद्धिछे ॥ ४९ ॥

॥ श्लोक ॥ बुद्धियुक्तोजहातीह उभेसुकृतदुष्कृते ॥ त-
स्माद्योगाययुज्यस्वयोगः कर्मसु कौशलं ॥ ५० ॥ अर्थ ॥
हे अर्जुन आलोकने विशेषे पुरुष बुद्धियोग युक्त कर्मकरे-
छे; तेथी आ बेउ लोकथी संचीत करेलां एवां जे सुकृत अने
दुष्कृत जे (पाप) तेनो त्याग करेछे तेथी तमे जोगने जाणीने-
बुद्धियोग जे छे एवास्ते युक्त थाओ जे बुद्धियोग जे
छे ते क्रियमाण कर्मने विशे कुशल (कल्याण) करवावालुं छे
॥ ५० ॥ श्लोक ॥ कर्मजंबुद्धियुक्ताहि फलंत्यक्त्वमनीषि
णः ॥ जन्मबंधविनिर्मुक्ताः पदंगच्छंत्यनामयम् ॥ ५१ ॥
अर्थ ॥ बुद्धियोगयुक्त एवा जे ज्ञानवान पुरुष जे छे ते क-
र्मथी उत्पन्न थएलुं जे फल तेने त्यागीने जन्म मरणथी मु-
क्त थाअछे अने सर्व उपद्रव थकी रहीत थईने विष्णुलोक

ने पामेछे ॥ ५१ ॥ श्लोक ॥ यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्य
तितरिष्यति ॥ तदा गंतासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च
॥ ५२ ॥ अर्थ ॥ हे अर्जुन ने आगळ कहीगया अने हवे प-
छी कहीशुं ए सारि कर्म मांहे वर्तेछे अने ए वर्त्ती थकी नाश-
थयाछे पापने नां जेथाने तमे ते तमारी बुध्धि मोह रूप
पापने मुकीने शुध्ध थशे त्यारे ने मारा थकी आगळने वि
शे प्रथम ने आत्याग कर्वुं एवुं ने सांभळवुं ते अने आगा
ळने कहीश ते तमे सांभळशो ते वैरागने तने प्राप्त थशे ॥
५२ ॥ श्लोक ॥ श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्च
ला ॥ समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥ ५३ ॥
अर्थ ॥ ते आगळ जोगने विशे [illegible] ने सांभळो मे आ
दीव्यछे ने तमने ने कहेवुंछे [illegible] आत्मक ज्ञान-

पुर्वे कह्यो छे ने मां जेवुं बुध्धिनुं विशेष पणुं तेथी संस्कार थएलो ने
कर्मानुष्टान तेनुं लक्षण तमुं तने योग संज्ञक फळ कहीए छीए शु
तीने कान देवो करीने हुं कहुं ने तमे सांभळो अने विशेषे करीने
सुक्ष्म एवी अने तत्व विषयक एवी अने पोते अचळ एक रूप
एवी ते तमारी बुध्धि ते ज्यारे कर्मना अनुष्टाने करीने निर्मळ
थशे त्यारे मनन विशे निश्चय नाम स्थीरताने पामशे जोगने ल
गीने आत्म दर्शने न पामशो ॥५३॥ श्लोक ॥ अर्जुन उवाच ॥
स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ॥ स्थितधीः
किं प्रभाषेत किमासित व्रजेत किम् ॥ ५४ ॥ अर्थ ॥ ज्यारे
भगवान एवा जे श्रीकृष्ण ते मणे पृथापुत्र एवा जे अर्जुन ने ए
वो कह्यो त्यारे ते अर्जुन निराग कर्मानुष्टान रूप कर्म योग अने
साध्य ने जोग साधन भूत स्थित प्रज्ञता तेना स्वरूपने अने स्थि

स्बुध्धिने थी पुरुशोनी शाम्य अेरीते अनुष्टान प्रकार पुछयाप्ता
ग्या हे केशव, समाधिस्थ अेने स्थित प्रज्ञ अर्थात् स्थिरबुध्धि
वाळा पुरुश केम बोलेछे अने केम बेशे छे अने केम चालेछे ते
नां लक्षण मने कहो ॥ ५४ ॥ श्लोक ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ प्रज-
हाति यदा कामान् सर्वान्पार्थ मनोगतान् ॥ आत्मन्येवात्मना
तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ ५५ ॥ अर्थ ॥ हवे श्रीकृष्ण भ
गवान वचन कहेछे हे अर्जुन अगलले विशे स्थिरबुध्धिवाळा
नुं स्वरूप अमे कहीअेछीअे ते सांभळो ज्यारे कोइपण मनु-
ष्यनी चाल चलत कत केवामां आवीतेथी तेनुं स्वरूप पण केवामां
आव्युं अेवास्ते स्थिरबुध्धिवाळा अेवाने मनुष्य ते निवृत्ति अ
र्थात् तेनी चाल लक्षारेणी अमे कहीअे छीअे हे पार्थ पोताना स्व
रूपने विशे पोतानुं मन प्रसंन्नताने पाम्युं ते सर्व कामनाओने

त्याग करे छे त्यारे ते पुरुशने स्थितप्रज्ञ कहेवाय छे ॥ ५५ ॥ श्लो
क ॥ दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ॥ वीतरागभ-
यक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ ५६ ॥ अर्थ ॥ जे मनुष्य
दुःखने विशे उद्वेग पामतु नथी अने सुखने विशे इच्छा राखतुन
थी अने निवृत्त थयो छे स्नेह ते भय तथा क्रोध तेनुं जेवा मु
नि छे तेने जगतने विशे स्थिरबुद्धिवाळो कहे छे ॥ ५६ ॥ श्लोक ॥
यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाऽशुभम् ॥ नाभिनंदति
न द्वेष्टि स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ ५७ ॥ अर्थ ॥ जे पुरुश जगतने
विशे सर्व मित्रवर्गने विशे पण उदासी पणु नथी राखतो अने
प्रियवस्तुना संजोगपणु तथा वियोगपणु तेनो आनंदने दुःखने न
पामतो नथी तेने पण स्थिरबुद्धिवाळो कहे छे ॥ ५७ ॥ श्लोक ॥
यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ॥ इंद्रियाणीं द्रिया

येंद्रियस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५८ ॥ अर्थ ॥ जेम काचबो
ज्यारे आपणानी पेठे सर्व अंगने संकोडेछे तेम सर्व
इंद्रियोना विषयथकी इंद्रियोने अगिलेछे तेथी तेनी बुद्धि
स्थिर थायछे अर्थात तेनेपण स्थिरबुद्धिवालो कहेछे ॥ ५८ ॥
श्लोक ॥ विषया विनिवर्तंते निराहारस्य देहिनः ॥ रसवर्जं
रसोप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥ ५९ ॥ अर्थ ॥ हवे इंद्रियोनो
आहार जेवाने विषयने थी विषयना जे ते मनुष्यनी विषय प्री
ति विना विषयनिवृत्त थायछे अने तेने विषय प्रीति पण पर का
वाने आत्मा तेना स्वरूपने जोवाथकी निवृत्ति थायछे ॥ ५९ ॥
॥ श्लोक ॥ यततो ह्यपि कौंतेय पुरुषस्य विपश्चितः ॥ इंद्रि
याणि प्रमाथीनि हरंति प्रसभं मनः ॥ ६० ॥ अर्थ ॥ हे कुंती
पुत्र अर्जुन ईश्वरना ध्यान विना विषयने विशे जे प्रीति ते निश्च

त थतीनथी अने विषय मांहे प्रितिते निवृत्त थया विना ज्ञानी
पुरुष यत्न करे छे तोय पण तेनी बळवान जे इंद्रियो ते हठ करी
मनने हरण करे छे अर्थात् मनने क्षोभ पमाडे छे ॥ ६० ॥
श्लोक ॥ तानिसर्वाणिसंयम्ययुक्त आसीत मत्परः ॥ वशे-
हियस्येंद्रियाणितस्यप्रज्ञाप्रतिष्ठिता ॥ ६१ ॥ अर्थ ॥
हवे जोगी पुरुषने ते सर्व इंद्रियोने वश करीने मारे स्वाधीन क-
रे छे तेथी जेने इंद्रियो वश छे तेनी बुध्धी पण स्थिर जाणवी ते
नु कारण अर्जुनने भगवानने पुछ्युं के स्थिर बुध्धि वाळा भ-
गत लोक केम रहे छे तेनो उत्तर भगवाने कह्यो ॥ ६१ ॥ श्लोक
॥ ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते ॥ संगात्संजा
यतेकामः कामात्क्रोधोभिजायते ॥ ६२ ॥ अर्थ ॥ हे
अर्जुन आत्मा इंद्रियोनी जे प्रबळ याथी अने तेने वश ना

करे तेनो घेरा कहेलो छे हवे मननो धर्म कहुं छुं जे मनुष्य विषयने
मनमां राखेछे तेनी आसक्ति थायछे तेने स्थिर कहेछे तोपण
विषयने विशे आसक्ती उत्पन्न थायछे तेथी काम उत्पन्न
थायछे काम थकी क्रोध उत्पन्न थायछे ॥६२॥ श्लोक ॥ क्रो
धाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ॥ स्मृतिभ्रंशा
द्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥६३॥ अर्थ ॥ अने
क्रोधथी मोह उत्पन्न थायछे मोहथी स्मृतिने विशे भ्रमण
उत्पन्न थायछे तेथी बुद्धि नाश पामेछे बुद्धिनाशथी पोतेना
श पामेछे तेथी संसारना दुःखने विशे पडेछे ॥६३॥ श्लोक ॥
रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिंद्रियैश्चरन् ॥ आत्मवश्यै-
र्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥६४॥ अर्थ ॥ एवा जे
हे अर्जुन मनने वश करवुं अने मनने वश करीने एवा पुरुष ते

रागद्वेषतेथी रहीत थईने विषय उपर प्रितिअने वैर राख्यताव
थी एरीते पोताने वशकरेंद्रियोने राखीने विषय सेवन करे छे-
ते पुरुष प्रसन्नताने पामेछे अने निर्मळ चित्त थईजायछे ॥६४॥
॥श्लोक॥ प्रसादे सर्वदुःखानांहानिरस्योपजायते॥ प्रसन्न
चेतसोह्याशुबुद्धिः पर्यवतिष्ठते॥ ६५॥ अर्थ॥ हे अर्जु
न जेनु मन प्रसन्नथायछे तेना सर्व दुःखनाछे ते नाश पामे
छे; तेथी प्रसन्नचित्तवाळा पुरुशोनी जे बुध्धिते मारा विशे रहेछे
तेथी प्रतिष्ठित थायछे॥ ६५॥ श्लोक॥ नास्ति बुद्धिरयु-
क्तस्यनचायुक्तस्य भावना॥ नचाभावयतः शांतिरशांति
रशांतस्यकुतः सुखम्॥ ६६॥ हे अर्जुन प्रथमने कहेलुं-
समत्वरुपयोग, तेजोगयुक्त विना पुरुषने बुध्धियती नथी अ
ने भावनापण थातीनथी. भावनावाळा पुरुशोने शांतीथाती

नथी अने शांती विना केम सुख मिळे ॥ ६६ ॥ श्लोक ॥ इंद्रि
याणांहिचरतांयन्मनोनुविधीयते ॥ तदस्यहरतिप्रज्ञां
वायुर्नावमिवांभसि ॥ ६७ ॥ अर्थ ॥ न्याय्ने विषयमां वर्ति
रहेली ओछे अेवी ने इंद्रियो तेनी पाछळ तेनुं मन लागी रहे-
लुं छे ने मन जळने विशे नावने वायुनी पेठे आपुरुषनी बु-
द्धिने हरण करे छे ॥ ६७ ॥ श्लोक ॥ तस्माद्यस्यमहाबाहो नि
गृहीतानिसर्वशः ॥ इंद्रियाणीद्रियार्थेभ्यस्तस्यप्रज्ञाप्रति
ष्ठिता ॥ ६८ ॥ अर्थ ॥ हे महाबाहो तेनाथी ने नी इंद्रियोने
विषयथी सर्व प्रकारे रोकाई रहेली छे तेनी बुद्धि प्रतिष्ठित
(स्थीरबुद्धिछे,) ॥ ६८ ॥ श्लोक ॥ यानिशासर्वभूतानां-
तस्यांजागर्तिसंयमी ॥ यस्यांजाग्रतिभूतानि सा निशा प-
श्यतोमुनेः ॥ ६९ ॥ अर्थ ॥ [illegible]

ऐ एवा अने प्रसन्न मनवाळानी जे सिध्धिने कहुं हुं ते सां-
भळ हे अर्जुन सर्वभूत प्राणिमात्रनी जे रात्री अर्थात् रात्रीस
दृशा नाम राखी परेश्वर अप्रकाश छे आत्म विषय बुध्धि ते मां
इंद्रिओने वश राखेली ओ एवा अने प्रसन्न मनवाळा अने-
वा जे पुरुष ते जागे छे अर्थात् आत्माने जुवे छे अने जे शब्दा-
दि विषय बुध्धिने मां सर्वभूत प्राणिमात्र जागे छे अने प्र-
बुध्ध थाय छे ते शब्दादि विषय बुध्धि ते आत्माने जोवावा-
ळानी रात्री छे अर्थात् राखी परेश्वर अप्रकाश छे ॥६९॥
श्लोक ॥ आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशंति य-
द्वत् ॥ तद्वत्कामा यं प्रविशंति सर्वे स शांतिमाप्नोति न काम-
कामी ॥७०॥ अर्थ ॥ हे अर्जुन जेम समुद्र जळ वडे करीने
पोते परीपुर्ण छे, अने अचळ प्रतिष्ठित छे [illegible]

सवे भोग आदिक कर्मो तेओने लय देता जाय छे तेमज जे मनु-
ष्यने सर्व कामना प्राप्त थाय छे ते अत्यंत शांतिने पामे छे अ-
ने कामनानी इच्छा करवा वाळा जे छे ते मनुष्य ते शांतीने पाम-
तो नथी, ॥ ७० श्लोक ॥ विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चर-
ति निःस्पृहः ॥ निर्ममो निरहंकारः स शांतिमधिगच्छति ॥
७१ ॥ अर्थ ॥ हे अर्जुन जे पुरुष सर्व कामनाने मुकीने जगत-
मां निस्पृह नाम इच्छा रहीत थयो छे ते निरमम (ममताव-
गरनो) एवो जे निरहंकार (हंकार विनानो) ते शांतिने
पामे छे ॥ ७१ ॥ श्लोक ॥ एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्रा-
प्य विमुह्यति ॥ स्थित्वाऽस्यामंतकालेपि ब्रह्मनिर्वाणमृ-
च्छति ॥ ७२ ॥ अर्थ ॥ हे पृथापुत्र अर्जुन ब्रह्म प्राप्ति ने कर-
वा वाळी एवी निष्काम कर्मरूप जे छे ते स्थिति तेमां मने शास-

ळावी अेने पामीने फरी मनुष्यने छे ते संसार रूपने मोह ते-
ने पामतो नथी अने आ स्थिती अेकरीने अंतिम (वृध्धअ-
वस्थामां) रेहेतो पण मोक्षने पामे अने जे आ अवस्थाने-
लेईने मरणकाल पर्यंत अेवा कर्म करतो मनुष्य ब्रह्मने मा स-
था अेछे अेमाते शुं कुवुं छे ॥७२॥ श्लोक ॥ इतिश्रीमद्भ-
गवद्गीतासुपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णा-
र्जुनसंवादे सांख्ययोगोनाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ अ-
र्थ ॥ इतिश्री मत् जोशी लाल्य चंद्रात्मज व्यारारीव जी कृता-
यां श्री भगवद्गीता वाक्यार्थ बोधिनी गुर्जरभाषाटीकायां
द्वितियोऽध्यायः ॥ २ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ ॥

॥ अर्जुन उवाच ॥ ॥ ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्ज-
नार्दन ॥ तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव ॥ १ ॥ अ-

र्थ ॥ अरजुन पुछे छे हे जनारदन तमारे मते जो करम जोगथकी
ग्नान अत्यंत सारुं छे तो तमे आ घोर करमने वीशे मुने शा वा
स्ते प्रेरणा करो छो ॥१॥ श्लोक ॥ व्यामिश्रेणेववाक्येनबुद्धिं
मोहयसीवमे ॥ तदेकंवदनिश्चित्ययेनश्रेयोहमाप्नुयात्
॥ २ ॥ अर्थ ॥ तमे घणे मीठे वचने करीने मारी बुध्धिने भ्र
मावो छो एवो मने जणाए छे ते माटे जे करीने हुं कल्याणपा
मुं एवुं कांईपण मने निश्चय करीने कहो ॥ २ ॥ श्लोक ॥ श्री
भगवानुवाच ॥ ॥लोकेस्मिन् द्विविधानिष्ठापुराप्रोक्ताम
यानघ ॥ ज्ञानयोगेनसांख्यानांकर्मयोगेनयोगिनाम् ॥
३ ॥ अर्थ ॥ श्रीकृष्णभगवान कहे छे · हे पाप रहीत निश्चयना
मारग बे ते मे तने पाछण कह्या · विचारी पुरुषोनो ज्ञान मारग
अने जोगीनो करम मारग कह्यो छे ॥ श्लोक ॥ नकर्मणाम

नारंभान्नैष्कर्म्यंपुरुषोश्नुते ॥ नचसन्यसनादेवसिद्धिंसम-
धिगच्छति ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ पुरुष करम करवीनाग्यानने पा
मेमाटेथतोनथी तेकरम द्वारा चित्तशुद्धि विना एकला सन्या
सथीनसीधीने पामतोनथी ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ नहिकश्चित्क्ष
णमपिजातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ॥ कार्यतेह्यवशः कर्मसर्वः
प्रकृतिजैर्गुणैः ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ कोये पण पुरुष कदी ए एक-
क्षणकरम कर्या विनारेहेतोनथी केमने सत्वरजने तम ए त्रण
मायानागुणतेपुरुषने अवश्यकरम करवावीशे प्रवरतकछे ॥
५ ॥ श्लोक ॥ कर्मेंद्रियाणिसंयम्ययआस्ते मनसास्मरन्
॥ इंद्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचारः सउच्यते ॥ ६ ॥
अर्थ ॥ जेपुरुष इंद्रियोना विषयमां आशक्त थईने करमेंद्र
री एजे ओने आरोपीरहेछे तेपुरुषने पाखंडी कहीये केमके

जेनुं मन विषयमां लाग्युं रहे छे ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ यस्त्विंद्रि
याणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन ॥ कर्मेंद्रियैः कर्मयोग-
मसक्तः स विशिष्यते ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ माटे जे मन सुधां इं
द्रीयोने वश्य करीने आशक्ता रहित कर्म करे ते वखाणवा जोग छे
॥ ७ ॥ श्लोक ॥ नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ॥
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥ ८ ॥ अर्थ ॥
तुं नियमे करी कर्म आचर जे कर्म न करतां कर्म अत्यंत सारुं छे कर
म नहीं करे तो ताहरो शरीर छे ते कांई चालशे नही ॥ ८ ॥ श्लो
क ॥ यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबंधनः ॥ तदर्थं कर्म
कौंतेय मुक्तसंगः समाचर ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ आ जीवनो समुह
ईश्वरने लगती विना स्वर्गादिकनी कामनाने विषे प्रवरत थया
छे तेथकी बंधन पामे छे तेमाटे हे कुंती पुत्र तुं शरव कामनाने-

छोडी दईने ईश्वरनी कृपाथी ये ते वाशते स्वधर्म आचरवु ॥ श्लो
क॥ सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः ॥ अनेनप्र-
सविष्यध्वमेषवोऽस्त्विष्टकामधुक् ॥ १०॥ अर्थ ॥ ब्रह्माए प्रथमा
ये पेहलां प्रजा करी तारे ते प्रजाने तेणे यज्ञने धरम सोंपी दीधोने कह्युं के
तमे आ धरमे करीने वृधी पामोने एथी सर्व्ये तमारा मनोरथ पू
रण थाओ ॥१०॥ श्लोक ॥ देवान्भावयतानेन ते देवा भावय-
न्तु वः ॥ परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥ ११ ॥
अर्थ ॥ आ धरमे करीने तमे देवतने तृप्त करो ए देव तमने तृप्त
करे एवी रीते एक बीजाने तृप्त करतां छतां तमे परमकल्याणने
पामशो ॥११॥ इष्टान्भोगान् हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभावि
ताः ॥ तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः ॥ १२॥ अर्थ
॥ जगनादीक धरमे करीने प्रसन्न थयाथी देवते तमने इच्छेला-

लोग आपशे. तेने ते आपुं तेमांथी देवतानो लाग तेमने अर-
पण करयावगर जे लोगवे छे तेने चोर जाणवो ॥१२॥ श्लोक ॥
यज्ञशिष्टाशिनःसंतोमुच्यंतेसर्वकिल्बिषैः ॥ भुंजते
तेत्वघंपापायेपचंत्यात्मकारणात् ॥१३॥ अर्थ ॥ जे जगन
करतां बचेलुं अन्न ते बिना लोजन करतां नथी ते शरव दोषथ
डी मुगत थाय छे जे पोताने ज शांझ अंन रांधे छे ते पोते पा-
परुप छे ने लोजन पण पापनुंज करे छे ॥१३॥ श्लोक ॥ अन्ना
द्भवंतिभूतानिपर्जन्यादन्नसंभवः ॥ यज्ञाद्भवति पर्जन्यो
यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥१४॥ अर्थ ॥ शरव प्राणिमात्र अंन-
थडी उतपन थाय छे ते अंन वरशाद थडी उतपन थाय छे वर
सात जगन थडी उतपन थाय छे ते जगन करम थडी उतपन थाय छे
अने ते करम थडी उतपन थाय छे नाटे मच्यां कुअर जन जगन लेवो करणे

कुंछे ॥ कर्मब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ॥ तस्मात्सर्वग-
तंब्रह्म नित्ययज्ञेप्रतिष्ठितम् ॥ १५ ॥ एवंप्रवर्तितंचक्रंनानु
वर्तयतीहयः ॥ अघायुरिंद्रियारामो मोघंपार्थसजीवति
॥ १६ ॥ अर्थ ॥ पापी तु ईश्वरछे इंद्रियोनी विषे नीरंभ नथई ने आ
प्रवरती चक्रने अनुशरतो नथी तेनुं जीववुं व्यर्थ छे ॥ १६ ॥ श्लो
क ॥ यस्त्वात्मरतिरेवस्यादात्मतृप्तश्चमानवः ॥ आत्मने-
वचसंतुष्टस्तस्यकार्यंनविद्यते ॥ १७ ॥ अर्थ ॥ जनने जे माण
शपोताने विषेतत्पर होयछे अनेते पोतानी मेले तृप्त थयछे अ
ने पोते पोतामां संतोषमां छे तेने कांई करवानु रहतुं नथी ॥ १७
॥ श्लोक ॥ नैवतस्यकृतेनार्थोनाकृतेनेह कश्चन ॥ नचास्य
सर्वभूतेषुकश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥ १८ ॥ अर्थ ॥ तेहने कांईजे
करवामां अनेकरवामां प्रयोजन नथी अने तेने शरण मा-

एणीमां कांईपण अरथनो शंबंध नथी ॥१८॥ श्लोक ॥ तस्मा
दसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर ॥ आसक्तोह्याचरन्क
र्मपरमाप्नोति पूरुषः ॥१९॥ अर्थ ॥ माटे ते निरंतर करवा-
नुं करम वासना छोडीने करे कर्म करे पुरुश आशगती रहीत क
रवानुं करम करे छे ते मोक्ष पामे छे ॥१९॥ श्लोक ॥ कर्मणैव
हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः ॥ लोकसंग्रहमेवापि
संपश्यन्कर्तुमर्हसि ॥२०॥ अर्थ ॥ करमे करीने जनकादि
क सिधीने पाम्यां वास्ते लोकसंग्रहअरथे परानारे करम करवुं जे
ईए ॥२०॥ श्लोक ॥ यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः
॥ स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥२१॥ अर्थ॥
केमके मोटानुं आचरण जेईने नाना आचरण करे छे उत्तम पु
रुषने प्रमाण करे छे तेने लोक अनुसरे छे ॥२१॥ श्लोक ॥ नमे

पार्थास्तिकर्तव्यंत्रिषुलोकेषुकिंचन॥नानवाप्तमवाप्तव्यं
वर्तएवचकर्मणि॥२२॥अर्थ॥हेअर्जुनमुनेस्यतःत्रणे-
लोकमांकांईकरवुंनथीअथवामुनेअप्राप्तवस्तुमेलवा
नीछेजेमनथी॰तथापिहुंकरमकरतोरहुंछु॥२२॥श्लोक॥
यदिह्यहंनवर्तेयंजातुकर्मण्यतंद्रितः॥ममवर्त्मानुवर्तं-
तेमनुष्याःपार्थसर्वशः॥२३॥अर्थ॥जेहुंकरमकरीनेकरमने
विशेमनलदउंतोनतउव्यशरवमाणशमारीपठेकरे॥२३॥
श्लोक॥उत्सीदेयुरमेलोकानकुर्यांकर्मचेदहम्॥संकरस्य
चकर्तास्यामुपहन्यामिमाःप्रजाः॥२४॥अर्थ॥जेहुंकर्म-
नकरुंतोआमाणशोनोशमुरुठेकाणविनानोथायेजनेकुंवर
एशंकरनोकरनारथाउंतथातरनेनोनाशनोकरनारथाउं॥२४
॥श्लोक॥सक्ताःकर्मण्यविद्वांसोयथाकुर्वंतिभारत॥

कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ॥२५॥अर्थ
॥ जेम अग्नानीपुरुश फलनीईच्छाये करम करेछे तेम ग्नानीन
पुरुषनेपण लोक संग्रहने अरथे फलनीईच्छा विना करम करवां
॥२५॥ श्लोक॥ नबुद्धिभेदंजनयेदज्ञानांकर्म संगिनाम् ॥
जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन् ॥२६॥अर्थ॥
करममांछे आशक्तीने जीअेवा अग्नानीनी बुद्धिने भेद
करवोनही विद्यावानपुरुशनेछे तेसरव करमशास्त्रीरीते करीनेमू
ढने करममांप्रीतिकरावे ॥२६॥ श्लोक ॥ प्रकृतेः क्रियमा-
णानिगुणैः कर्माणिसर्वशः॥ अहंकारविमूढात्माकर्ता
हमितिमन्यते॥२७॥ अर्थ ॥ अहंकार करीने मोहपामेल्या
जेपुरुश ते मायानागुणे करेल्या अेवानेकरम तेनो हुंकरताछुंअे
ममानेछे॥२७॥श्लोक॥तत्वविक्तुमहाबाहोगुणकर्म वि-

भागयोः ॥ गुणागुणेषुवर्तंते इति मत्वा नसज्यते ॥ २८ ॥ अ
र्थ ॥ परंतु जे पुरुष जड अने चैतन्यनुं वेगळापणुं माने छे ते पुरुष
प्रकृतीना गुण पोतपोताना करम करे छे एवुं मानीने पोतपोता
नी मेळे रहे छे ॥ २८ ॥ श्लोक ॥ प्रकृतेः गुणसंमूढाः स
ज्जंते गुणकर्मसु ॥ तानकृत्स्नाविदोमंदान्कृत्स्नविन्नवि
चालयेत् ॥ २९ ॥ अर्थ ॥ प्रकृतीना गुणे करीने मोह पामेला
पुरुषत्वा थीक गुणने अने करमने विशे आशक्त थाय छे - ए-
वा हलका ज्ञानवाळा पुरुषने सरवज्ञ पुरुषे करमथकी चळाववा
नहीं ॥ २९ ॥ श्लोक ॥ मयिसर्वाणिकर्माणिसंन्यस्याध्यात्म
चेतसा ॥ निराशीर्निर्ममोभूत्वायुध्यस्वविगतज्वरः ॥ ३० ॥
अर्थ ॥ हे अर्जुन सरव करम मारे विशे अरपण कर अने एका
ग्रचित्ते करीने आशा ममता अने शोक तेने छोड अने मननो ता

पमुडीनेनुघडर ॥३०॥ श्लोक ॥ येमेमतमिदंनित्यमनुति
ष्ठंतिमानवाः ॥श्रद्धावंतोनसूयंतोमुच्यंतेतेपिकर्मभिः॥
३१॥ अर्थ॥ जेमनुष्य छविश्वासेकरीने पालशे अने तेवीरो
डलपना डंर्ह जेडपणामन मां आणशे नही तेकरमथकीमुक
तथाशे ॥३१॥ श्लोक ॥ येत्वेतदभ्यसूयंतोनानुतिष्ठंति
मेमतम् ॥सर्वज्ञानविमूढांस्तांविद्धिनष्टानचेतसः॥३२॥
अर्थ॥ अनेजे अने तुच्छमानीनें जेमनाणे पालशे नहीं तेओ
शास्त्रज्ञानरहित अविवेकी स्वरगमोक्षथकीनष्ट थआजेमजा
ण॥३२॥ श्लोक॥ सदृशंचेष्टतेस्वस्याःप्रकृतेर्ज्ञानवानपि
॥प्रकृतिंयांतिभूतानिनिग्रहः किंकरिष्यति॥३३॥अ-
र्थ॥ज्ञानवान पुरुषपण पोतानास्वभावने अनुशरीनेवरते
छे अनेशरवप्राणीमात्रपण पोत पोताना स्वभावने अनुशरीने

घर्ते छे तहां निग्रह सुं करनार छे ॥ ३३ ॥ श्लोक ॥ इंद्रियस्येंद्रि
यस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ ॥ तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्य
स्य परिपंथिनौ ॥ ३४ ॥ अर्थ ॥ सरवे इंद्रिना विषयमो प्रीति
अने वेर छे ते ओ ऊने स्वाधीन थाहा पुरुषे थवुं नहीं के मके ते ओ ऊप-
णशत्रु छे ॥ ३४ ॥ श्लोक ॥ श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्व
नुष्ठितात् ॥ स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥ ३५ ॥
अर्थ ॥ पोताना धर्म्म केटलो पण सारो होय अने केटला महा
पुरुष पण शुं मजामा आचरता होय तथापी स्वधरम गुण रहीत हो
यता पण परधरम करता सारो छे स्वधरमने विषे मरणपण सु
खछे अने पारको धरम लयने आपे छे ॥ ३५ ॥ श्लोक ॥ अ
र्जुन उवाच ॥ अथ केन प्रयुक्तोयं पापं चरति पुरुषः ॥ अनि-
च्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजित ॥ ३६ ॥ अर्थ ॥ अ-

र्जुनपुछेछे हे श्रीकृष्ण मनुष्यने पापाचरणने विशे कोण प्र
वृत्तावेछे॰ अनेईछा न करतां बलात्कारे करीने प्रेरणा करत्यांने
म होय तेम पापाचरण करेछे ॥ ३६ ॥ श्लोक ॥ श्रीभगवानु
वाच ॥ कामएषः क्रोधएषः रजोगुणसमुद्भवः ॥ महाश-
नोमहापाप्मा विद्ध्येनमिहवैरिणं ॥ ३७ ॥ अर्थ ॥ श्रीकृ
ष्ण कहेछे आ काम क्रोध रजोगुणथकी उतपन थाएछे अने
सर्व ग्रह करनारांछे॰ महापापरूप अने शत्रु एवा एका-
म क्रोध एने जाणवा ॥ ३७ ॥ श्लोक ॥ धूमेनाव्रियतेवन्ही
र्यथादर्शोमलेनच ॥ यथोल्बेनावृतोगर्भस्तथातेनेदमा
वृतम् ॥ ३८ ॥ अर्थ ॥ जेम धुवाडे करीने अगनी अने मेल
थी दरपण अने ओरे करीने गरभ विटाएलो छे तेम आ
गत काम क्रोधे करीने विटाएलुं छे ॥ ३८ ॥ श्लोक ॥ आवृ

तंज्ञानमेतेनज्ञानिनोनित्यवैरिणा ॥ कामरूपेणकौंते-
यदुःपूरेणानलेनच ॥ ३९ ॥ अर्थ ॥ हे अरजुन एकामरूपी-
नित्यवेरी एज्ञानपुरुषनुंगनानढांक्युंछे एअगननी शांतीकर
वीए मोटुंकठणकामछे ॥ ३९ ॥ श्लोक ॥ इंद्रियाणिमनोबु
द्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते ॥ एतैर्विमोहयत्येषज्ञानमावृत्य
देहिनाम् ॥ ४० ॥ अर्थ ॥ ईंद्रीय मन अने बुद्धिए एनुं-
स्थान छे एम कहे छे. तेमां रहीने कामने छे ते गनानने ढांकीने
जीवने मोह करेछे ॥ ४० ॥ श्लोक ॥ तस्मात्त्वमिंद्रियाण्यादौ-
नियम्यभरतर्षभ ॥ पाप्मानंप्रजहिह्येनंज्ञानविज्ञान ना-
शनम् ॥ ४१ ॥ अर्थ ॥ तेमाटे तुं प्रथम ईंद्रीयोने नियम करीने-
अगनानथी गनान ने नाशकरनार पापीनो परात्यागकर ॥
४१ ॥ श्लोक ॥ इंद्रियाणिपराण्याहुरिंद्रियेभ्यः परंमनः ॥

मनसस्तु पराबुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥ ४२ ॥ अर्थ ॥ इंद्रि
योथी ओने आहेरनाम पण्य थडी परछे इंद्रियथडी मन परछे. मनथ
डी बुद्धिपरछे अने मनथडी आतमा परछे ॥ ४२ ॥ श्लोक ॥
एवंबुद्धेः परंबुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना ॥ जहिशत्रुंमहा
बाहोकामरूपंदुरासदम् ॥ ४३ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासु
पनिष० कर्मयोगोनाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ छ ॥ अ
र्थ ॥ एपरमाणे बुद्धिथडी परमात्माने जाणीने अने मनने बु
द्धीना योगकरीने ए दुरजय काम शत्रुने पराजय करो ॥ ४३ ॥
इतिश्रीमद्भगवतगीतार्थदीपिकायां कर्मयोगोनाम तृतीयोऽ
ध्यायः ॥ ३ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ इमंवि
वस्वतेयोगंप्रोक्तवानहमव्ययम् ॥ विवस्वान्मनवेप्राह म
नुरिक्ष्वाकवेब्रवीत् ॥ १ ॥ अर्थ ॥ श्रीकृष्ण भगवान कहे

छे. मे आ अविनाशि जोग पुरवे सुरजने कह्यो मनुए ईक्षवाकु
नेकह्यो ॥१॥ एवंपरंपराप्राप्तमिमंराजर्षयोविदुः ॥ सकालै
नेह ममतायोगोनष्टः परंतप ॥२॥ अर्थ ॥ ते एम परम परा
गतथाल्योतेनेराजऋषीजनणता हताते नो घणुकालेलोपथयो ॥२॥
श्लोक ॥ सएवायंमयातेद्ययोगः प्रोक्तः पुरातनः ॥ भक्तो:
सिमेसखाचेतिरहस्यंह्येतदुत्तमम् ॥३॥ अर्थ ॥ तुमहा
रोजगत अने मित्रछे माटे तेज पुरातन जोग आजेमे तुनेकह्यो आ
उत्तम रहस्य छे ॥३॥ श्लोक ॥ ॥ अर्जुनउवाच ॥ अपरंभ
वतो जन्मपरंजन्मविवस्वतः ॥ कथमेतद्विजानीयांत्वमादौ-
प्रोक्तवानिति ॥४॥ अर्थ ॥ अरजुन प्रश्न करेछे हे श्रीकृष्णता
मारो जनम हमणी छे अने सुरजनो जनम पेहेलो छे तमे सुरज
ने आ जोग कही रीते कह्यो ते केम जणाय ॥४॥ श्लोक ॥

॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ बहूनिमेव्यतीतानिजन्मानि-
तवचार्जुन॥ तान्यहंवेदसर्वाणिनत्वंवेत्थपरंतपः ॥४॥ अ-
र्थ ॥ श्रीकृष्णकहेछेहे अरजुनतारा अनेमारा अनेक जनम गया
तेसरवहुंजाणुंछुंतुंजाणतोनथी ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ अजोपिस-
न्नव्ययात्माभूतानामीश्वरोपिसन् ॥ प्रकृतिंस्वामधिष्ठाय-
संभवाम्यात्ममायया ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ नंहपीहुं जनमातीत अन
अविनाशी अने शरव प्राणीमात्रनो स्वामी छों तथापी पोतपोता
नी प्रकृतीमांरहीने स्वशक्ती येकरीने जनम धारण करुंछों ॥ ५ ॥
श्लोक ॥ यदा यदाहि धर्मस्यग्लानिर्भवतिभारत ॥ अभ्युत्था
नमधर्मस्यतदात्मानंसृजाम्यहम् ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ जेजे शमये
धरमनीगलानी थीयेछे • ने अधरमनुं माप्लव्य थायछे ते शमे
हुं आजगतमां प्रगट थाउछों अेवो हुं जुग जुगने विशे शाधुना

रक्षाकरने अरथे अने दुष्टनानाशने अरथे अने धरमना स्थापनने अ
रथे अवतारने धरुंछु ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ परित्राणायसाधूनां विनाशा
यचदुष्कृताम् ॥ धर्मसंस्थापनार्थायसंभवामियुगेयुगे ॥ ८ ॥
श्लोक ॥ जन्मकर्मचमेदिव्यमेवं योवेत्तितत्वतः ॥ त्यक्त्वादेहं
पुनर्जन्मनैतिमामेतिसोऽर्जुन ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ अरे हे अरजुन ज
े मारा जनम अने करम अलौकीक छे एम जथार्थ माने छे ते देहां
तरपाम तो नथी ते मारा स्वरुपने विशे मले छे ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ वीत
रागभयक्रोधामन्मयामामुपाश्रिताः ॥ बहवोज्ञानतपसापू
तामद्भावमागताः ॥ १० ॥ अर्थ ॥ घणा पुरुष भय क्रोध ने छो
डीने मारा रूपथईने मारे आशरे करीने ग्नान तप वडे पवित्र थईने
मारा स्वरुपने पाम्या छे ॥ १० ॥ श्लोक ॥ येयथामांप्रपद्यंते तांत
थैव भजाम्यहम् ॥ ममवर्त्मानुवर्तंते मनुष्याः पार्थसर्वशः ॥ ११

॥ अर्थ ॥ माणस सरव प्रकारे मारा मार्गने अनुसरेछे तेमांजे जे
वी मारी सेवा करेछे तेवो हुं तेने अनुकुल थउंछुं ॥ ११ ॥ श्लोक ॥
कांक्षंतः कर्मणां सिद्धिं यजंत इह देवताः ॥ क्षिप्रं हि मानुषे लो
के सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥ १२ ॥ अर्थ ॥ मनुष्यलोकने विशे करमथ
कीसीधी थीउतावली थायछे तेनी इच्छा एकमनावाला मनुष्य इं
द्रादिदेवनुं आराधन करेछे ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ चातुर्वर्ण्यं मया सृ
ष्टं गुणकर्मविभागशः ॥ तस्य कर्तारमपि मां विध्यकर्तारम
व्ययम् ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ मे च्यार वरण गुणे करीने करमे करीने उप-
जाउतपन कर्यांछे तेनो हुं करनार छवों तोपण मने अकरता अने-
अविकारी जेवो जाणेछे ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ न मां कर्माणि लिंपं-
ति न मे कर्मफले स्पृहा ॥ इति मां योभिजानाति कर्मभिर्न स
बध्यते ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ मने करमनो लेप नथी अने करमना

पनी छेम्छानथी जेथोते भने न्लणे छे तेडरमे डरीने प्थंधातो न-
थी ॥१४॥ श्लोक ॥ एवंज्ञात्वाकृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः
कुरुकर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् ॥१५॥ अर्थ ॥पु
रवनापण मुमुक्षु जेमजाणीने डरम डरता हता माटे तेने डरमड
रता आवा छे तेने तुं डर ॥१५॥ श्लोक ॥ किंकर्म किमकर्मे
ति कवयोप्यत्र मोहिताः ॥ तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा-
मोक्षसेऽशुभात् ॥१६॥ अर्थ ॥डरमडधुंने अडरमडधुंते
मा विद्वानपण लमे छे· तेडरम छे ते हुंतुने डहीश जे जाणी
ने तुं असुलथडी छुटीश ॥१६॥ श्लोक ॥ कर्मणोह्यपि बो-
द्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः ॥ अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहनाक
र्मणो गतिः ॥१७॥ अर्थ ॥डरम विडरम अडरम अेत्रणना
तत्वनो प्बोध थवो जेर्ईये जेडरमनो मारग गहनछे ॥१७॥

॥श्लोक॥ कर्मण्यकर्मयः पश्येदकर्मणिच कर्मयः ॥ सबु-
द्धिमान् मनुष्येषु सयुक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ॥१८॥ अर्थ ॥
जे करममां अकरम मां अकरम अने अकरम मां करम जुवे छे ते
ने माणसमां ज्ञानी अने जोगी अने सरवे करमनो करनार जाण
॥१८॥ श्लोक ॥ यस्यसर्वेसमारंभाः कामसंकल्पवर्जिताः
॥ ज्ञानाग्निदग्धकर्माणंतमाहुःपंडितंबुधाः ॥१९॥ अर्थ ॥
जेना सरव उद्यम अने वासना अने संकल्प जे एह्लुं करुं छुं
एवा अभिमान रहित अने जेना करम ज्ञानरूप अगनी ए-
बळेलां छे एवा पुरुषने विधवान लोक पंडित कहे छे ॥१९॥ श्लो
क ॥ त्यक्त्वाकर्मफलासंगंनित्यतृप्तोनिराश्रयः ॥ कर्म-
ण्यभिप्रवृत्तोपिनैवकिंचित्करोतिसः ॥२०॥ अर्थ ॥ तेह
करमना फळनी वासना छोडे छे अने नित्य तृप्त एवो नीरासार

यरेछे ॥२०॥ श्लोक ॥ निराशीर्यतचित्तात्मात्यक्तसर्वप-
रिग्रहः ॥ शारीरंकेवलंकर्मकुर्वन्नाप्नोतिकिल्बिषम् ॥ २१ ॥
अर्थ ॥ अनेते करमने विशे प्रवरतलछतो ड छे करतो नथी एवो
रेहछे जेने आशा नथी जेनां चित्तछे अने इंद्रियो स्वाधीन छे
अने जेने संसारछोडयोते केवळ शरीरधरम करतोछतो पा
पपामतोनथी ॥२१॥ श्लोक ॥ यदृच्छालाभसंतुष्टोद्वंद्वातीं
तोविमत्सरः ॥ समःसिद्धावसिद्धौच कृत्वापिननिबध्य
ते ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ जेदैवेकरीने प्राप्तथायते मांसंतोषसहितअ
नेसुखदुःखादि मतस्सरनथी-अेवोते सिधीने असीधीने वि
शेसमान तेकरमेकरीनेबंधनपामतोनथी ॥२२॥ श्लोक ॥
गतसंगस्यमुक्तस्यज्ञानावस्थितचेतसः ॥ यज्ञायाचर
तःकर्मसमग्रंप्रविलीयते ॥ २३ ॥ अर्थ ॥ जेहेनेकरवापणा

नुं अभिमान गयुं छे. ने ने करम बंधन थकी मुकायो छे ने जेनुं चित
तत्त्वज्ञानने विशे रह्युं छे ने जे शुध जगती शारुं करम आचरे छे.
तेनुं करम सरव प्रकारे लीन थाय छे ॥२३॥ श्लोक ॥ ब्रह्मार्प-
णं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतं ॥ ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्म
कर्मसमाधिना ॥२४॥ अर्थ ॥ आतम ग्यानी जे छे ते जगन-
मानापात्र द्रव्य अगनी ने जमान देवता करमनुं फल ए सरवे ब्र-
ह्म मय जाणे छे ॥२४॥ श्लोक ॥ दैवमेवापरे यज्ञं योगि-
नः पर्युपासते ॥ ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वती ॥
२५॥ अर्थ ॥ केटलाक देव जगन करे छे एटले परम अगनी मां
जीवनुं आतम स्वरूप करीनें हवन करे छे. एटले ते उपाधी एवे
तत्त्व ने जुव दशा मात्र थई ने ते उपाधीने निराश करीने तेने-
शुध स्वरूप करीने निर विशेष परम मां मेलवे छे ॥२६॥ श्लोक॥

श्रोत्रादीनीन्द्रियाणान्येसंयमाग्निषुजुह्वति ॥ शब्दादी-
न्विषयान्यन्यइंद्रियाग्निषुजुह्वति ॥ २६ ॥ અર્થ ॥ કેટલા
એક નિયમરૂપ અગ્નીને વિષે કાન આદી ઇંદ્રિયોનો હવન કરેછે અ
ને કેટલાએક ઇંદ્રિયરૂપ અગ્નીમા શબ્દાદી વિષયનો હવન કરેછે એટ
લે ઇંદ્રીયોને વિષય થકી અવલે મુખે કરીને તેનાં શબ્દાદી વિષ-
યોનું અરપણ કરેછે ॥ ૨૬ ॥ શ્લોક ॥ सर्वाणींद्रियकर्मा
णिप्राणकर्माणिचापरे ॥ आत्मसंयमयोगाग्नौजुह्वति-
ज्ञानदीपिते ॥ २७ ॥ અર્થ ॥ અને કેટલાક યતીગણ ન દી
પીતસુધી નિયમરૂપ અગની માંહે ઇંદ્રિયકરમો અને પ્રાણકર
મો જે એોનેં હોમેછે ॥ ૨૭ ॥ શ્લોક ॥ द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा
योगयज्ञास्तथापरे ॥ स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्चयतयः संशि
तव्रताः ॥ २८ ॥ અર્થ ॥ તેમજ કેટલાક દ્રવ્યજગનવાળા કુવાન

करनाराछे केटलाक [illegible]
प्राणायाम प्रत्याहार धारणा समाधी अने केटला तपोल्ग
न एटले चांद्रायणादिक तप करनाराछे केटलाक पुजनगत करनारा
छे केटलाक वेदनापाठरूप यग करनाराछे केटलाक लणणुं एरेपन
गन करनाराछे. ओ लगन करनारा घनाकठण वरत वाळा छे. ॥ श्लोक ॥
अपानेजुव्हतिप्राणं प्राणेपानंतथापरे ॥ प्राणापानगतीरु-
ध्वाप्राणायामपरायणः ॥ २९ ॥ अर्थ ॥ एटलाक प्राणनो अ
पानवायुमां होम करेछे एटले उपरनावायुने नीचेनावायुमां मे-
ळावेछे. तेमज प्राणवायुमां अपानने घेरेछे. अने पछी बेनी गतिनो
नोरोध करेछे एम प्राणायामकरेछे ॥ २९ ॥ श्लोक ॥ अपरोनय-
ताहाराः प्राणान्प्राणेषुजुव्हति ॥ सर्वेप्येतेयज्ञविदोयज्ञ-
क्षपितकल्मषाः ॥ ३० ॥ अर्थ ॥ केटला एक आहार निय-

मेराधीने प्राणमां प्राण होमेछे. एटले ईंद्रीयोनो मनने विशे
अने मनतो चित्तने विशे अने चित्तनो अहंकारने विशे शंहार करे
छे एटला सर्वे जग्न करतां ते पोतपोताना जग्नाचरणे करीने पा
प थकी शुध थाअछे ॥ ३० ॥ श्लोक ॥ यज्ञ शिष्टा ऽ मृतभुजो यां
ति ब्रह्म सनातनम् ॥ नायं लोको ऽ स्त्ययज्ञस्य कुतोन्यः कुरुस
त्तम ॥ ३१ ॥ अर्थ ॥ जग्ननुं शेष एवुं जे अमरत ना भाजन ते
ना लोक जग्न करनार चित्तशुध्धी द्वारा शनातन ब्रह्मने पाम था
अछे जग्न नहीं करनाराने आ लोक मानुशन थी तो परलोक मां क्यां-
थी मले ॥ ३१ ॥ श्लोक ॥ एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मु
खे ॥ कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्षसे ॥ ३२ ॥ अ
र्थ ॥ एवा नाना प्रकारना जग्न वेदमा थी वीशतारे ल्याछे परंतु ते सर्वे
काईक वाचीक अने मानसीक करम थकी थाअछे एम जाणी एना

एणीनेमुडे तथाईश ॥ ३२ ॥ श्लोक ॥ श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञा
नयज्ञः परंतप ॥ सर्वंकर्माखिलंपार्थज्ञानेपरिसमाप्यते ॥३३
॥ अर्थ ॥ जेप्माहेरलो माजेनाद्रव्यमयन गन थडी गनानन्ग-
न जेटलो शरवगयावाल्या अनेभनजेनी प्रवरतीनेविशे रामदशा
छेटे भाते अत्यंत साशेछे. गनानमांशरवकरमशमाएछे ॥ ३३ ॥
श्लोक ॥ तद्विद्धिप्रणिपातेनपरिप्रश्नेनसेवया ॥ उपदेक्ष्यंतितेज्ञा
नंज्ञानिनस्तत्वदर्शिनः ॥ ३४ ॥ अर्थ ॥ तेगनाननमस्कार अनेशे
वातथा पुछवाथी थायछे. तेभाटे तत्वदर्शी तेगनानी तेगनाननो
उपेशतुनेडरशे ॥ ३४ ॥ श्लोक ॥ यज्ज्ञात्वानपुनर्मोहमेवंयास्य-
सिपांडव ॥ येनभूतान्यशेषेणद्रक्ष्यस्यात्मन्यथोमयि ॥ ३५ ॥ अ
र्थ ॥ जेटलेतुं इरीथी छेहां आवाभोहमां पडीश नहीं अने तुनेश
रव प्राणीमात्र ब्रह्ममय देखाशे ॥ ३५ ॥ श्लोक ॥ अपिचेदसि

पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ॥ सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरि
ष्यसि ॥ ३६ ॥ अर्थ ॥ जोपीतुं पापी होईश तथापी ग्नानरूप वा
णेकरीने तेनीशाये पापरूप समुद्रने तरीश ॥ ३६ ॥ श्लोक ॥ यथै
धांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ॥ ज्ञानाग्निः स
र्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ॥ ३७ ॥ अर्थ ॥ जेमप्र
दीप्त अग्नि काष्टने भस्म करेछे तेम ग्नानजोनाकेनाशरी
रमने भस्म करेछे ॥ ३७ ॥ श्लोक ॥ ॥ नहि ज्ञानेन स
दृशं पवित्रमिह विद्यते ॥ तत्स्वयं योगसंसिद्धिः कालेना
त्मनि विंदति ॥ ३८ ॥ अर्थ ॥ आशंशार मांगनानशरषी बी
जु वस्तु नथी ने पुरुष जोग अेटले निशकाम करवुं अथवा स-
माधी जेणे परीने परीपकव छे ते काले करीने आतम ग्नानने
पामेछे ॥ श्लोक ॥ श्रद्धावान्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेंद्रिय

॥ज्ञानंलब्ध्वापरांशांतिमचिरेणाधिगच्छति ॥ ३९ ॥ अर्थ
श्रद्धावान अने तत्पर अने जितेंद्रिय एवो पुरुष ज्ञान पामे छे
तेने पामीने उतावलो मुक्त थाय छे॥ ३९ ॥ श्लोक ॥ अज्ञश्चाश्र
द्दधानश्चसंशयात्माविनश्यति ॥ नायंलोकोस्तिनपरोनसु
खंसंशयात्मनः ॥ ४० ॥ अर्थ ॥ अने अज्ञानी श्रद्धाहीनने सं
शय आत्मा नाशने पामे छे· संदेहवाला पुरुषने आलोकने पर
लोकनुं शुभ तेकंइ प्राप्त थतुं नथी ॥ ४० ॥ श्लोक ॥ योगसन्य·
स्तकर्माणंज्ञानसंछिन्नसंशयम्। आत्मवंतंनकर्माणि·
निबध्नंतिधनंजय ॥ ४१ ॥ अर्थ ॥ जे योगे करीने कर्मनो
त्यागकर्यो ने ज्ञाने करीने संशय मुलथी गया छे· एवा ज्ञाना
नी पुरुषने कर्मबंधन करवाने शमर्थ नथी ॥ ४१ ॥ श्लो·
क ॥ तस्मादज्ञानसंभूतंहृत्स्थंज्ञानासिनात्मनः ॥ छित्वे

नंसंशयंयोगमुत्तिष्ठोत्तिष्ठभारत ॥ ४२ ॥ इतिश्रीमद्भग
व० ज्ञानयोगोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ ते माटे
ज्ञान रुप खडगे करीने आपोताना हृदयमांथी अग्नाने करीने
थओटे संशय तेने छोडीने उभोथा अने निःकामकरमकर ४२
इतिश्री मद्भगवद्गीताज्ञानाग्न योगोनाम चतुरथोऽध्या
यः ॥ ४ ॥ छ ॥ ॥ अर्जुनउवाच ॥ ॥संन्यासंकर्मणां
कृष्णापुनर्योगंचशंससि ॥ यच्छ्रेयएतयोरेकं तन्मेब्रूहिसुनि
श्चितम् ॥ १ ॥ अर्थ ॥ अरजुन पुछेछे हे श्रीकृष्ण तमे एकवा
र करम छोड एम कहोछो अने फरीथी करम करम एम कहो
छो त्यारे ए बेमां सारुं वसु तेतुं निशल्य थइकरीने कहो ॥ १ ॥
श्लोक ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ सन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रे-
यसकरावुभो ॥ तयोस्तुकर्मसन्यासात्कर्मयोगोविशिष्यते

॥ अर्थ ॥ श्रीकृष्णकहेछे करम त्याग अने करम जोग एबे
ने कल्याणकारी एनेछे. परंतु त्याग करतां जोगसारो ॥२॥
श्लोक ॥ ज्ञेयः सनित्यसन्यासीयोनद्वेष्टिनकांक्षति ॥ नि
र्द्वंद्वोहिमाहाबाहोसुखंबंधात्प्रमुच्यते ॥ ३ ॥ अर्थ ॥
जे प्रीती अने द्वेष एने करीने रहीत ते नित्यसंन्यासी जाणवो.
एवो पुरुष द्वंद्व रहीत थाय छे अनेते सुखे करीने बंधनथकी
मुक्तथायछे ॥३॥ श्लोक ॥ सांख्ययोगौपृथग्बालाः प्रव
दंतिनपंडिताः ॥ एकमप्यास्थितःसम्यगुभयोर्विंदतेफ
लम् ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ सांख्य अने करम जोग ए बेने जुदा
एम अगनानी कहेछे पंडित कहेतो नथी एकने विशे सारीने
शराहोयतो बेउनुफल थाये छे. जे स्थान सांख्य वालाने प्रा
प्तथायछे तेज जोगीने पण प्राप्त थायछे जे सांख्य अने जोग

अे बेउने अेक जाणेछे तेज जाणेछे. ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ यत्सां
ख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते ॥ एकं सांख्यं च-
योगं च यः पश्यति स पश्यति ॥ ५ ॥ संन्यासस्तु महाबाहो
दुःखमाप्तुमयोगतः ॥ योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधि
गच्छति ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ करम कर्या विना करमनो त्याग-
करवो अे मोटुं दुःख छे करम करनार मुनि तो तावलो ब्रह्मपा
मेछे ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजिता-
त्मा जितेंद्रियः ॥ सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लि
प्यते ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ जे पुरुष करम करतां छतां शुद्ध थयो छे
आतमा जेनो अेवा अने जीत्युं छे चित्तने इंद्रिये अेवा अने
सरव भूत मां अेक आतमा जेनो ते करमे करीने लेप पामतो
नथी ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ नैव किंचित्करोमीति युक्तो मन्येत तत

त्ववित्॥ पश्यन्शृण्वन्स्पृशन् जिघ्रन्नश्नन् गच्छन्स्व
पन् श्वसन्॥ ८ ॥ अर्थ ॥ तत्ववेत्ता पुरुष देखवुं सांभळ
वुं अडवुं सुंघवुं जमवुं चालवुं सुवुं श्वास लेवा ॥ ८ ॥
श्लोक ॥ प्रलपन्विसृजन् गृह्णन्नुन्मिषन् निमिषन्न
पि ॥ इंद्रियाणींद्रियार्थेषु वर्तंत इति धारयन् ॥ ९ ॥ अर्थ
बोलवुं नाखवुं चालवुं आंख उघाडवी आंख मीचवी ए स
र्व वेपार थतां छतां पोते कंई करतो नथी ने एतो इंद्रियो
पोतपोताना विषयने विशे वरते छे· एम निश्चे करीने माने
छे ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ ब्रह्मण्याधायकर्माणि संगंत्यक्त्वाक
रोति यः ॥ लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवांभसा ॥ १० ॥
कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिंद्रियैरपि ॥ योगिनः सर्व कु
र्वंति संगं त्यक्त्वात्मशुद्धये ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ जेम कमळनुं

पाछडुं हेलेकरीने लेपातुं नथी तेमज पुरुषनो संगकरनकरी
ने परमने अरपणकरेछे. ते पापेकरीने लेपातोनथी जोगीपु
रुष अभिमान छोडीनेकेवल मनबुधी इंद्रियो संगकरीने
केवळ चित्तशुधीने अरथे करमकरेछे. ११ ॥ श्लोक ॥ यु-
क्तः कर्मफलंत्यक्त्वा शांतिमाप्नोति नैष्ठिकीम् ॥ अयुक्तः
कामकारेणफलेसक्तोनिबध्यते ॥१२॥ अर्थ ॥ करमक
रतांछतां करमफलनो त्यागकरयाथी अनंत सुख प्राप्त थायछे
अने करमरहित पुरुष वासनाने जोगे करीने फलासक्त थईने बं
धन पामेछे ॥१२॥ श्लोक ॥ सर्वकर्माणि मनसा सन्यस्या
स्ते सुखं वशी ॥ नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन् ॥१३
॥ अर्थ ॥ जीतेंद्रियपुरुष मनबुधी सरव करमनो त्याग क
रीने देहरूप नवद्वार नगरने विशे कांईन करतां छतां अनेनकराव

તાંછતાં સુખે કરીને રહેછે ॥૧૩॥ श्लोक ॥ नकर्तृत्वंनकर्मा-
णिलोकस्यसृजतिप्रभुः ॥ नकर्मफलसंयोगंस्वभावस्तु
प्रवर्तते ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ ચૈતન્યરૂપપ્રભુતેતો વગર ઇંદ્રિયોને
કરતાપણું અને કર્મ ઉપજાવતા નથી અને કર્મ ગ્રહણનો ભોગ
પણ કરતા નથી પણ સ્વભાવ પોતાની મેળે પ્રવર્તેછે ॥૧૪॥
श्लोक ॥ नादत्तेकस्यचित्पापंनचैवसुकृतंविभुः ॥ अ-
ज्ञानेनावृतंज्ञानंतेनमुह्यंतिजंतवः ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ વ્યા
પક ચિદાત્મા કોઇનું પાપ પુણ્ય લેતો નથી અજ્ઞાને કરીને જ્ઞાન
ઢંકાયુંછે તેથી પ્રાણીમાત્ર મોહ પામેછે ॥૧૫॥ श्लोक ॥
ज्ञानेनतुतदज्ञानंयेषांनाशितमात्मनः ॥ तेषामादित्य
वज्ज्ञानंप्रकाशयतितत्परम् ॥ १६ ॥ अर्थ ॥ પરંતુ જ્યારે તે
અજ્ઞાનને વિચારે કરીને નાશ પામેછે ત્યારે જ્ઞાન સુરજની

पेठे आतमस्वरूपने प्रकाश करेछे ॥१६॥ श्लोक॥ तद्बुद्ध
यस्तदात्मानस्तन्निष्ठाः स्तत्परायणाः॥ गच्छंत्यपुनरावृ
त्तिंज्ञाननिर्धूतकल्मषाः॥१७॥ अर्थ॥ जेनि बुधीपर
ब्रह्मने विशे छे जे तेनुं मन आतमाने विशे छे नी नीश्चय अने
ते ज जेने रेहेवानुं ठेकाणुं छे एरीते ज्ञाने करीने धोवायां छे पाप
जेना एवा पुरूष मोक्ष पामे छे ॥१७॥ श्लोक॥ विद्याविनय
संपन्नो ब्राह्मणेगविहस्तिनी॥ शुनिचैवश्वपाकेच पंडि
ताः समदर्शिनः॥१८॥ अर्थ॥ विद्या विनय जुगत ब्रा
ह्मण अने गाय हाथी कुतरूं चांडाल ए त्यादि शरखने विशे पं
डीत समान भावने जुवे छे ॥१८॥ श्लोक॥ इहैव तैर्जितः
सर्गोयेषांसाम्येस्थितंमनः॥ निर्दोषंहि समंब्रह्म त
स्माद्ब्रह्मणितेस्थिताः॥१९॥ अर्थ॥ जेनुं मन शरख

प्राणीमात्रमाशमान त्यावने पाम्युंते अहीयां ल्लनमर
हीत थायछे॰ अने परमने विशे रमछे कारणके परमम
मान अने निरदोषछे ॥ १९ ॥ श्लोक ॥ नप्रहृष्येत्प्रियंप्रा-
प्यनोद्विजेत्प्राप्यचाप्रियम् ॥ स्थिरबुद्धिरसंमूढोब्रह्मविद्ब्र
ह्मणिस्थितः ॥ २० ॥ अर्थ ॥ प्रिय पदारथनी प्राप्ती जेकरीने ह
र्ष अने विप्रीय पदारथनी प्राप्ति जेकरीने उद्वेग पामे नहीं अ
ने स्थिरबुद्धीने मोहरहितपरमगतने जाणत अने ब्रह्मने विशे
रहेछेजेचो ॥ २० ॥ श्लोक ॥ बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विंदत्या
त्मनियत्सुखम् ॥ सब्रह्मयोगयुक्तात्मासुखमक्षय्यमश्-
नुते ॥ २१ ॥ अर्थ ॥ विषयने विशे विशयने विशे भरणेकरी
ने अखंडितपणाथीजेसुखनो अनुभव थायछे तेसुखनेपरम
गतानीअक्षयलोगभोगवेछे ॥ २१ ॥ श्लोक ॥ येहिसंस्पर्शजा

भोगादुःखयोनयएवते ॥ आद्यंतवंतःकौंतेयनतेषुरमः
तेबुधः ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ विषयभोगदुःखदेनारछे केमके ते
नी आदीअंत छेते माटे तेभोगनाली पुरुष परमतोनथी ॥
२२ ॥ श्लोक ॥ शक्नोतीहैवयःसोढुंप्राक्शरीरविमोक्षणात्
॥ कामक्रोधोद्भवंवेगंसयुक्तःससुखीनरः ॥ २३ ॥ अर्थ ॥
ज्यांसुधी जीवे त्यांसुधी कामक्रोधनावेगने शहनकरीशके छे
ते पुरुषजोगीतथासुखी जाणवो ॥ २३ ॥ श्लोक ॥ योंऽतःसु-
खोंतरारामस्तथांऽतर्ज्योतिरेवयः ॥ सयोगीब्रह्मनिर्वाणं
ब्रह्मभूतोधिगच्छति ॥ २४ ॥ अर्थ ॥ जेपुरुषने अंतरमांसु
ख अने अंतरमां आराम अने अंतरमां ज्योती छे अने जेसु
ख आरामने ज्योतीजेने बाहेरइंद्रियद्वारा नथीते जोगीपुरु
ष ब्रह्ममयथतांछतां परमानंदने पामेछे ॥ २४ ॥ श्लोक ॥

लभंतेब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः ॥ छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहितेरताः ॥ २५ ॥ अर्थ ॥ तेऋषी पाप थकी शुध छेने संशय रहित छे अने जीतचित छेने सर्व प्राणी नाकल्याण विषे तत्पर छे तेनो ओपण परमने पामे छे ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम् ॥ अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् ॥ २६ ॥ अर्थ ॥ काम क्रोध रहित छेने जीतचित छेने तत्ववेत्ता छे एवा ज-तीने मरणथकी पुरवे अने पछे मोक्ष छे ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ स्पर्शान्कृत्वाबहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवांतरे भ्रुवोः ॥ प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यंतरचारिणौ ॥ २७ ॥ अर्थ ॥ बाहेरना विषय मनमां आववाने देनाला नथी उप-रने लमये नीवये उ शरीर राखीने ध्यानमां रहो- एवो प्राण

अपानने नाकमां शमान करीने ॥२७॥ श्लोक ॥ यतेंद्रि
यमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः ॥ विगतेच्छाभयक्रो-
धोयः सदामुक्त एवसः ॥२८॥ अर्थ ॥ इंद्रिय मनबु
धीने जीतीने मोक्षपामवाने ततपरने डामलयक्रोध रही
तने निरंतरमुकत ॥२८॥ श्लोक ॥ भोक्तारंयज्ञतपसांस
र्वलोकमहेश्वरम् ॥ सुहृदंसर्वभूतानांज्ञात्वामांशांतिमृ
च्छति ॥२९॥ इतिश्रीमद्भगव० संन्यासयोगोनाम पंच-
मोऽध्यायः ॥५॥ छ ॥ ॥ एवो मुनियगनने तप
नो लोगता अने अनंत कोटि ब्रह्मांडनानायक अने शरवभू
तनो मित्र एवो मने जाणीने मोक्षपदपामेछे ॥२९॥ इ
तिश्रीमद्भगवत० कर्म संन्यासजोगो नाम पंचमोऽध्या
यः ॥५॥ ॥श्रीभगवानुवाच॥ ॥अनाश्रितः कर्म-

फलंकार्यंकर्मकरोतियः ॥ ससंन्यासीचयोगीचननिर
ग्निर्नचाक्रियः ॥ १ ॥ अर्थ ॥ श्रीकृष्ण भगवान कहे छे के
कर्म फलने छोडीने करवानुं कर्म करे ते संन्यासी अने ते
ज जोगी जाणवो ने जे अग्निहोत्र छोडनारो ते जोगी नहीं ॥१॥
॥श्लोक॥ यंसन्यासमितिप्राहुर्योगंतंविद्धिपांडव ॥ न
ह्यसन्यस्तसंकल्पोयोगीभवतिकश्चन ॥ २ ॥ अर्थ ॥
हे पांडव जेने संन्यास कहे छे तेने ज जोग जाणजे जेणे संकल्प त्या
ग कर्यो नथी ते जोगी थतो नथी ॥२॥ श्लोक ॥ आरुरुक्षो
मुनेर्योगंकर्मकारणमुच्यते ॥ योगारूढस्यतस्यैवशमः
कारणमुच्यते ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ जोगनी प्रापतीने इच्छतो अ
वो जे मुनी तेने निष्काम कर्म कारण छे अने जोगने इच्छ
ता मुनीने शांति कारण छे ॥३॥ श्लोक ॥ यदाहिनेंद्रिया

र्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते ॥ सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारू
ढस्तदोच्यते ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ ज्यारे इंद्रीयोना विषय अने
तत प्राप्त करम मने विशे आशक्त थतो नथी तारे ते सरव सं
कल्पना त्यागीने जोगारुढ़ी कहे छे ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ उद्ध
रेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ॥ आत्मैव ह्यात्मनो
बंधुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ एवे अनु करमे पो
ताना आतमाए करीने आतमानो उधार करवो अने आ
तमाने प्रपंच जेहमां नाखवो नहीं आतमाज आतमानो बं
धु छे ने आतमाज आतमानो शत्रु छे ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ बंधु
रात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः ॥ अनात्मन-
स्तु शत्रुत्वे वर्तितात्मैव शत्रुवत् ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ जेणे
पोताने आतमां थे करीने आत्माने जीत्यो छे तेने आत्मा

न आतमानो बंधु छे॰ तेतेने आतमाये जीतीने आतमा क
ट्यो नथी तेने आतमानो शत्रु आतमा छे तेमजाणवुं ॥६॥
श्लोक ॥ जितात्मनःप्रशांतस्यपरमात्मासमाहितः ॥
शीतोष्णसुखदुःखेषुतथामानापमानयोः ॥७॥ अर्थ
शीतनेगरमीसुखनेदुःखमानने अपमान एने विशे चि
त्त निरविकारछे॰ ते शांत पुरुषनुं चित्त केवल समाधिस्थथा
यछे॰ ॥७॥ श्लोक ॥ ज्ञानविज्ञानतृप्तात्माकूटस्थोविजि
तेंद्रियः ॥ युक्त इत्युच्यतेयोगीसमलोष्टाश्मकांचनः ॥
८ ॥ अर्थ ॥ जेहेनुं चित्त ज्ञान विज्ञाने करीने पूर्ण अ
ने विकाररहितने, जीतेंद्रियने अने माटीने शोनुं ते
नेसरोखाछे॰ एवा पुरुषने जोगी कहीये ॥८॥ श्लोक
॥ सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबंधुषु ॥ साधुष्वपि

प्वपापेषु समबुद्धि विशिष्यते ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ कुटुंब्यशत्रु
मित्र उदासी मध्यम स्थ द्वेशी संबंधी रुडापुरुष पापी पु
रुष ए सरवेनी विशे जेनी बुधी समान छे. ते श्रेष्ठ जाण
वो ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ योगीयुंजीतसततमात्मानंरहसिस्थि
तः ॥ एकाकीयतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः ॥ १० ॥ अ
र्थ ॥ जोगी त्यारी पुरुषने वासना अने परिग्रह छोडीने एक
लो एकांते रहीने चित्त इंद्रीयो सुधां शरीर स्थीर करीने नि
रंतर बुधीनी शमाधी करवी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ शुचौदेशेप्र
तिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः ॥ नात्युच्छ्रितंनातिनीचं
चैलाजिनकुशोत्तरम् ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ तेनो प्रकार अने शुध
स्थाने पोतानुं आसन अत्यंत उंचुने अत्यंत नीचुं नहीं ए
वुं माथीलुं योगुं करीने ते उपर दरल दरल उपर डाली आस

गनुं थाभ्ं तेपर छुगडुं भी छावीनें ॥११॥ श्लोक॥ तत्रै
काग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेंद्रियक्रियः॥ उपविश्यासने
युंज्याद्योगमात्मविशुद्धये॥१२॥ अर्थ॥ एवा अभ
ल आशन उपर बेशीने चित्तनें ईंद्रियोनी क्रीया वश क
रीने मननी एकाग्रताने चित्तनी शुधीने अरथे जोगाभ्य
ास करवुं॥१२॥ श्लोक॥ समंकायशिरोग्रीवं धारयन्नच
लं स्थिरः॥ संप्रेक्ष्यनासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोक
यन्॥१३॥ अर्थ॥ शरीर मस्तकने डोकने उंच स्थीत सुधा रा
खीने दृष्टीना डनारे डपर राखीने दिशा ओने न जोतां॥१३॥
श्लोक॥ प्रशांतात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः॥
मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः॥१४॥ अर्थ
॥ शांतचित्त राखीने निरभय थईने परम धारीनुं वरत रा

खीने मनने नीयममां राखीने मारे विशे चित्त राखी तत्प
रथईने जोगनुगत थाय ॥१४॥ श्लोक ॥ युंजन्नेवं सदा
त्मानं योगी नियतमानसः ॥ शांतिं निर्वाणपरमां मत्सं
स्थामधिगच्छति ॥१५॥ अर्थ ॥ एम प्रकारे वश करीयुंछे
चित्त जेवा जोगीने निरंतर चित्तनुं समाधान करतो छतो
मोक्षदेमां श्रेष्ठ अने हुं जेनो आश्रय छौं एवी शांतीने पा
मेछे ॥१५॥ श्लोक ॥ नात्यश्नतस्तु योगोस्ति नचैकांत
मनश्नतः ॥ नचातिस्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैवचार्जुन ॥
१६ ॥ अर्थ ॥ अत्यंत भोजन करनाराने अथवा भूख्याने
अत्यंत ऊंघनाराने अथवा जागनाराने जोगनी सीधी थती
नथी ॥१६॥ श्लोक ॥ युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य
कर्मसु ॥ युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥

॥१७॥ अर्थ॥ अने आहार विहार जुगत छे· जेडरमने
विशे पेसरा जुगत छे· अनेउंघने उजागरो जेनो प्रमाणसर छे·
अेहेवा पुरषने दुखनाशक जोग प्रमाणसर थाअे छे·॥१७॥
श्लोक॥ यदाविनियतंचित्तमात्मन्येवावतिष्ठते॥ निस्पृ
हः सर्वकामेभ्योयुक्तइत्युच्यतेतदा॥१८॥ अर्थ॥ जे स
मे वश्य करेलुं चित्त आतम स्वरूपने विशे रेहे छे· जे सरवका
मनाथकी निस्प्रह थाये छे· ते समये तेने जोगी केहे छे·॥१८
॥ यथादीपोनवातस्थोनेंगतेसोपमास्मृता॥ योगिनो
यतचित्तस्ययुंजतोयोगमात्मनः॥१९॥ अर्थ॥ जोग
करनारा जोगीना नीयमीत चित्तने ओपमा वोंछे विना
ना स्थानमां नहीं चलता अेवा दीवानी पेठे॥१९॥ श्लोक
यत्रोपरमतेचित्तंनिरुद्धंयोगसेवया॥ यत्रचैवात्मना

त्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति ॥ २० ॥ अर्थ ॥ जोगावस्था-
ने विशे जोगशेषा अेकरीने वश्यथ अेवुं चित्तलीन था-
अेछे· तेवे चित्ते करीने निरविकल्प आतमाने जोतो छतो
आतम स्वरूपनें विशे संतोष पामे छे· ॥ २६ ॥ श्लोक ॥
सुखमात्यंतिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतींद्रियम् ॥ वेत्ति
यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्वतः ॥ २१ ॥ अर्थ ॥
जे अनंत सुख केवल बुधीने ग्राहण थाय छे· इंद्रियोने-
अ सुख ग्रहण थतुं नथी· जे स्वरूपने विशे आ थको काइ जे
आ जगतनो अनुभव करतो नथी· अने तत वथकी चाल-
तो नथी· ॥ २१ ॥ श्लोक ॥ यंलब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते
नाधिकं ततः ॥ यस्मिंस्थितो न दुःखेन गुरुणापि वि
चाल्यते ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ जे जोगनां सुखने पामे छतां·

अन्य लाभने ते शरखो मोहोटो मानतो नथी ज्हांनहांथी
पुरुषने मोटुं दुःख पण चलावी शाकतुं नथी ॥२२॥ श्लोक
॥ तं विद्याद्दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम् ॥ सनि-
श्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा ॥ २३ ॥ अर्थ॥
ए अंतःकरणना संबंधना वियोग के जोग जाणवो विरार
हित चित्त करीने निश्चे करीने ते जोगाभ्यास करवो ॥२३॥
श्लोक॥ संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः
॥ मनसैवेंद्रियग्रामं विनियम्य समंततः ॥ २४ ॥ अर्थ
॥ संकल्पथकी उतपन्नथये ला एवां शरवकामने छोडीने-
मनथी करीने इंद्रियरा मुदायने विशयथकी संकोचीने ॥२४
॥ श्लोक ॥ शनैःशनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया ॥
आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिंतयेत् ॥२५॥

द्र ढ बुधीने करीने हलवे हलवे विषय थकी विराम पामवुं.
मननी स्थिती आतमाने विषय करीने कांई अेरीत पण क
रवीनहीं ॥२५॥ श्लोक ॥ यतो यतो निश्चरति मनश्चंचल
मस्थिरम् ॥ ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् ॥
॥२६॥ अर्थ ॥ अे अस्थिर मन ज्हां ज्हां जायत हां ता
हांथी खेंचीने आतम स्वरूपने विषे वश्य राखवुं ॥२६॥ श्लो
क ॥ प्रशांतमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् ॥ उपैति
शांतरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥ २७ ॥ अर्थ ॥ अे
हेवा शांत चित्त अने रजोगुण रहितने ब्रह्मभूत पापरहि
त जोगीने उत्तम सुख पोतेज प्राप्त थाय छे.॥२७॥ श्लोक॥
युंजन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः ॥ सुखेन ब्र
ह्मसंस्पर्शमत्यंतं सुखमश्नुते ॥ २८ ॥ अर्थ ॥ पापरहि

तेज्जोगीएेम निरंतर मननुं समाधान करतो छतो॰ विनाशे
हेनते ब्रह्मांभळीने परमानंदसुखने पामेछे॰॥ २८॥ ॥
श्लोक॥ सर्वभूतस्थमात्मानंसर्वभूतानिचात्मनि ॥
ईक्षतेयोगयुक्तात्मासर्वत्रसमदर्शनः ॥२९॥ अर्थ॥
शरीरेकरी डगोशमान करनारी वालो जोगीते सरव भाणीमां
पोताने अने पोताने विशेसरव प्राणीने जुवेछे॥ २९॥ प
श्लोक॥ योमांपश्यतिसर्वत्रसर्वंचमयिपश्यति ॥ त-
स्याहंनप्रणश्यामिसचमेनप्रणश्यति ॥ ३०॥ अर्थ॥
जेमने सरवमां जुवेछे॰ अने सरवने मारेविशे जुवेछे तेने हुं
दुरनथीनेते मारे दुरनथी॥३०॥ श्लोक ॥ सर्वभूतस्थितं
योमांभजत्येकत्वमास्थितः॥ सर्वथावर्तमानोपि स-
योगीमयिवर्तते ॥ ३१॥ अर्थ॥ जेहुने लेदनथी एवो तेश

रवरूपतमां रह्यो एवा मने जाणेछे. ते जोगी शर्व प्रकारे व
रततां मारे विशे ज रहेछे ॥३१॥ श्लोक ॥ आत्मौपम्येन
सर्वत्रसमं पश्यतियोऽर्जुन ॥ सुखंवायदिवादुःखंसं
योगी परमोमतः ॥३२॥ अर्थ ॥ हे अरजुन पोताना शरीरसु
खीजाणेशुखदुःखथायछे एम समजीने प्राणीमात्रने पीडाकर
तोनथी ते जोगी श्रेष्ठ जाणवो ॥३२॥ श्लोक ॥ अर्जुनउवाच
॥योऽयं योगस्त्वयाप्रोक्तः साम्येन मधुसूदनम् ॥ ए
तस्याहं नपश्यामि चंचलत्वात्स्थितिं स्थिराम् ॥३३॥
॥अर्थ ॥ अरजुन पुंछेछे हे श्री कृष्ण आतमेने समान पण
करीने जोग कह्यो तेहनी स्थिति स्थलावने मांयले करीने
मने स्थीर लागतीनथी ॥३३॥ श्लोक ॥ चंचलंहिमनः
कृष्णप्रमाथिबलवदृढम् ॥ तस्याहं निग्रहं मन्येवायोः

रिवसुदुष्करम् ॥ ३४ ॥ अर्थ ॥ मन चंचल अने मथन-
करे एवुं बलवान ने दृढ छे. तेनो निग्रह वायुना निग्रहस
रखो छे माटे ए मन दुःखे करीने जीताय नहीं. एम हुं मानुं
छुं ॥ ३४ ॥ श्लोक ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ असंशयं महा
बाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ॥ अभ्यासेन तु कौंतेय वैराग्ये-
ण च गृह्यते ॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ श्रीकृष्ण कहे छे हे मोटा पराक्र
मवाळा अर्जुन निश्चे मन चंचल अने दुःखे करीने पण जीता
य एवुं नथी तथापी अभ्यास अने वैराग्य एणे करीने ए
वश थाय छे ॥ ३५ ॥ श्लोक ॥ असंयतात्मना योगो दु
ष्प्राप इति मे मतिः ॥ वश्यात्मना तु यतता शक्यो वाप्तुमु
पायतः ॥ ३६ ॥ अर्थ ॥ मारे मते तो नथी जीत्युं मन जेणे ए-
त एवा पुरुषने योग दुःखे करीने मळवानो छे पण जे चित्तने

स्वाधीन करनारछे ने जतन करेछे तेने उपाये करीने जोग मा
सथायछे ॥३६॥ श्लोक ॥ अर्जुनउवाच ॥ ॥ अयतिः
श्रद्धयोपेतोयोगाच्चलितमानसः ॥ अप्राप्ययोगसंसि
द्धिंकांगतिंकृष्णगच्छति ॥३७॥ अर्थ ॥ अरजुन पुंछेछे
हे श्रीकृष्ण लावे करीने जोग मारगमां चाल्यो एवो पुरुष ते
ने जतन करतां करतां पण मन जोगथई चलीने जोगसीधीन
थईतारे तेशीगतीने पामेछे ॥३७॥ श्लोक ॥ कच्चिन्नोभय
विभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिवनश्यति ॥ अप्रतिष्ठोमहाबाहो
विमूढोब्रह्मणःपति ॥३८॥ अर्थ ॥ ते करम मारग अ
ने जोग मारगथी निशये भ्रष्ट थातो छतो अने परम मार
गने विशे मूढ एवो फाटेलां व्यादलानी पेठे नहीं नवो थायछे
छेशुं ॥३८॥ श्लोक ॥ एतन्मेसंशयंकृष्णछेत्तुमर्हस्यशे

ष्यतः ॥ त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते ॥
३९ ॥ अर्थ ॥ हे कृष्ण अमारो संशय मोटो छे तेने तमे छे
दवाने योग्य छो तमारा वीना बीजो कोई संशय दूर करवाने
शमरथ नथी ॥ ३९ ॥ श्लोक ॥ श्रीभगवानुवाच ॥
पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य सुद्यते ॥ नहि कल्या
णकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति ॥ ४० ॥ अर्थ ॥ श्रीकृष्ण
भगवान कहे छे अरे अरजुन तेनो आलोकमां ने परलोक
मां नाश नथी. हे कल्याण करनारो कोई पण पुरुष नरकग-
तीने पामतो नथी ॥ ४० ॥ श्लोक ॥ प्राप्य पुण्यकृतां लो
कानुषित्वा शाश्वतीः समाः ॥ शुचीनां श्रीमतां गेहे यो
गभ्रष्टोऽभिजायते ॥ ४१ ॥ अर्थ ॥ जोगथकी भ्रष्ट थयेल
जो पुरुष पुण्यलोक प्राप्त [illegible] ने पवित्र

श्रीमंतनें घेरजन्म धारण करेछे ॥ ४१ ॥ श्लोक ॥ अथवा
योगिनामेव कुले भवति धीमतां ॥ एतद्धि दुर्लभतरं लो
के जन्म यदीदृशम् ॥ ४२ ॥ अर्थ ॥ अथवा बुधीमान
एवा जोगीने घेर जनम धारण करेछे लोकमां एवे ठेकाणे
जनम थयो महा दुरलभ छे ॥ ४२ ॥ श्लोक ॥ तत्र तं बुद्धि
संयोगं लभते पौर्वदेहिकम् ॥ यतते च ततो भूयः संसि
द्धौ कुरुनंदन ॥ ४३ ॥ अर्थ ॥ देहांते पुरुष देहनी बुधी
नो संजोगने पामेछे ने फरीथी जोगसीधीनें अरथे जतन
करेछे ॥ ४३ ॥ श्लोक ॥ पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यव
शोपि सः ॥ जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते
॥ ४४ ॥ अर्थ ॥ ते पराधीन होय तोय पण तेने पुरवनो
अभ्यास ते जोग मारगने लगाडे छे - ते जोगनी ईच्छा वा

प्ता छतां पण ड्रम डांड वेघंती तथा शछे ॥ ४४ ॥ श्लोक

॥ प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः ॥ अनेक

जन्मसंसिद्धस्ततोयातिपरांगतिम् ॥ ४५ ॥ अर्थ ॥

अने जोगीने तन डरता पापरहित थईने अनेक जन्मे सिध

थईने मोक्षपामेछे ॥ ४५ ॥ श्लोक ॥ तपस्विभ्योधिको

योगीज्ञानिभ्योपिमतोधिकः ॥ कर्मिभ्यश्चाधिकोयो

गीतस्माद्योगीभवार्जुन ॥ ४६ ॥ अर्थ ॥ चांद्रायणा

दी पातक डरनारा अने शास्त्रार्थ डीगनाानने पामनार अ

ग्निहोत्रादीक कर्म करनार एसर्वथकी जोगी श्रेष्टछे अती ते

मारे हे अर्जुन तुं जोगीथा ॥ ४६ ॥ श्लोक ॥ योगिनामपिस

र्वेषां मद्गतेनांतरात्मना ॥ श्रद्धावान् भजतेयो मांसमेयुक्त

तमोमतः ॥ ४७ ॥ ॥ इतिश्रीभगवद्गीता० अभ्यासयो०

गोनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ अर्थ॥ सरवे जोगीमध्ये जे-
मने अंतःकरण अरपणकरीने ज्लावीक थातो छतो मने ज्लजे
छे ते मने अति मान्य छे ॥ ४७ ॥ इतिश्रीभ० ल० अल्यास
योगोनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ श्रीभगवानु
वाच ॥ ॥ मय्यासक्तमनाः पार्थयोगंयुंजन्मदाश्रयः ॥
असंशयंसमग्रंमांयथाज्ञास्यसि तच्छृणु ॥ १ ॥ अर्थ
॥ श्रीकृष्णभगवान कहे छे के अरजुन मारे विशे चित्त राखी
नेजोगने करतां छतां मारो आशरो थईने मने जे रीते जाणीश
ते शरवे शांभल ॥ १ ॥ श्लोक ॥ ज्ञानंतेऽहंसविज्ञानंमिदंव
क्ष्याम्यशेषतः ॥ यज्ज्ञात्वानेहभूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमव
शिष्यते ॥ २ ॥ अर्थ ॥ ते गनानने विगनान शरवे कहीशने
जाणीने ईहां बीजो कोई जाणवाने रहेतुं नथी ॥ २ ॥ श्लोक ॥

मनुष्याणांसहस्त्रेषुकश्चिद्यततिसिद्धये ॥यततामप
पिसिद्धानांकश्चिन्मांवेत्तितत्त्वतः ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ हजा
रमाणसमांएकादसिधनेमाटेजतनकरेछे अनेजतनकर
नारासिधोमांएकादमनेयथारथजांणेछे ॥३॥ श्लो
क ॥ भूमिरापोनलोवायुःखंमनोबुद्धिरेवच ॥ अहंकार
इतीयंमेभिन्नाप्रकृतिरष्टधा ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ महारीप्रकृती
आठप्रकारनीछे पृथ्वी जल अगनी वायु आकाश मन बुधी-
अहंकार ॥४॥ श्लोक ॥ अपरेयमितस्त्वन्यांप्रकृतिंवि
द्धिमेपराम् ॥ जीवभूतांमहाबाहोययेदंधार्यतेजगत् ॥
५ ॥ अर्थ ॥ ए आठप्रकारनीप्रकृतीजडछे. तेविना बीजीजी
वभूतप्रकृतीश्रेष्ठजाणवे- जाजगतनुं धारणकरेछे. एमेत-
न्यरूपछे ॥५॥ श्लोक ॥ एतद्योनीनिभूतानिसर्वाणीत्यु

पधारय ॥ अहंकृत्स्नस्यजगतः प्रभवः प्रलयस्तथा ॥
६ ॥ अर्थ ॥ एवी प्रकृती सरव प्राणी मात्रनुं कारण छे हुं सर
व जगतनुं उतपत्ती कारण अने लीन थवानु स्थानक छुं ॥ ६ ॥ श्लो
क ॥ मत्तः परतरं नान्यत्किंचिदस्ति धनंजय ॥ मयिसर्व-
मिदं प्रोक्तं सूत्रे मणिगणाइव ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ मारा विना-
बीजुं कोई नथी शत्रुंमां मणीनी पेठे आ सरव प्रपंच मारामां प
रोवा एलो छे ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ रसोहमप्सु कौंतेय प्रभास्मि
शशिसूर्ययोः ॥ प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥
८ ॥ अर्थ ॥ जलने विशे रसा हुं छुं चंद्र सुरजने विशे कांती हुं छुं
सरव वेदने विशे ओंकार हुं छुं आकाशमां शब्द हुं छुं माण
समां पुरुषातन हुं छुं ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ पुण्योगंधः पृथिव्यां
च तेजश्चास्मि विभावसौ ॥ जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि

तपस्विषु ॥९॥ अर्थ ॥ पृथ्वीमां सुगंध हुं छुं अग्नीमां प्रकाश हुं छुं सरव प्राणीमां जीवन हुं छुं तपस्वीमां तप हुं छुं ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ॥ बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥ १० ॥ अर्थ ॥ हे अरजुन सरव प्राणीमात्रनुं पवित्र बीज हुं छुं ने सरव बुधीमाननी बुधी हुं छुं तेजवाळानुं तेज हुं छुं ॥ १० ॥ श्लोक ॥ बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितः ॥ धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ प्राणीमात्र माधरमनी विरुध नहीं एवो काम ते हुं छुं अने काम क्रोध रहित एवुं ने बलवाननुं बल ते हुं छुं ॥ [illegible] ॥ श्लोक ॥ ये चैव सात्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये ॥ मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥ १२ ॥ अर्थ ॥ गनाने

वैरागने ऐस्वर जहीड शातवीडत्नाव ओलने प्रवृत्ति आ
दी राजस्यभावनी हराने आलश आदि तामसभाव ओ-
त्रिगुणमय भाव माराथकी थया एम जाण परंतु हुं तेने वि
शे नथी ने ते मारे विशे छे ॥१२॥ श्लोक॥ त्रिभिर्गुणमयी
र्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्॥ मोहितं नाभिजानाति मा-
मेभ्यः परमव्ययम् ॥१३॥ अर्थ॥ ए त्रणगुणमय अ-
भाव करीने आसरव जगत् मोहित थयुं छे. ते एथकी हुं वे
गळो छुं एम मने जाणतां नथी ॥१३॥ श्लोक॥ दैवीह्येषा
गुणमयी मम माया दुरत्यया॥ मामेव ये प्रपद्यंते मायामे
तां तरंति ते ॥१४॥ अर्थ॥ जे प्रपंचरूप त्रणगुणमय मा
री माया दैवी ते दुःखे करीने तरायनहीं एवी छे. तेमने पा
मे छे ते एने तरे छे ॥१४॥ नमां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यं

तेनराधमाः ॥ माययापहृतज्ञाना आसुरंभावमाश्रिताः
॥१५॥ अर्थ ॥ तेनुं ग्नानमां आवीडरीने हरायुं छे एवा पा
पी मूढ दुष्ट तुछ्य आसुरभावमां रहाछतां मारावीशे आव
तानथी· वीक्षेप अन आवरण आपेशक्ती ओइरीने शार
व अनरथनुं मूलमायाछे ॥१५॥ श्लोक ॥ चतुर्विधाभ-
जंतेमांजनाः सुकृतिनोऽर्जुन ॥ आर्तोजिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञा
नीचभरतर्षभ ॥१६॥ अर्थ ॥ हे अरजुन दुःखी अनेग
नान पामवानी इछावालो अने ज्ञानी ओ च्यार प्रकारना
पुण्यवान पुरुष मनेभजे छे ॥१६॥ श्लोक ॥ तेषांज्ञानी
नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ॥ प्रियोहिज्ञानिनोत्य
र्थमहंसचममप्रियः ॥१७॥ अर्थ ॥ तेमांग्नानी नित्य-
जुगतने एकमारीभक्तीवालो मारे ते विशेषछे· ज्ञानी

नेहुं अत्यंत प्रियछुंनेते मने प्रीयछे ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ उ-
दाराः सर्व एवैते ज्ञानीत्वात्मैव मे मतम् ॥ आस्थितः स
हियुक्तात्मा मामेवानुत्तमांगतिम् ॥ १८ ॥ अर्थ ॥ ए
शरवे मारा भगत उदार ने अलगत श्रेष्ठ छे. परंतु हुं ज्ञानीनेहुं मा
शे आतमा अेभ मानुं छूं. के भके ते माहारे विशे. एकागर चि
त्त करतो छतो सरवथकी श्रेष्ठगतीरूप मारी प्रात्तीनी अर
थे मने त्मने छे. ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ बहूनां जन्मनामंते ज्ञान
वान् मां प्रपद्यते ॥ वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदु-
र्लभः ॥ १९ ॥ अर्थ ॥ सरवने विशे वासुदेव छे अेवा ग
नाने करीने जुगत थानो थको माहात्मोने अत्यंत दुरलभ-
अेवो ज्ञानवान ते ब्हु जनम ने अंते मने पामेछे ॥ १९ ॥ ध
श्लोक ॥ कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यंतेन्यदेवताः ॥

तंतंनियममास्थायप्रकृत्या नियताःस्वया ॥ २० ॥
अर्थ ॥ जेनुगनाननानाप्रकारना मनोरथे करीने गयु छे
अेने पोताने प्रकृती अे करीने बंधाअेला अेवा ते नीयमने
आश्रीरने ते अनदेवताने पामेछे ॥ २० ॥ श्लोक ॥ योयो
यांयांतनुंभक्तःश्रद्धयार्चितमिच्छति ॥ तस्यतस्याच
लांश्रद्धांतामेवविदधाम्यहम् ॥ २१ ॥ अर्थ ॥ जे जे भगव
तशरणाअे करीने जे जे देवतानी पुजा करवाने इच्छे छे ते ते
तीशरणाने हुं अचल करुं छुं ॥ २१ ॥ श्लोक ॥ सतयाश्र-
द्धयायुक्तस्तस्याराधनमीहते ॥ लभतेचततः कामा-
न्मयैवविहितान्हितान् ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ ते ते शरणा
अे जुगतयतो ते देवतानुं आराधन करेछे ते परणामे ज
करेला प्रीतिवाला मनोरथने पामेछे ॥ २२ ॥ श्लोक ॥

अंतवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ॥ देवान् देव
यजो यांति मद्भक्ता यांति मामपि ॥ २३ ॥ अर्थ ॥ परंतु
एवा अल्पबुद्धीने अनित्य फल थायछे देवतानो भक्त
देवताने पामेछे माराभगत मने पामेछे ॥ २३ ॥ श्लोक ॥
अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यंते मामबुद्धयः ॥ परं भावम
जानंतो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥ २४ ॥ अर्थ ॥ मारा श्रे
वोत्तमने अविनाशी एवा भावने नजाणता एवा मूढ
मने नीराकार छतां साकार मानेछे ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ नाहं
प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ॥ मूढोऽयं नाभि
जानाति लोको मामजमव्ययम् ॥ २५ ॥ अर्थ ॥ हुं सरवे
अरशा परशा छुं के मने हुं जोगमाया आछेडा एलोकुं अने ज
नमभरण रहित छुं ते मने आ मूढ लोक जाणता नथी ॥

२५ ॥ श्लोक ॥ वेदाहंसमतीतानीवर्त्तमानानिचार्जुन ॥ भविष्याणिचभूतानिमांतुवेदनकश्चन ॥ २६ ॥ अर्थ ॥ हे अरजुन भूत भविष्य अने वरतमान अने शरब प्राणिमात्रने हुं जाणुं छूं परंतु मने कोए जाणतुं नथी ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ इच्छाद्वेषसमुत्थेनद्वंद्वमोहेन भारत ॥ सर्वभूतानिसंमोहंसर्गेयांतिपरंतप ॥ २७ ॥ अर्थ ॥ इच्छा अने द्वेष ए करीने उतपन थया एवा द्वंद्व मोहे करीने शरब प्राणिमात्रनी बुधी मोह पामेछे ॥ २७ ॥ श्लोक ॥ येषांत्वंतगतंपापंजनानांपुण्यकर्मणाम् ॥ तेद्वंद्वमोहनिर्मुक्ताभजंतेमांदृढव्रताः ॥ २८ ॥ अर्थ ॥ जे पुरुषोने भाग्ये करीने थतां पुरीषनुं पाप नाश पामुं छूं ते द्वंद्व मोह थकी मुक्त थता द्रढ व्रत राखीने मने भजेछे ॥ २८ ॥ श्लोक ॥ जरा

मरणमोक्षायमामाश्रित्ययतंतिये ॥ तेब्रह्मतद्विदुःकृ
त्स्नमध्यात्मंकर्मचाखिलम् ॥ २९ ॥ अर्थ ॥ जे ज्रा मर
णथकीमुक्तथवाने मारो आश्रोकरीने जतनकरेछे तेपर
ब्रह्मनेजाणेछे अनेसंपूरण अध्यातम अेटलेत्वंपदार
थजीव अनेशरवकरम अेटले तत्वपदारथना ज्ञाननेशो
धनभूतअेवोशरवस्वधरमतेनेजाणेछे ॥ २९ ॥ श्लोक ॥
साधिभूताधिदैवंमांसाधियज्ञंचयेविदुः ॥ प्रयाण
कालेपिचमांतेविदुर्युक्तचेतसः ॥ ३० ॥ इतिश्री म
द्भगवद्गी० ज्ञानविज्ञानयोगोनामसप्तमोऽध्यायः ॥
७ ॥ ॥ अर्थ ॥ अधिभूत अधिदैव अने अधियज्ञन
अेसहीतमनेजाणेछे तेजुगतचित्तवाला मरणकाले प
णमारेविशेभरणकरेछे ॥ ३० ॥ इतिश्रीभहत्न० गजानन

विग्नानयोगोनाम शप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ छ ॥
श्लोक ॥ ॥ अर्जुनउवाच ॥ ॥ किंतद्ब्रह्म किमध्या-
त्मं किं कर्म पुरुषोत्तम ॥ अधिभूतंच किं प्रोक्तमधिदैवं-
किमुच्यते ॥ १ ॥ अर्थ ॥ अरजुन पुंछे छे हे पुरुषोत्तम ब्र
ह्मते अध्यात्मते ने शुं कर्म ते शुं अधिभूत शेने कहे छे अने
अधिदैव शाने कहे छे ॥ १ ॥ श्लोक ॥ अधियज्ञं कथं को-
त्र देहेस्मिन्मधुसूदन ॥ प्रयाणकालेच कथं ज्ञेयोसि-
नियतात्मभिः ॥ २ ॥ अर्थ ॥ आ देहने विशे अधि ज्ञ गन्न
डोए ज्ञणवो अने ज्ञतचित्त पुरुषे अंतकाळने विशे तमने के
मजाणवा ॥ २ ॥ श्लोक ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ अक्ष
रं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते ॥ भूतभावोद्भवक
रो विसर्गः कर्मसंज्ञितः ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ श्रीकृष्णभगवान-

कहेछे. ते अविनाशी अने परम ते ब्रह्म जाणवुं अने अध्या
त्मते प्राणिमात्रना स्वभाव सात्विकादी अने उतपत्तिनुं का
रण जे व्यनुगत क्रियाने कर्म कहेछे ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ अ
धिभूतंक्षरोभावः पुरुषश्चाधिदैवतम् ॥ अधियज्ञोह-
मेवात्रदेहेदेहभृतांवर ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ अधिभूत एटले
नाशात्मक परा महाभूत अधि दैव एटले शरव देहमां रेहे-
नारो शरवे देवतानो आतमा हिरण्यगरभ जाणवो-अधि
यागन एटले यगनना अभिमानी विष्णु ते शरवनां देह
मां मने जाणवो ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ अंतकालेचमामेवस्मर
न्मुक्त्वाकलेवरम् ॥ यः प्रयातिसमद्भावंयातिनास्त्यत्र
संशयः ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ अंतकालने विशे मनेज संभरतो छ
तो कलेवरने छोडीने जे प्रयाण करेछे. ते निःसंशे मनेज पा

मेछे॰ ॥५॥ श्लोक ॥ यंयंवापिस्मरन्भावंत्यजत्यंतेकले
वरम् ॥ तंतमेवैतिकौंतेयसदातद्भावभावितः ॥ ६ ॥ अ
र्थ ॥ जेने भावना निरंतर होयछे तेने भावना अंतकाले था
यछे॰ अने कलेवर छोडी आपछी परिणामे ते ते रूपने पामे-
छे॰ ॥६॥ श्लोक ॥ तस्मात्सर्वेषुकालेषुमामनुस्मरयुध्य-
च ॥ मय्यार्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयः ॥७॥
अर्थ ॥ ते माटे तुं शरवकालमां मारुं स्मरण करनार मन अ-
ने बुधी मारे विशे राख एटले तुं निःसंशय मने पामीश ॥
७॥ श्लोक ॥ अभ्यासयोगयुक्तेनचेतसानान्यगामिना
॥परमंपुरुषंदिव्यंयातिपार्थानुचिंतयन् ॥ ८ ॥ अर्थ ॥
हे पुरुष अभ्यास जोग जुगत अने बीजे ठेकाणे नथी जतुं एवे
चित्ते करीने दिव्य एवा परम पुरुषने ध्यानवे छे॰ ते तेने पामेछे

॥८॥ श्लोक ॥ कविं पुराण मनुशासितार मणोर
णीयांसमनुस्मरेद्यः ॥ सर्वस्य धातार मचिंत्यरूप-
मादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ ९ ॥ प्रयाणकाले म
नसाचलेन भक्त्यायुक्तो योगबलेन चैव ॥ भ्रुवोर्मध्ये
प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥
१० ॥ अर्थ ॥ अंतकाले अचल मने करीने भगती अने
जोगबले जुगत जेवो भ्रकुटी मध्ये प्राणने राखीने जे शा
स्त्रना अंतःकरणने जाणनारा अनादी शास्त्र पदस्थने भ
णनार छे, शोभा जीणी शास्त्रना आधार रूप अचिंत्य रू
प सूरजना जेवो वरण अविद्दीयाथकी पर अेवा पुरुषनुं शा
मरण करे छे ते परम पुरुषने पामे छे ॥ १० ॥ श्लोक ॥ यद-
क्षरं वेदविदो वदंति विशंति यद्यतयो वीतरागाः ॥ यदि-

च्छंतो ब्रह्मचर्यं चरंति तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये ॥ ११ ॥
अर्थ ॥ जेने वेदवेत्ता अक्षर कहे छे. ने जेने विषे रागरहित सं
न्यास प्रवेश करे छे. जेने इच्छनारा ब्रह्मचर्यनुं धारण क
रे छे. ते पद हुं तने संक्षेपे करीने कहीश ॥ ११ ॥ श्लोक ॥
सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च ॥ मूर्ध्न्याधाया
त्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम् ॥ १२ ॥ अर्थ ॥
सर्व इंद्रियोने वश करीने हृदमां मनने रोधीने माथानो प्रा
णकपालमां राखीने जोग धारणाने विषे रहीने ॥ १२ ॥ ॥
श्लोक ॥ ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मर
न् ॥ यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥ १३ ॥
अर्थ ॥ ओ एकाक्षर ब्रह्मने उच्चारतो थको जे देहत्या
ग करे छे ते परमगतीने पामे छे ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ अनन्यचे

ताः सततंयोमांस्मरति नित्यशः ॥ तस्याहं सुलभः
पार्थ नित्ययुक्तस्ययोगिनाः ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ जेनु चि-
त्त मारे विषे छे अवा जोगी निरंतर मनेसंभारे छे· ते नि-
त्य जुगत जोगीने हुं सुलभ छूं ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ मामुपे
त्यपुनर्जन्मदुःखालयमशाश्वतम् ॥ नाप्नुवंति महा-
त्मानः संसिद्धिं परमांगताः ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ महातमा
पुरुष अेक प्रकारे परम सिधीने पाम्यायका मुजने पामीने फरी
थी दुःखाल अने नाशवान अेवा जनमने पामता नथी ॥
१५ ॥ श्लोक ॥ आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्त्तिनोर्जु
न ॥ मामुपेत्यतु कौंतेय पुनर्जन्म न विद्यते ॥ १६ ॥ अर्थ ॥
हे अरजुन ब्रह्मानां सत्यलोक पर्यंतना लोकने मांजे वसीने
जनम पामे छे· पण जे मने पामे छे तेने फरीने जनम नथी ॥ १६ ॥

॥श्लोक॥ सहस्रयुगपर्यंतमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः॥रा
त्रिंयुगसहस्रांतांतेहोरात्रविदोजनाः॥१७॥अर्थ॥
अहोरात्रने जाणनारा जन ब्रह्मानो दिवस एक ह-
जार चोकडी परबत अने ते वीज रात्रीने जाणे छे॥१७॥
श्लोक॥ अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवंत्यहरागमे॥
रात्र्यागमे प्रलीयंते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके॥१८॥अर्थ॥
ते दिवस प्राप्त थयो एटले शरव जगत नी उतपती मां आवी था
एछे अने रात्री प्राप्त थई एटले शरव मां आने विषे ली
न थाय छे॥१८॥श्लोक॥ भूतग्रामस एवायं भूत्वा भू
त्वा प्रलीयते॥ रात्र्यागमेवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे॥१९॥
अर्थ॥ ए प्राणी समुह परवश एटले आविद्या ने आ-
धीन थयो छतो ब्रह्मा ना दीवसमां उतपन थईने रात्री

तेशमेलीनथाअेछे॥१९॥श्लोक॥परस्तस्मात्तुभावोन्योव्यक्तोव्य
क्तात्सनातनः॥यःससर्वेषुभूतेषुनश्यत्सुनविनश्यति॥२०॥तेसर्वभू
तप्राणीयने विशे नाश पामतो नथी तेशनातन अेवो अने अ-
गर थकी अप्रगट अेवोनोप्यो त्यावछे ॥२०॥ श्लोक॥
अव्यक्तोक्षरइत्युक्तस्तमाहुः परमांगतिम् ॥ यंप्राप्यननि
वर्तंते तद्धाम परमं मम ॥२१॥ अर्थ ॥ जेने अप्रगट अ
ने अक्षर अेम कहे छे. तेनेज परमगती अेम कहे छे. जेने पा
मीने फरीथीं निकलवुं नथी परंतु अेवुं माहारुं श्रेष्ठ घर छे॥
२१ ॥ श्लोक॥ पुरुषःसपरः पार्थ भक्त्यालभ्यस्त्वनन्य-
या॥ यस्यांतस्थानिभूतानियेनसर्वमिदंततम् ॥२२॥
अर्थ ॥ ते परमपुरुष अनन्य भगती अे करीने पामवा जोग-
छे. प्राणीमात्र जेना अंतरमां रह्याछे अने जेने करीने आश

रव पुरार्धदर्धु छे २२॥ स्लोक ॥ यत्रकालत्वनावृत्तिंमा-
वृत्तिंचैवयोगिनाः ॥ प्रयाता यांतितं कालं वक्ष्यामिभर
तर्षभ ॥२३ ॥ अर्थ ॥ जेगीने काले गया छता आवरती
पामे छे अने जे काले गये छते आवरती पामतो नथी ते काल
हुं तने संक्षेपे कहीश ॥ २३ ॥ स्लोक ॥ अग्निर्ज्योतिरहः शु
क्लः षण्मासाउत्तरायणम् ॥ तत्रप्रयाता गच्छंति ब्र-
ह्मब्रह्मविदोजनाः ॥ २४ ॥ अर्थ ॥ आत्मने जाण नारा ज
न अग्नी ज्योति दिवश शुक्लपक्ष अने उत्तरायणना दे
वताने एम एक बीजाने पामीने तेनुं उलंघन करतो छतो
ब्रह्मने पामे छे ॥ २४ ॥ स्लोक ॥ धूमोरात्रिः स्तथाकृ-
ष्णाः षण्मासादक्षिणायनम् ॥ तत्रचांद्रमसं ज्योतिर्योगी
प्राप्यनिवर्तते ॥२५ ॥ अर्थ ॥ जेम [illegible] वालो धूम गमीन

कृष्णपक्ष, अने दक्षिणायनना देवताने पामतोथको चंद
रमानी ज्योतीने पामीने पाछो आलोकमां अवतरे छे ॥
२५ ॥ श्लोक ॥ शुक्लकृष्णेगतीह्येते जगतः शाश्वते मृ
ते ॥ एकयायात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः ॥ २६ ॥ अर्थ
॥ ए शुक्ल अने कृष्ण एवी बे गती आजगतनी कही ते
मां पेहेली गती ए पाछुं फरवुं पडतुं नथी. ने बीजी गतीए पा
छो आवेछे. ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ नैतेसृतीपार्थजानन्योगी
मुह्यतिकश्चन ॥ तस्मात्सर्वेषुकालेषुयोगयुक्तोभवार्जु
न ॥ २७ ॥ अर्थ ॥ एबेगतीजाणीने जोगी मोह पाम
तोनथी. माटे हे अरजुन तुं सरवकालजोगजुगतथा ॥ २७
॥ श्लोक ॥ वेदेषुयज्ञेषुतपस्सुचैवदानेषुयत्पुण्यफलं
प्रदिष्टम् ॥ अत्येतितत्सर्वमिदंविदित्वा योगीपरंस्थान

मुपैतिचाद्यम् ॥ २८ ॥ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गी॰ अ-
क्षरब्रह्मयोगोनाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ७ ॥ अर्थ
॥ जोगी जे जाणीने वेदजाणवुं-जगनकरवो तपकरवुं दा
नदेवुं- जे पुण्यना जेफल शास्त्रमांकहेलां छेतेफल शर
वे तुच्छकरीने परमपदने पामेछे ॥ २८ ॥ इतिश्री
मद्भगवतगी॰ अक्षरब्रह्मजोगोनाम अष्टमोऽध्या
यः ॥ ८ ॥ ७ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ इदं
तुते गुह्यतमंप्रवक्ष्याम्यनसूयवे ॥ ज्ञानंविज्ञानसहितं
यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेशुभात् ॥ १ ॥ अर्थ ॥ श्रीकृष्णभगवा
नकहेछे के अत्यंतगोप्यईरषा रहित एवातुंने अनुभ
वसाहवरतमानकहीशके जाणीने तुं संसारथी मुकाईश
॥ १ ॥ श्लोक ॥ राजविद्याराजगुह्यं [illegible]त्रमिदमुत्तमम्

प्रत्यक्षावगमंधर्म्यंसुसुखंकर्तुमव्ययम् ॥ २ ॥ अर्थ ॥
तेवीदीयाने राजनेगोप्यनो राज अने पवित्र अने उत्तम
अने प्रत्यक्ष छे अनुभवनो धरमनुगतने अविनाशी
अनेकरवामां सुघलछे ॥२॥ श्लोक ॥ अश्रद्दधानाःपुरु
षाधर्मस्यास्य परंतप ॥ अप्राप्यमांनिवर्तंते मृत्युसंसा
रवर्त्मनि ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ ए धरमउपर विश्वास न राखना
रापुरुष मनेनपामीने मृत्यु संसार मारगमांवरतेछे ॥३॥
श्लोक ॥ मयाततमिदंसर्वंजगदव्यक्तमूर्तिना ॥ मत्स्था
निसर्वभूतानिनचाहंतेष्ववस्थितः ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ मा
हारे अव्यक्त स्वरुपे करीने ए शरव जगत व्यापलुं छे · शर
व प्राणीमारे विशे रहासेछे · हुंतेने विशे नथी ॥ ४ ॥ श्लोक
॥ नचमत्स्थानिभूतानि पश्यमे योगमैश्वरम् ॥ भूतभृ

न्नच भूतस्थो ममात्माभूतभावनः ॥ ५॥ अर्थ ॥
अने ते मारे विशे नथी ए मारा अघटेशवर जोग ने जे मा
हारो आतमा प्राणी मात्रनो धारण करनार छे ने तेने
विशे आश्रित नथी तेनो वधारनार छे ॥ ५॥ श्लोक॥
यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान् ॥ तथा
सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय॥ ६॥ अर्थ ॥
जेनो शरव वीआपक मोटो वायु आकाशमां रहोछो तेम
शरव प्राणी मात्र मांहारे विशे रहांछे एम जाण ॥६॥
श्लोक ॥ सर्वभूतानि कौंतेय प्रकृतिं यांति मामिका
म्॥ कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम्॥
७॥ अर्थ ॥ हे कौंतेय कलपक्षयने विशे शरव प्राणी मा
त्र मारी प्रकृती प्रते जाए छे अने कलपना आरंभने वि

विशे तेने हूंरीथी उतपन करूंछुं ॥७॥ श्लोक ॥ प्रकृ
तिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः ॥ भूतग्राम
मिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ॥८॥ अर्थ ॥ हुं पो
तानी प्रकृतीना आश्रय करीने स्वभाव विशे करीने का
मकर्म घाधीन एवा जीवनाशमूहने वारंवार नाना प्रकारे
करीने उत्पन करूंछुं ॥८॥ श्लोक ॥ नच मां तानि कर्मा
णि निबध्नंति धनंजय ॥ उदासीनवदासीनमसक्तं
तेषु कर्मसु ॥९॥ अर्थ ॥ ते उतपत्यादिक करम मनें
बंधन करतां नथीं केमके तेहुं करमने विशे उदासीननीप
रे आशक्ती रहितछूं ॥९॥ श्लोक ॥ मयाध्यक्षेण प्र
कृतिः सूयते सचराचरम् ॥ हेतुनानेन कौंतेय जग-
द्विपरिवर्त्तते ॥१०॥ अर्थ ॥ महारी प्रेरणा एकरीने

प्रकृतीआ नड अने चैतन्य रूप आत्मा होइने उत्पन्न
करेछे॰ हे कौंतेय एहेतु एकरीने जगत जन्मेछे॰ ॥१०॥

श्लोक ॥ अवजानंति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्
॥ परंभावमजानंतो मम भूतमहेश्वरम् ॥ ११ अर्थ
॥ मूरख न माहरुं परतत्त्व जाणीने माणोमाअनो म-
हेश्वर एवो जे हुं मनुष्य देह शरीरछुं तेनी जे अवगण-
ना करेछे॰ ॥११॥ श्लोक ॥ मोघाशा मोघकर्माणो मो-
घज्ञाना विज्ञानानिचेतसः ॥ राक्षसीमासुरीं चैव प्र-
कृतीं मोहिनीं सृताः ॥ १२ ॥ अर्थ ॥ ते राक्षसी अ-
ने आशुरी एटले रज तम मय एवी मोहकरता प्रकृती
नो आश्रयकरतां छतां नीरफलने नी आशाले निर-
फलने नाकरम एवा जनान निवेक हीनछे ॥१२॥ श्लोक ॥

माहात्मानंतुमांपार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः ॥ भज
त्यनन्यमनसोज्ञात्वाभूतादिमव्ययम् ॥ १३ ॥ अर्थ
॥ माहातमातो दैवीं एटले शातव प्रधान एवी प्रकृति
ने आश्रितछतां आदि अने अवीनाशी एम मने जाणी
ने एकाग्र चित्ते लजे छे ॥१३ ॥ श्लोक ॥ सततंकीर्तयं
तोमांयतंतश्चदृढव्रताः ॥ नमस्यंतश्चमांभक्त्या नि
त्ययुक्ताउपासते ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ कांई नित्य शावधान
एवा दृढ व्रत धारण करीने जतन करतां छतां निरंतर की
रतन पूजनसंस्कारादि द्वारा लक्ति ये करीने मने उपासे छे
॥ १४ ॥ श्लोक ॥ ज्ञानयज्ञेनचाप्यन्ये यजंतोमामुपा
सते ॥ एकत्वेनपृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम् ॥
१५ ॥ अर्थ ॥ केटला एक गनानमय जज्ञे करीने जतनकर

तांछतां मनेउपासेछे तेम केटला एकता एकरीने नो
आपणे करीने बहु प्रकारे करीने चारे कोरे मुखछे-ए
वा मने उपासेछे ॥१५॥ श्लोक ॥ अहंक्रतुरहंयज्ञः
स्वधाहमहमौषधम् ॥ मन्त्रोहमहमेवाज्यमहम-
ग्निरहंहुतम् ॥१६॥ अर्थ ॥ देवता ध्यानरूप संक-
ल्प तेहुं जगन एटले वेदनी शास्त्ररीते एकरीने देवता
नेउदेशीने द्रव्यत्यागतेहुं मनुशानुं अंनतेहुं मंत्रतेहुं
घततेहुं अगनीहुं होमवानी वेशाख्यी तेहुं ॥१६॥
श्लोक ॥ पितामहस्यजगतो माता धाता पितामहः
॥ वेद्यंपवित्रमोंकार ऋक्सामयजुरेवच ॥ १७॥ अ
र्थ ॥ आजगतनो पितातेहुं माताहुं जगतनो धारणक
रनारहुं जगतनो पितामह तेहुं वेदतेहुं पवित्र तेहुं ओं-

डरतेहुं रघुर्वेद यजुरवेदनेशामवेदतेहुं छुं ॥१७॥ श्लोक
॥ गतिर्भर्त्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणंसुहृत् ॥ प्रभ
वः प्रलयस्थानं निधानंबीजमव्ययम् ॥१८॥ अर्थ॥
आजगतनी गती तेहुं आजगतनु घणी तेहुं आजगत
नो प्रभु तेहुं आजगतनो साक्षी तेहुं आजगतनो निवा
शतेहुं आजगतनुं शरण तेहुं अने आजगतनो मित्र
तेहुं आजगतनुं उतपतिनुं स्थानने लय तेहुं निधान
ने अव्ययबीज तेहुं ॥१८॥ श्लोक ॥ तपाम्यहमहं
वर्षं निगृण्हाम्युत्सृजामिच ॥ अमृतंचैवमृत्युश्चसस
दसच्चाहमर्जुन ॥ १९ ॥ अर्थ ॥ सूरजरूपे करीने तपा
पतेहुं वरशात तेहुंतेनोप्रतिबंधकतेहुं अने उतसरजनतेहुं तेहुं छुं
जीवन अने मृत्यु तेहुं शात्य अनेअसत्य तेहुं ॥१९॥

॥श्लोक॥ त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैरि-
ष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयंते ॥ ते पुण्यमासाद्य सूरेंद्रलोक
मश्नंति दिव्यान्दिवि देवभोगान् ॥२०॥ अर्थ ॥ वेद
ત્રય જાણનારા અને શોમપાન કરનારા પાપરહીત થ
તાં છતાં જગને જગન કરીને મારી પાશે સ્વરગગતી માગે
છે. તે પવિત્ર એવા ઈંદ્રલોક પામીને સ્વરગલોકને વિશે
દિવ્ય દેવતાના ભોગ ભોગવે છે ॥૨૦॥ ॥श्लोक॥ ते तं
भूक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोके वि
शांति ॥ एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा
लभंते ॥२१॥ अर्थ ॥ તે તે વિશાલ સ્વરગ લોકને ભો
ગવીને પુણ્યનો ક્ષય થયો એટલે કરીને મૃત્યુલોકમાં
આવે છે. એ પ્રકારે વિશ્વ ઈચ્છા કરનારા પુરૂષ વેદમાં

मांडह्यो एवो आधरम एटले कामनाना जगनने अनुश
रेछे.तेने जनम मरण थायछे.॥ २१ ॥ श्लोक॥ अनन्या-
श्चिंतयंतो मां ये जनाः पर्युपासते ॥ तेषां नित्याभियुक्ता
नां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ जे अनन्यप
णे चिंतन करतां छतां मने उपासे छे तेनी जगतीना निरवा
ह ने हुं पुरं करुं छुं ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ येऽप्यन्यदेवता भ-
क्ता यजंते श्रद्धयान्विताः ॥ तेपि मामेव कौंतेय यजंत्य
विधिपूर्वकम् ॥ २३ ॥ अर्थ ॥ जे अन्य देवतानी शरधा
एकरीने शेवा करेछे. तेने ते मां मारीज शेवा थायछे पण
ते कंई विधीपूर्वक नथी॥२३ ॥ श्लोक॥ अहंहि सर्वयज्ञा
नां भोक्ता च प्रभुरेव च॥ नतु मामभिजानंति तत्वेनात
श्च्यवंतिते॥ २४ ॥ अर्थ ॥ हुं ज शरव जगतनो भोक्ता

अने फलदाता छुं. मनुष्य मुने यथार्थ जाणता नथी. वा
स्ते भ्रष्ट थाय छे ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ यांति देवव्रता देवा
न् पितॄन्यांति पितृव्रताः ॥ भूतानि यांति भूतेज्या यांति
मद्याजिनोपि माम् ॥ २५ ॥ अर्थ ॥ देवव्रत एटले इंद्रादी
देवनुं पूजन करी देवताने पामे छे. ने पित्रना पुजथी पित्रने
पामे छे. पिशाचना पूजथी पिशाचने पामे छे. ने मारी सेवा
करनारा मने पामे छे. ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ पत्रं पुष्पं फलं तो-
यं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ॥ तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि
प्रयतात्मनः ॥ २६ ॥ अर्थ ॥ जे कोइ मारा भगत मने पत्र
पुष्प फल जल भगती पुर्वक अरपण करे छे. तेनुं ते भगतीथी
अरपेलुं हुं अंगिकार करुं छुं. ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ यत्करोषि
यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् ॥ यत्तपस्यसि कौं

तेय तत्कुरुष्वमदर्पणम् ॥२७॥ अर्थ ॥ हे अरजुन तुं
जे कांई करछे खायछे होमेछे दान करेछे तप करेछे ते शर
वे मने अरपण कर ॥२७॥ श्लोक ॥ शुभाशुभफलैरेवं
मोक्षसे कर्मबंधनैः ॥ संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो
मामुपैष्यसि ॥२८॥ अर्थ ॥ एटले सारा नरसा फल
देनारा एवां करमे करीने मुकतथा ईश अने शन्यास जोग
ने विशे एकाग्र चित्त करतो छतो मने पामीश ॥२८॥ ए
श्लोक ॥ समोहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योस्ति न प्रियः ॥
ये भजंति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम् ॥२९॥ अ
र्थ ॥ हुं शरव प्राणीमां शमान छुं मने कोई द्वेष करवा जो
ग नथी नेहेत करवाने जोग नथी पण जेम मने लगती पुर
वक लजेछे ते मारे विशे छे अने हुं तेने विशे छुं ॥२९॥ ॥

श्लोक ॥ अपिचेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् ॥
साधुरेव स मंतव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥ ३० ॥ अ
र्थ ॥ कोई केटलोक दुराचारी होयने जे मने अनन्यभावे
करीने भजे तो ते शारो जन मानवो निश्चय उत्तम प्रकार
नो छे ते भजनारवो ॥ ३० ॥ श्लोक ॥ क्षिप्रं भवति धर्मात्मा
शश्वच्छांतिं निगच्छति ॥ कौंतेय प्रतिजानीहि न मे भ
क्तः प्रणश्यति ॥ ३१ ॥ अर्थ ॥ ते उतावळो धरमात्मा
थाय छे ने निरंतर शांतीने पामे छे हे कौंतेय तूं पण जाणजे
मारो भगत छे ते नाश पामतो नथी ॥ ३१ ॥ श्लोक ॥ मां हि
पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः ॥ स्त्रियो वै
श्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यांति परां गतिम् ॥ ३२ ॥ अर्थ ॥
हे नीच जाती स्त्री वैश्य अने शूद्र ते मारा आश्रयथी

परमगतीने पाम्योछे॰॥३२॥श्लोक॥ किंपुनर्ब्राह्म
णाः पुण्याभक्ताराजर्षयस्तथा॥ अनित्यमसुखंलो
कमिमंप्राप्यभजस्वमाम्॥३३॥अर्थ॥पछे भग
त अने पवित्र एवा ब्राह्मण अने राजरषी पामे एमां
शुंकेवुं आ लोक अनित्यने असुखछे॰एवो विचार करीने
मने भज॥३३॥ मन्मनाभवमद्भक्तोमद्याजीमांनम
स्कुरु॥मामेवैश्यसियुक्त्वैवमात्मानंमत्परायणः॥
॥३४॥ इतिश्रीमद्भगवद्गी॰राजविद्याराजगुह्ययो
गोनामनवमोऽध्यायः॥९॥ छ ॥मारे विशे चित्त॰
राखीने मारो भगत छतो मारे प्रीतिने अरथे यजन करनारो
था अने मने नमसकारकर एवे जोगे करीने परायण थतो
छतो॰अंते मने पामसे॥३४॥ इतिश्री भगवतगीता

राज विद्या राज गुह्य न्योगो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥
श्लोक ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ भूय एव महाबाहो
शृणु मे परमं वचः ॥ यत्तेहं प्रियमाणाय वक्ष्यामि हित
काम्यया ॥ १ ॥ अर्थ ॥ श्री कृष्ण कहे छे हे माहाबाहो व
ळी मारुं उत्तम वचन सांभळ प्रीती युगत अवो तने तार
हित हे अरथे कहीश ॥ १ ॥ श्लोक ॥ नमे विदुः सुरगणाः
प्रभवं नमहर्षयः ॥ अहमादिर्हि देवानां महर्षीणांच्च स
र्वशः ॥ २ ॥ अर्थ ॥ सुरगणने महर्षी माहारी ईश्वरता
ने न्नणता नथी कारणके हुं सरव देवता मोटा रूषीनो आदी
छुं ॥ २ ॥ श्लोक ॥ योमामजनादिंच वेत्ति लोकमहेश्वर
म् ॥ असंमूढः समर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ३ ॥ अर्थ
॥ सरव लोकनो महेश्वर छुं अने कारण छूं ने कारण रहित

छुं एटले जनम रहित छुं एमजे पुरुष मने जाणे छे ते जन-
मनुष मां ज्ञानता ते सर्व पापथकी मुकत थाय छे ॥ ३ ॥
श्लोक ॥ बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमासत्यंदमःशमः ॥ सु
खंदुःखंभवोभावोभयंचाभयमेवच ॥ ४ ॥ अर्थ ॥
बुधी ज्ञान अने मोह क्षमा सत्य दम शम सुख दुःख उत
पत्ति शता भय अभय ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ अहिंसासमता
तुष्टिस्तपोदानंयशोयशः ॥ भवंतिभावाभूतानां मत्त
एवपृथग्विधाः ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ अहिंसा समता संतोष
तप दम जश अपजश एवा नाना प्रकारना मनना भाव जी
वने माहारा थकी थाय छे ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ महर्षयः स-
प्तपूर्वेचत्वारोमनवस्तथा ॥ मद्भावामानसाजाता ये-
षांलोकइमाः प्रजाः ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ जुना सरगुण्या-

दी स्वर्थने शपतरूपी अने शनक शनंदन शनातन सनतकुमा
रूएयार महारूपी अने स्वायंभुवादिक चार मनवंतर ए शार
व मारा मनथकी थया ते थकी लोक अने आ स्थावर जंगमा
दि प्रजाउत्पन्न थईछे ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ मच्चित्ता मद्गतप्रा
णा बोधयंतः परस्परम् ॥ कथयंतश्च मां नित्यं तुष्यंति
च रमंति च ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ जेनुं चित्त मारे विशेछे जेना प्रा
ण मारे विशेछे एवा जे लगत परस्पर बोध करतां छतां
अने मारी कथा नित्य करतां छतां पोत पोतामा संतोष
पामेछे अने रमेछे ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ तेषां सततयुक्तानां
भजतां प्रीतिपूर्वकम् ॥ ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुप
यांति ते ॥ १० ॥ अर्थ ॥ जे मारी सेवा निरंतर करेछे तेने हुं
प्रीतिपूर्वक बुद्धियोग आपुंछुं जेणे करीने ते मने पामेछे ॥

॥१०॥ श्लोक ॥ तेषामेवानुकंपार्थमहमज्ञानजंतम ॥
नाशयाम्यात्मभावस्थोज्ञानदीपेन भास्वता ॥ ११ ॥ अ
र्थ ॥ અને કૃપાલુ પણે આત્મભાવને વિશે રહ્યો એવો જ્ઞા
નરૂપ દિવો એ કરીને તેના અજ્ઞાનરૂપ અંધકારનો નાશ કરૂં
છું ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ अर्जुनउवाच ॥ ॥ परंब्रह्म परंधाम
पवित्रंपरमभवान् ॥ पुरुषंशाश्वतंदिव्यंमादिदेवमजं
विभुम् ॥ १२ ॥ अर्थ ॥ અરજુન પૂંછે છે- તમે પરમ બ્રહ્મ પ
રમ ધામને પરમ પવિત્ર છો- સરવ ઋષી દેવ ઋષી નારદ અશી
ત દેવલ વ્યાસ એ તમને આદિદેવ જનમ રહિત વ્યાપક દિવ્ય
અને શાશ્વત પુરૂષ એમ કહે છે ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ आहुस्त्वा
मृषयः सर्वेदेवर्षिर्नारदस्तथा ॥ असितोदेवलोव्यासः
स्वयंचैवब्रवीषिमे ॥ १३ ॥ सर्वमेतदृतंमन्येयन्मांवदसि

केशव ॥ नहितेभगवन्व्यक्तिं विदुर्देवानदानवाः ॥ १४
॥ अर्थ ॥ तमे पणमने तेमज कोहोछो · हे केशव एसर्व
वरे मारे सत्यच कोहोछो ते हुं शत्य मानुं छुं तमारी प्रगटवे देव
जणता नथी ने दानव पण जणता नथी ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ स्व
यमेवात्मनात्मानं वेत्थत्वं पुरुषोत्तम ॥ भूतभावन भूतेश
देवदेव जगत्पते ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ हे प्राणीना उतपन्न क
रनार हे ईश हे देव हे जगतपती तमे पोतेज पोताने जाणोछो
॥ १५ ॥ श्लोक ॥ वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूत
यः ॥ याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठति ॥
१६ ॥ अर्थ ॥ जेवी स्तुती ए करीने तमे आलोकने व्यापीने
रहोछो ते तमारी दिव्य विभूतीश भगर केवाने तमेज जोग्यछो
॥ १६ ॥ श्लोक ॥ कथं विद्यामहं योगी स्त्वां सदापरिचिं·

तयन् ॥ केषुकेषुच भावेषु चिंत्योऽसि भगवन्मया ॥१७॥
अर्थ ॥ जे जोगी हुं तमारुं निरंतर चिंतन करतो छतो - तमने
केम जाणुं अने आपघरथमां माहरे तमारुं चिंतवन क-
रवुं ॥१७॥ श्लोक ॥ विस्तरेणात्मनोयोगं विभूतिंच ज-
नार्दन ॥ भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम्
॥ १८ ॥ अर्थ ॥ तमे पोतानो जोग अने विभूति विस्तारे
करीने फरीथी कहो जे तुमारा वचन अमृतने वाने शांभली
ने मने अघापि तृपती थती नथी ॥१८॥ श्लोक ॥ श्रीभग
वानुवाच ॥ ॥ हंत ते कथयिष्यामि दिव्याह्यात्मविभूतयः
॥ प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यंतो विस्तरस्य मे ॥१९॥ अ
र्थ ॥ श्रीकृष्ण कहे छे - हे कुरुश्रेष्ठ दिव्य एवी मारी विभूती
मुख्यत्वे करीने हुं तने कहीश मारी विभूतीना विस्तारनो अं

तनथी ॥ १९ ॥ श्लोक ॥ अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूता
शयस्थितः ॥ अहमादिश्च मध्यं च भूतानामंत एव च ॥
२० ॥ अर्थ ॥ सरवभूतना हृदेने विशे रह्यो आतमा ते हुं प्रा
णीमात्रनी उतपत्ती स्थितीने नाशनुं कारण हुं छुं ॥ २० ॥
श्लोक ॥ आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान्
॥ मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशि ॥ २१ ॥ अर्थ
॥ सुरज मांथी विस्नुनामे सुरज हुं छुं ज्योती मां अंशुमा
न रवि हुं छुं वाउमा मरीचीनामे वाउ हुं छुं नक्षत्र मध्ये चंद्र
मां हुं छुं ॥ २१ ॥ श्लोक ॥ वेदानां सामवेदोस्मि देवानाम
स्मि वासवः ॥ इंद्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेत
ना ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ वेदमां सामवेद हुं छुं देवमां इंद्र हुं छुं इं
द्रियो मां मन हुं छुं प्राणी मां चेतना हुं छुं ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ रु

द्राणांशंकरश्चास्मि वित्तेशोयक्षराक्षसाम् ॥ वसूनांपा
वकश्चास्मिमेरुः शिखरिणामहम् ॥ २३ ॥ अर्थ ॥ रु
द्रमांशंकरहुंछुं अनेयक्षराक्षसमां कुबेरहुंछुं वसूमां पाव
कहुंछूं पर्वतमां मेरुहुंछुं ॥ २३ ॥ श्लोक ॥ पुरोधसांचमु
ख्यंमां विद्धिपार्थबृहस्पतिम् ॥ सेनानीनामहंस्कंदः सर
सामस्मिसागरः ॥ २४ ॥ अर्थ ॥ गोरमां मुख्यगोर बृह
स्पती मनेसेनापतीमां स्वामी कारतिक हुंछूं अनेजला
शयमांसागरहुंछुं ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ महर्षीणांभृगुरहंगि
रामस्म्येकमक्षरम् ॥ यज्ञानांजपयज्ञोस्मिस्थावराणां
हिमालयः ॥ २५ ॥ महाऋषीमां भृगु हुंछूं वाणीमां एका
क्षर ओंकारहुंछुं यज्ञमां जपयज्ञ हुंछूं स्थावरमां हीमा
लय हुंछुं ॥ २५ ॥ अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणांचना

रदः ॥ गंधर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलोमुनिः ॥
॥ २६ ॥ अर्थ ॥ सरवकडाडमां पीपलो हुं छूं देवरीषीमां
नारद हुं छुं गंधरवमां चित्ररथ हुं छुं सिद्धमां कपिल मुनी-
हुं छुं ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माम-
मृतोद्भवम् ॥ ऐरावतं गजेंद्राणां नराणां च नराधिपम् २७
॥ अर्थ ॥ घोडामां अमृतथकीथयो एवो उच्चैःश्रवा म
नेजाण गजेंद्रमां ऐरावतने मनुष्यमां राजा मने जाण ॥
२७ ॥ श्लोक ॥ आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि काम
धुक् ॥ प्रजनश्चास्मि कंदर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः ॥
२८ ॥ अर्थ ॥ आयुधमां वज्र अने गायमां कामधेनु हुं
छुं ने उतपती करवामां एवाने कामते हुं छूं शरपमां वासुकी-
हुं छुं ॥ २८ ॥ श्लोक ॥ अनंतश्चास्मि नागानां वरुणोया

दसाम्यहम् ॥ पितृणामर्यमाचास्मियमः संयमताम
हम् ॥ २९ ॥ अर्थ ॥ नागमांशेशहुंछुं जलमां रेहवाला-
ञ्वीमां वरुणतेहुंछुं पितरमां अर्यमाहुंछुं ने दंडक
नार मां यमतेहुंछुं ॥ २९ ॥ श्लोक ॥ प्रल्हादश्चास्मिदै-
त्यानांकालःकलयतामहम् ॥ मृगाणांचमृगेंद्रोहंवैनते
यश्चपक्षिणाम् ॥ ३० ॥ अर्थ ॥ दैत्यमां प्रल्हाद हुंछुं नया
करवामांकालतेहुंछुं पशुमांसिंहतेहुंछुं पक्षिमांगरुड मने
जाण ॥ ३० ॥ श्लोक ॥ पवनःपवतामस्मिरामःशस्त्र
भृतामहम् ॥ झषाणांमकरश्चास्मिस्त्रोतसामस्मिजा
न्हवी ॥ ३१ ॥ अर्थ ॥ वेगवानमां वायुछुं शस्त्रधारीमां
रामचंद्रतेहुंछुं मांछलां आदीजळचरने जलना जळचर
मां मगरतेहुंछुं नदीमांगंगाहुंछुं ॥ ३१ ॥ श्लोक ॥ सर्गा

णामादिरंतश्चमध्यन्चैवाहमर्जुन ॥ अध्यात्मविद्यावि
द्यानांवादःप्रवदतामहम् ॥ ३२ ॥ अर्थ ॥ सर्ष्टीना आ
दिमध्यने अंतनेहुंछुं विद्यायामां अध्यात्मविद्या हुंछुं
अने बोलवाना वादते हुंछुं ॥ ३२ ॥ श्लोक ॥ अक्षरा
णामकारोस्मिद्वंद्वःसामासिकस्यच ॥ अहमेवाक्षयः
कालोधाताहंविश्वतोमुखः ॥ ३३ ॥ अर्थ ॥ अक्षरमा
अकारहुंछुं समाशशामुदरमा द्वंद्व तेहुं अने अविनाशी
कालतेहुं तेमन धाता केटले करमनाफलनो देनार हुं विश्व
तो मुखछे ॥ श्लोक ॥ मृत्युःसर्वहरश्चाहमुद्भवश्चभ
विष्यताम् ॥ कीर्तिःश्रीर्वाक्चनारीणांस्मृतिर्मेधाधृतिः
क्षमा ॥ ३४ ॥ अर्थ ॥ सरव हरण करनार मृत्यु हुंछुं आ
गलथानार मांउतपती हुंछुं स्त्रीमां कीर्ति, लक्ष्मीसरस्व

वी स्मृती बुध्धी अने क्षमा ते हुं छुं ॥ ३४ ॥ श्लोक ॥ बृहत्सा
मतथा साम्नां गायत्री छंदसामहम् ॥ मासानां मार्गशी
र्षोहमृतूनां कुसुमाकरः ॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ सामवेदमां
बृहत्साम ते हुं छुं छंदमां गायत्री ते हुं छुं मासमां मारगशीर
ते हुं छुं अने ऋतुमां वसंत ते हुं छुं ॥ ३५ ॥ श्लोक ॥ द्यूतं छ
लयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥ जयोस्मि व्यवसा-
योस्मि सत्वं सत्ववतामहम् ॥ ३६ ॥ कपटमां जुगार ते-
हुं छुं तेजस्विमां तेज ते हुं छुं जय व्यवसायने शातवीकमां स-
त्व ते हुं छुं ॥ ३६ ॥ श्लोक ॥ वृष्णीनां वासुदेवोस्मि पांड
वानां धनंजयः ॥ मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना
कविः ॥ ३७ ॥ अर्थ ॥ जादवमां वासुदेव हुं छुं पांडवमां अ
रजुन हुं छुं मुनीमां व्यास हुं छुं कवीमां शुक्राचार्य हुं छुं.

दमनकरतांमांदंड हुंछुं॰ अर्थमुक्तजाशमां नीति हुंछुं छानाप
दारथमांमौन्य हुंछुं ज्ञानवानमांज्ञानते हुंछुं ॥ ३८ ॥ श्लो
क ॥ दंडोदमयितामस्मिनीतिरस्मिजिगीषताम् ॥ मौनं
चैवास्मिगुह्यानांज्ञानंज्ञानवतामहम् ॥ ३८ ॥ यच्चा
पिसर्वभूतानांबीजंतदहमर्जुन ॥ नतदस्तिविनायत्स्या
न्मयाभूतंचराचरम् ॥ ३९ ॥ अर्थ ॥ हे अरजुन सरव॰
प्राणीमात्रनुं बीज हुंछुं मारा विना अथवा प्राणी नथी॰
॥ ३९ ॥ श्लोक ॥ नांतोस्तिममदिव्यानां विभूतीनां परं
तप ॥ एषतूद्देशतःप्रोक्तोविभूतेर्विस्तरोमया ॥ ४० ॥
अर्थ ॥ मारी दिव्य विभूतीनो अंतनथी॰ मारी विभूती॰
नो विस्तारमें एकदेशे करीने कह्यो छे॰ ॥ ४० ॥ श्लोक ॥
यद्यद्विभूतिमत्सत्वंश्रीमदूर्जितमेववा ॥ तत्तदेवाव

गच्छत्वंममतेजोंशसंभवम् ॥ ४१ ॥ अर्थ ॥ हे हे ऐ-
श्वर्ययुक्त श्रीमान आने बलयुक्त तेने मारा अं
शथकी थयुं एम जाण ॥ ४१ ॥ श्लोक ॥ अथवाबहुनैतेन
किंज्ञातेनतवार्जुन ॥ विष्टभ्याहमिदंकृत्स्नमेकांशेन
स्थितोजगत् ॥ ४२ ॥ ॥ इतिश्रीमद्भग० विभूतियोगो
नामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ हे अर
जुन तने बहुत ज्ञान करेथी शुं एक अंशे करीने आ जगतने
व्यापीने रह्यो छुं ॥ ४२ ॥ इतिश्री मद्भगव० विभूतियोगो
नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ अर्जुन
उवाच ॥ ॥ मदनुग्रहायपरमंगुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् ॥
यत्त्वयोक्तंवचस्तेनमोहोयंविगतोमम ॥ १ ॥ अर्थ ॥
अर्जुन पुछे छे मारा अनुग्रहने अर्थे परम गुह्य एवा

अध्यात्मवचन कह्यां तेणे करीने मारो मोह गयो॰ ॥१॥
श्लोक ॥ भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया ॥
त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम् ॥ २ ॥ अर्थ
॥ हे कमलपत्राक्ष तमारा थकी प्राणीनी सृष्टी संहार ते वि
स्तारे करीने सांभल्यो तमारुं अविनाशी एवुं महा-
तम पण में सांभल्यो ॥ २ ॥ श्लोक ॥ एवमेतद्यथात्थ त्वमा
त्मानं परमेश्वरम् ॥ द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्त
म ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ हे परमेश्वर तमे जेम पोतानुं रुप कह्युं छो
ते सत्य छे हे पुरुषोत्तम मारे तो ईश्वर रुप जोवाने इच्छुं छुं
॥ ३ ॥ श्लोक ॥ मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्र-
भो ॥ योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम् ॥ ४ ॥ अर्थ
मारे ते रुप जोवाने समर्थ छुं तो तमारुं अविनाशी रु

पमनेदेष्याडो ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ प
श्यमेपार्थरूपाणिशतशोथसहस्त्रशः ॥ नानाविधानि
दिव्यानिनानावर्णाकृतीनिच ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ श्रीकृष्ण क
हेछे हे पारथ शंकडोने हजारा नाना प्रकारना दिव्य अेवाने
नानाप्रकारनावरणनें आकरती वालां अेवां म्हारा रुपछे.
॥ ५ ॥ श्लोक ॥ पश्यादित्यान्वसून्रुद्रान्श्विनौमरु
तस्तथा बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत ॥ ६ ॥
अर्थ ॥ आदित्य वसु रुद्र अश्विनी कुमार वायु अेमनेजे
आगळ जोयथीजे यांनहोय तेजेते रुप आश्चर्य मयछे ॥ ६ ॥
॥ श्लोक ॥ इहैकस्थंजगत्कृत्स्नंपश्याद्यसचराचरम् ॥
ममदेहेगुडाकेशयच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि ॥ ७ ॥ अर्थ ॥
हे अरजुन आमारा देहमां सरव स्थावर जंगम रुप जग-

तते एक मारा अव्ययमांने न ते विना बीजानुं हे जेवाने-
ईच्छे ते शरवे ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव
स्वचक्षुषा ॥ दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्
॥ ८ ॥ अर्थ ॥ परंतु तारा आ चर्म चक्षु एवा रुपने जोवाने-
शामर्थ नथी माटे हुं तने आ दिव्य चक्षु आपुं छुं तेणे करीने
आ मारं ऐश्वर्य जोग तुं जो ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ संजय उवा-
च ॥ एवमुक्त्वा ततो राजन् महायोगेश्वरो हरिः ॥ दर्शया
मास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम् ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ संजय के
हे छे हे धृतराष्ट्र एम कहीने महायोगेश्वर एवा श्रीकृष्ण ते
अरजुनने विश्वरूप देखाडता हवा ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ अनेक
वक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ॥ अनेकदिव्याभरणं दि
व्यानेकोद्यतायुधम् ॥ १० ॥ अर्थ ॥ [illegible] रुपने विशे अनेक

मुष अनेक नेत्रने अद्भुत दरशन दिव्य घरेणां अने दि-
व्य उंचां आयुध ॥ १० ॥ श्लोक ॥ दिव्यमाल्यांबरधरं दि
व्यगंधानुलेपनम् ॥ सर्वाश्चर्यमयं देवमनंतं विश्वतोमु
खम् ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ ते रूप दिव्य फुलने दिव्य वस्त्र जेणे क
रीने घणुं शोभावालुं अने दिव्य चंदने करीने चरचित अ-
ने शरव आश्चरज मयने दिव्य अनंत मुखारे मुष छे जेवुं
॥ ११ ॥ श्लोक ॥ दिविसूर्यसहस्रस्य भवेद्युगप दुत्थि
ताः ॥ यादिभाः सदृशीसा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः
॥ १२ ॥ अर्थ ॥ जेम आकाशने विषे हजारो सुरजनी कांती
सामटी प्रगटे तेवी आपमाने घटे एवुं ए महात्मानुं रूप
॥ १२ ॥ श्लोक ॥ तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेक
धा ॥ अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पांडवस्तदा ॥ १३ ॥ अ-

र्थ ॥ अने देव देवेशना शरीर माते शमने अनेक प्रकारे वहे
चायेलुं शरव जगत तेहने अरजुन जोतो हवो ॥ १३ ॥ श्लो
क ॥ ततः सविस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनंजयः ॥ प्रणम्य
शिरसा देवं कृतांजलिरभाषत ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ तार प
छी ते अरजुन विशम्य पामीने रुवाडां उभां थएलो श्रीह
र्णने माथुं नमावीने हाथ जोडीने लय पामतो थको गदगद
कंठे बोलतो हवो ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ अर्जुन उवाच ॥ पश्या
मि देवांस्तव देव देहे सर्वांस्तथा भूतविशेषसंघान् ॥ ब्र
ह्माणमीशं कमलासनस्थमृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्या
न् ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ अरजुन कहे छे हे देव तमारा देहने विषे दे
वताने शरव प्राणीमात्र अने कमलासन मांहे बेठा ब्रह्मा
माहादेवजी अने शरव रुषीने दिव्य [illegible] सर्पनी योनुं जोउं छु

ऊं॥१५ ॥ श्लोक ॥ अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रंपश्यामि
त्वांसर्वतोऽनंतरूपम् ॥ नांतंनमध्यंनपुनस्तवादिंप-
श्यामि विश्वेश्वरविश्वरूपम् ॥ १६ ॥ अर्थ ॥ तमने हुं
सरवे ठेकाणे अनंत रूपने अनेक बाहु अनेक उदर अनेक आं
ख अनेक मुख एने करीने युक्त जोउं छुं पण तमारी आदि-
अंतने मध्य ए पातुं नथी. हे विश्वनाथ सरव रूपे विश्वरूपछ
॥ श्लोक ॥ किरीटिनंगदिनंचक्रिणंचतेजोराशिंसर्वतो-
दीप्तिमंतम् ॥ पश्यामित्वांदुर्निरीक्ष्यंसमंताद्दीप्तानल
र्कद्युतिमप्रमेयम् ॥१७॥ अर्थ ॥ तमने किरीटगदाचक्र
धारी अने तेजनासमूहने सरव ठेकाणे देदीप्यमान अने
दुःखे करीने जोवाय नहीं एवा ने घणो दीपो अगनीने सुरज
तेनी कांतीनी प्रसार कांतीने प्रमाणनहीं एवा तमने जोउं

छे ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य वि
श्वस्य परं निधानम् ॥ त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सना
तनस्त्वं पुरुषो मतो मे ॥ १८ ॥ अर्थ ॥ जाणवा जोग एवा प
रम अक्षर तमे छो आ विश्वनुं परम निधान तमे छो अने शा
श्वत धरमना रक्षक तमे छो तमने पवित्र नेनछे घटता एवा
पुरुष मानुं छुं ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ अनादिमध्यांतमनंतवी
र्यमनंतबाहुं शशिसूर्यनेत्रम् ॥ पश्यामि त्वां दीप्तहुता
शवक्त्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपंतम् ॥ १९ ॥ अर्थ ॥ आ
दि मध्यांत रहित अनंत पराक्रमी अनंत हाथने चंद्रमाने सू
रज नेत्र छे जेना ने घणा दीपता अगनीना जेवां मुख एवा
ने पोताना तेजे करीने आ विश्वने प्रकाश करता थका एवा
तमने जोउं छुं ॥ १९ ॥ श्लोक ॥ द्यावापृथिव्योरिदमंतरं

हिव्यासंत्वयैकेन दिशश्चसर्वाः ॥ दृष्ट्वाद्भुतंरूपमुग्रंत
वेदंलोकत्रयंप्रव्यथितंमहात्मन् ॥ २०॥ अर्थ ॥ शरव
पृथ्वीनुं मध्यने शरव दिशा तमारे अेटले करीने पुराअेली
छे हे महात्मा आअदभूतने उग्रअेवुं तमारो रूपजोईने घणा
लोक अत्यंत पीडा पामेछे ॥२० ॥ श्लोक ॥ अमीहित्वां
सूरसंघाविशंति केचिद्भीताः प्रांजलयोगृणंति ॥ स्व
स्तीत्युक्त्वामहर्षिसिद्धसंघाः स्तुवंतित्वांस्तुतिभिःपु
ष्कलाभिः ॥२१॥ अर्थ ॥ आदेवतानाशमूह तमारे वि
शे मेछे केटलाअेकलय अे करीने मुजा आ अेवातमारीस्तुती
करेछे महारीषीने सिद्धनाशमूहस्वास्ति अेमकहीने पुष्पु
लस्तुतिकरेछे ॥२१॥ श्लोक ॥ रुद्रादित्यावसवोयेच
साध्याविश्वेश्वीनौमरुतश्चोष्मपाश्च ॥गंधर्वयक्षाः

सुरसीरसंघावीक्षंतेत्वां विस्मिताश्चैवसर्वे ॥ २२ ॥
अर्थ ॥ रुद्रगण आदित्यगण वसु साध्यगण विश्व-
अश्विनीकुमार मरुतगण उष्मपा गंधर्वगण नक्षत्र देवता
अने सिधनासमूह विस्मय पामतां छतां सरव तमने जुं-
धेछे ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ रूपंमहत्तेबहुवक्त्रनेत्रंमहाबा
होबहुबाहूरुपादम् ॥ बहूदरंबहूदंष्ट्राकरालंदृष्ट्वा-
लोकाःप्रव्यथितास्तथाहम् ॥ २३ ॥ अर्थ ॥ हेमहाबा
होमोटीडळे अेडरीने त्रिकाल अनंत मुख अनंत आंख्यो
अनंत हाथ अनंत जंघ अनंत चरण अनंत पोट अेणे-
करीने जुगत मारुं रुप जोईने सारा लोक अत्यंत पीडा
पामेछे ॥ २३ ॥ श्लोक ॥ नभस्पृशंदीप्तमनेकवर्णंव्या
माननंदीप्तविशालनेत्रम् ॥ दृष्ट्वाहित्वांप्रव्यथितांत

रात्मा धृतिंनविंदामि शमंचविष्णो॥ २४ ॥ अर्थ ॥ अ
परकारे सर्वव्यापी आकाश मा पोचेल देदीप्य मान अनेक वरण
विशालकरेलु मुख अने देदीप्यमान मारा नेत्र जेम मत्यस-
जोता छतां मारि चित्त पीडाने पामेछे मारि धीरज रेहेतु न-
थी कुंशांतीने पामतोनथी ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ दंष्ट्राकराला-
निचतेमुखानि दृष्ट्वैव कालानल संन्निभानि दिशोन-
जानेनलभेचशर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥ २५ ॥ अ
र्थ ॥ डाढो जे करीने भयंकरने काल्याग्नी तुल्य एवांत मारा
मुखने देखीने मने दिशा समजती नथी. मन ठेकाणे रहेतुं नथी
माटे हे देवाधिदेव हे जगतना निवास मारा माथे प्रसन थाओ ॥ २५
॥ श्लोक ॥ अमीचत्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे सहैवा
वनिपालसंघैः ॥ भीष्मोद्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ सहा

स्मदीयैरपियोधमुख्यैः ॥ २६ ॥ अर्थ ॥ धृतराष्ट्र
ना पुत्र राजाओ सुधां अने भीष्म द्रोण तथा कर्ण ए पण
उत्तम मुख्य जोधा सुधां ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ वक्त्राणि ते त्व-
रमाणा विशंति दंष्ट्राकरालानि भयानकानि ॥ केचि
द्विलग्ना दशनांतरेषु संदृश्यंते चूर्णितैरुत्तमांगैः ॥
२७ ॥ अर्थ ॥ दाढे करीने विकराल अने भयानक एवां
तमारा मुखमां उतावळा प्रवेश करे छे. केटलाक तमारा दांत
ना मध्यमां अटकी रह्यां छे. माथां एवां देखाय छे. ॥ २७ ॥ श्लो
क ॥ यथा नदीनां बहवोंबुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखा द्र
वंति ॥ तथा तवामी नरलोकवीरा विशंति वक्त्राण्यभि
विज्वलंति ॥ २८ ॥ अर्थ ॥ जेम नदीना जलनो प्रवाह स
मुद्रमां जाय छे. तेम आ नरलोकना वीरो तमारा ज्वल-

त्स्य मान मुख्यमां प्रवेश करेछे. ॥ २८ ॥ श्लोक ॥ यथाप्रदी
प्तं ज्वलनं पतंगा विशंति नाशाय समृद्धवेगाः ॥ तथैव
नाशाय विशंति लोकास्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः
॥ २९ ॥ अर्थ ॥ जेम परदीपत अगनीमां पतंग घणा वि
गथी पडेछे ने नाश पामेछे. तेम आ लोक घणा वेगे करीने त
मारा मुख्यमां प्रवेश करेछे. ॥ २९ ॥ श्लोक ॥ लेलिह्यसे
ग्रसमानः समंताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः ॥
तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं भासस्तवोग्राः प्रतपंति वि
ष्णोः ॥ ३० ॥ अर्थ ॥ तमे दैदीप्यमान मुख्ये करीने चारे
कोरे शरव लोकोने ग्रास करतां छतां थाओछो. ने तेजे क-
रीने तमारी कांती शरव जगतने पुरण करीने तपेछे. ॥ ३० ॥
श्लोक ॥ आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो नमोस्तु ते देव

वरप्रसीद ॥ विज्ञातुमिच्छामि भवंतमाद्यं नहिप्रजा
नामि तवप्रवृत्तिम् ॥ ३१ ॥ अर्थ ॥ हे देव श्रेष्ठ तमने न
मस्कार होने प्रसन्न थाओ आ उग्र रूप एवा भगवा
न तमे कोण छो· आदि एवा तमने जाणवाने इच्छुं छुं· तमा
री आ प्रवृत्ती शा माटे छे ते हुं जाणतो नथी· ॥ ३१ ॥ श्लोक
॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्र
वृद्धो लोकान् समाहर्तुमिह प्रवृत्ताः ॥ ऋतेऽपि त्वां
न भविष्यंति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः
॥ अर्थ ॥ श्रीकृष्ण कहे छे· हुं आ लोकनु क्षय करनारो·
काल छुं· अने हे आ पण आ शामा उभा छे ते शरवेने ए·
कदम गराश करवाने प्रवरतो छुं· ए माटे ते सैन्य मा जेघा
उभा छे· ते शरव तारा बिना प[illegible]पामशे· ॥ ३२ ॥

॥३२॥ श्लोक ॥ तस्मात्वमुत्तिष्ठयशोलभस्व जित्वाश
त्रून्भुंक्ष्वराज्यंसमृद्धम् ॥ मयौवैतेनीहताःपूर्वमेव
निमित्तमात्रंभवसत्यसाचिन् ॥ ३३ ॥ अर्थ ॥ माटे तुं
उठने युधकर एटले शत्रुने जीत्य अने संपत्तीयुगत राज्य
भोगव्यते शत्रुतारा मार्‍या मोरेमे मार्‍याछे हे शव्यसं
तगनावाल्या तुं निमित्यमात्रथा ॥३३ ॥ श्लोक ॥ द्रोणं
चभीष्मंचजयद्रथंचकर्णंतथाऽन्यानपियोधवीरान् ॥
मयाहतांस्त्वंजहिमाव्यथिष्टायुध्यस्वजेतासिरणेस
पत्नान् ॥ ३४ ॥ अर्थ ॥ द्रोण भीशम जयद्रथ करण
ने बीजा शुरवीर मे मारेलाछे तेने तुं मारने पीडा मपामी
श युधकर अने रणमा शत्रुने जीतीश ॥ ३४ ॥ श्लोक ॥
संजयउवाच ॥ एतच्छ्रुत्वावचनंकेशवस्यकृतांजलिं

वेपमानः किरीटी ॥ नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं स
गद्गदं भीतभीतः प्रणम्य ॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ संजय कहे छे
एवा श्रीकृष्णना वचन सांभळीने अतिभयथी व्याकु
ल थईने कंपतो छतो हाथ जोडीने नमस्कार करीने श्री कृ-
ष्ण प्रते फरीथी कंठरोध एटले बोलतो हवो ॥ ३५ ॥ श्लो
क ॥ अर्जुन उवाच ॥ स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या ज
गत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ॥ रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवंति
सर्वे नमस्यंति च सिद्धसंघाः ॥ ३६ ॥ अर्थ ॥ अर्जुन
कहे छे. हे इंद्रीयोना ईश तमारी कीरती एटले करीने जगत ह
र्ष पामे छे. ने तमारी सेवा मां रंजन थाय छे. राक्षस भ
ए व्याकुल छतां दिशा ओमां नाशे छे. सीधना समुह त
मने नमस्कार करे छे. ॥ ३६ ॥ श्लोक ॥ कस्माच्च ते न नम

मेरन् महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोप्यादिकर्त्रे ॥ अनंत
देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् ॥ ३७ ॥
अर्थ ॥ तेनुं गत छे. ने शरवथी मोटा ब्रह्मा तेना आदी
करता एवा तमने नमस्कार केम करे नहीं हे अनंत हे देवेश
हे जगन्निवास तमने अक्षय ब्रह्म छो ने शदशत थकी प
र छो ॥ ३७ ॥ श्लोक ॥ त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वम
स्य विश्वस्य परं निधानम् ॥ वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम·
त्वया ततं विश्वमनंतरूप ॥ ३८ ॥ अर्थ ॥ तमे आदि दे
व ने पुराण पुरुष छो पर छो आ विश्वनुं परम निधान छो·
तमे जाणनार छो ने जाणवा जोग छो· परम धाम एटले आ
शरव तमे छो· हे अनंतरूप आ विश्व तमो रामा पुंछे ॥
३८ ॥ श्लोक ॥ वायुर्यमोग्निर्वरुणः शशांकः प्रजापति

स्त्वंप्रपितामहश्च॥नमोनमस्तेस्तुसहस्रकृत्वःपुन
श्चभूयोपिनमोनमस्ते॥३९॥अर्थ॥वायुतमेछो
यमतमेछो॰अग्नितमेछो॰वरुणतमेछो॰चंद्रतमेछो॰
प्रजापतितमेछो॰प्रपितामहतमेछो॰तमनेहजारोवारन॰
मस्कारछे॥३९॥श्लोक॥नमःपुरस्तादथपृष्ठतस्ते
नमोस्तुतेसर्वतएवसर्व॥अनंतवीर्यामितविक्रमस्त्वं
सर्वंसमाप्नोषिततोसिसर्वः॥४०॥अर्थ॥तमनेआ
गलनेपाछलनमस्कारहोतमनेच्यारेडोरेनमस्कारहो
हो अनंतवीर्यतमेअप्रमाणपराक्रमीछो॰अनेसरव॰
व्यापीछो॥४०॥श्लोक॥सखेतिमत्वाप्रसभंयदुक्तं
हेकृष्णहेयादवहेसखेति॥अजानतामहिमानंतवे
दंमयाप्रमादात्प्रणयेनवापि॥४१॥अर्थ॥तमारो

મહિમા ન જાણીને તમને મે ભિન્ન જાણીને પ્રમાદે કરીને
અથવા સ્નેહે કરીને હે તે કરીને હે કૃષ્ણ હે યાદવ હે સખા એ
પ્રકારે કહ્યું છું ॥૪૧॥ શ્લોક ॥ યચ્ચાવહાસાર્થમસત્કૃતો
સિ વિહારશય્યાસનભોજનેષુ ॥ એકોથવાપ્યચ્યુત તત્સ
મક્ષં તત્ક્ષામયે ત્વામહમપ્રમેયમ્ ॥ ૪૨॥ અર્થ ॥ અને
હે કૃષ્ણ અન્નઆશન લેતાંન એવાંને વિશે એકાંતે વાસ્ત
લામાં સ્નેહ શાંતા પ્રશંકરી કરી તે વાતની ક્ષમા કહું તમારે પા
શે માંગું છું ॥૪૨॥ શ્લોક ॥ પિતાસિ લોકસ્ય ચરાચરસ્ય
ત્વમસ્ય પૂજ્યશ્ચ ગુરુર્ગરીયાન્ ॥ ન ત્વત્સમોસ્ત્યભ્યધિકઃ
કુતોન્યો લોકત્રયેપ્યપ્રતિમઃ પ્રભાવઃ ॥ ૪૩ ॥ અર્થ ॥
તમો આ ચરાચર લોકના પિતા છો ને પુજવા યોગ્ય માટે ગુરુ
તમે છો આ લોક ત્રણમાં તમારા સમાન કોઈ નથી. તો અ

घेड उहांथी होयेतमे अमतीम प्रतापवानछो ॥ ४३ ॥ प
श्लोक ॥ तस्मात्प्रणम्यप्रणिधायकायं प्रसादयेत्वाम
हमीशमीड्यम् ॥ पितेवपुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः
प्रियायार्हसिदेवसोढुम् ॥ ४४ ॥ अर्थ ॥ ते माटे हुं प्रथ
वीउपर दंडवतनमस्कार करीने ते मारे पारो प्रशनता मा
गुं छुं. हे स्तुत्य हे ईशवर जेम पुत्रनो अपराध पिता क्षमा करे
छे. जेम प्रियानो अपराध पती क्षमा करे छे. ने मित्रनो अप
राध मित्र क्षमा करे छे. तेम म्हारो अपराध तमो ओ शहन
करवो. ॥ ४४ ॥ श्लोक ॥ अदृष्टपूर्वं हृषितोस्मि दृष्ट्वा भ
येनचप्रव्यथितंमनोमे ॥ तदेवमेदर्शयदेवरूपंप्र
सीददेवेशजगन्निवास ॥ ४५ ॥ अर्थ ॥ कोई दाहाडे
पण आवुं तमारि रूप न्हे पुन हतुं ते न्हेईने हुं हरख पा

म्यो अने त्रये करीने मारुं मन व्यथा पामे छे. माटे हे
देवेश हे जगन्निवास दया करीने तमारुं ते रूप मने दे
खाडो ॥ ४५ ॥ श्लोक ॥ किरीटिनं गदिनं चक्रहस्त
मिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन.
॥ सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते ॥ ४६ ॥ अर्थ ॥ मस्त
क उपर मुगट ने हाथने विषे गदा चक्रने धारण करनार
एवा तमने हुं जोवाने इच्छुं छुं. हे सहस्रबाहो हे वि
श्वमूर्ते. ते चतुर्भुज स्वरूपने धारण करो. ॥ ४६ ॥ श्लोक
॥ श्रीभगवानुवाच ॥ मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं रूपंप
रं दर्शितमात्मयोगात् ॥ तेजोमयं विश्वमनंतमाद्यं
यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ॥ ४७ ॥ अर्थ ॥ श्रीकृष्ण
भगवान कहे छे. हे अरजुन में प्रसन्न थईने पोताने

सामर्थ्ये करीने तने मे य विश्वात्मक ने आदि अंत रहि
त एवुं महारुं रुप तने देखाडीयुं ने तारा विना कोए आ
गळ पण दीठुं नहतुं ॥ ४७ ॥ श्लोक ॥ नवेदयज्ञाध्ययनै
र्न दानैर्न चक्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः ॥ एवंरूपः श-
क्य अहं नृलोके द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥ ४८ ॥ अर्थ
॥ हे कुरुवीर तारा विना बीजाने आ मनुष्य लोकमां वे
दना ज्ञान दान क्रीया आने एवुं उग्र तप एणे करीने पण
मारुं दरशन दुरलभ छे ॥ ४८ ॥ श्लोक ॥ मातेव्यथा मा
चविमूढभावो दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम् ॥ व्यपे-
तभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य ॥
४९ ॥ अर्थ ॥ एमारा घोर रुपने जोईने तुं व्यथा पामी-
श नही तमे मूढता म पाडो हवे भय रहित सतुष्ट चित्त थई

नेंइरीथीं जेवुं रुप भारुं हतुं तेवुं ल्ने ॥ ४९ ॥ श्लोक ॥ संज
यउवाच ॥ ॥ इत्यर्जुनंवासुदेव तथोक्त्वास्वकंरूपं
दर्शयामासभूयः ॥ आश्वासयामासच भीतमेनं
भूत्वापुनः सौम्यवपुर्महात्मा ॥ ५० ॥ अर्थ ॥ संजयकहे
छे अरजुन प्रते भगवान एवुं बोलीने पोतानुं आगला
नुं रुपदेखाडता हवा एप्रकारे तेमहात्मा एसुंदरस्वरुपधा
रणकरीनेभयेव्याकुळएवा अरजुन नु सांशवासनकर्युं
॥ ५० ॥ श्लोक ॥ अर्जुनउवाच ॥ दृष्ट्वेदं मानुषंरूपंत
वसौम्यंजनार्दन ॥ इदानीमस्मिसंवृत्तः सचेताःप्र-
कृतिंगतः ॥ ५१ ॥ अर्थ ॥ अरजुनबोलीउकहेछे हेजना
रदन तमारुं आशुंदर स्वरुप जोईने हवेहुं सचेतनथयोने
प्रकृत प्रकृतीनेपाम्यो ॥ ५१ ॥ श्लोक ॥ श्रीभगवानुवा

च॥ ॥ सुदुर्दर्शमिदंरूपंदृष्टवानसियन्मम॥देवा
अप्यस्यरूपस्यनित्यंदर्शनकांक्षिणः॥ ५२॥अर्थ
॥ श्रीकृष्ण કહેછે. હે અરજુન અત્યંત દુર્દર્શી એવું મા
હારૂં અદ્ભુત રૂપ તેં જોયું તે રૂપના દરશનને દેવપણ નિરં-
તર ઈચ્છેછે॥५२॥ श्लोक ॥ नाहंवेदैर्नतपसानदानेन-
नचेज्यया॥शक्यएवंविधोद्रष्टुंदृष्टवानसिमांयथा॥
॥५३॥ अर्थ ॥ જેવો તેં મને જોયો તેવો હું વેદ કરીને ન પે-
ઢીલે દાને કરીને જગને કરીને પણ જણાતો નથી ॥
॥५३॥ ॥ ॥ श्लोक॥भक्त्यात्वनन्ययाशक्यअ
हमेवंविधोऽर्जुन॥ज्ञातुंद्रष्टुंचतत्वेनप्रवेष्टुंचपरंतप॥
५४॥अर्थ॥ પણ હું અનન્ય ભગતી ભાવે તત્વે કરીને-
જાણવાને અને દરશન કરવાને અને પ્રવેશ કરવાને જોગ છું

॥५४॥श्लोक॥ मत्कर्मकृन्मत्परम मद्भक्तः संगवर्जि
तः॥ निर्वैरः सर्वभूतेषु यः समोमेति पांडव ॥५५॥ अ
ई सिश्रीमद्भगवत० विश्वरूपदर्शनयोगोनाम एकाद
शोऽध्यायः ॥११॥ ७ ॥ अर्थ ॥ ने पुरुष मारी मी
तीने अरथे करम करेछे अने मने परम मानेछे ने मारी भ
ल्गती करेछे ने शंगवरजीतने शरव प्राणीमात्र वेर रहित
तेमने पामेछे.५५ ॥ ईतिश्री भद्दल्गवतगीता० विश्व
रुपदरशनयोगोनाम अेकादशो अध्यायः ॥११॥ ७ ॥
॥श्लोक॥ अर्जुन उवाच॥ ॥एवंसततयुक्ता ये भक्ता
स्त्वां पर्युपासते ॥ येचाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्त
माः॥१॥ अर्थ॥ अरजुन पुछेछे अे प्रकारे जोगीने वि
शे निरंतर युक्तने ल्गत तमने उपासे छे अने केटलाक अ

क्षरने अव्यगतने उपासे छे तेमां श्रेष्ठ योगवेत्ता कहे वा॰
॥१॥ श्लोक ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ मय्यावेश्यमनो
यंमांनित्ययुक्ताउपासते ॥ श्रद्धयापरयोपेतास्तेमेयु
क्ततमामताः ॥२॥ अर्थ ॥ श्रीकृष्ण कहे छे नेनीतीयु
क्त मारे विशे मन राखीने घणी शरधा थकी मारी उपासन॰
नाकरे छे ते मने अत्यंत युगत मान्य छे॰ ॥२॥ श्लोक ॥
येत्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तंपर्युपासते ॥ सर्वत्रगमचिं
त्यंचकूटस्थमचलंध्रुवम् ॥३॥ अर्थ ॥ नेसरवत्र मा॰
णीनाअलव्यामांतत्परने इंद्रिय समुदायने नीयम माराखीने
सरव ठेकाणे समबुध्धी छतो अक्षर अनिरदेश्य अव्य॰
त शरवव्यापक अचिंत्य कुटस्थ अचल ध्रुव एवा मने उपासे
छे ते पण मनेज पामे छे॰ ॥३॥ श्लोक ॥ सन्नियम्येंद्रिय

ग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः ॥ ते प्राप्नुवंति मामेव सर्वभूत
हिते रताः ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ पण जेनां चित्त अव्यक्तमां आ
शक्त छे तेमने क्लेश अधिक छे कां जे पण देहवाननें अव्य
क्तगती दुर्लभ छे ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ क्लेशोऽधिकतरस्ते
षामव्यक्तासक्तचेतसाम् ॥ अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं दे
हवद्भिरवाप्यते ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ मारा परायण थईने शरव
कर्म मारे विशे अरपीने अनन्य जोगे करीने ध्यान करतां छतां
मने उपासे छे एवा मारे विशे प्रवेशीत चित्त पुरुषने मरत्युसं
सार सागर थकी हुं उतावलो उधार करुं छुं ॥ ५ ॥ श्लोक ॥
ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः ॥ अनन्येनै
व योगेन मां ध्यायत उपासते ॥ ६ ॥ तेषामहं समुद्धर्ता
मृत्युसंसारसागरात् ॥ भवामि न चिरात्पार्थ मय्यावे

शितन्चेतसाम् ॥ ७ ॥ मय्येवमन आधत्स्वमयिबुद्धिं
निवेशय॥ निवासिष्यसिमय्येवअतऊर्ध्वंनसंशयः
॥ ८ ॥ अर्थ ॥ मारेविशे मन राख्य मारेविशेबुधि
राख्य एटलेमारेविशेमनप्रवेशकरशे एमांसंशयनथी ॥ ८ ॥
श्लोक॥ अथचित्तंसमाधातुंनशक्नोषिमयिस्थिरम् ॥
अभ्यासयोगेनततोमामिच्छाप्तुंधनंजय ॥ ९ ॥ अर्थ ॥
हे अरजुन तुं माहारे विशे स्थीरचित्त राख्यवाने समरथ
नहोयतो आलिभ्यासे करीने माहारी प्रापतीनी इच्छाकर ॥
९ ॥ श्लोक ॥ अभ्यासेप्यसमर्थोसिमत्कर्मपरमोभव
॥ मदर्थमपिकर्माणि कुर्वन् सिद्धिमवाप्स्यसि ॥ १० ॥
अर्थ ॥ जे अभ्यासकरवामां अरजुन [illegible] यनो मारे प्री
तीने अरथे करममां ततपर था [illegible] मारी प्रीतीने अरथे

करमकरीने पण सीधीने पामीश ॥ १० ॥ श्लोक ॥ अथैत
दप्यशक्तोऽसिकर्तुमद्योगमाश्रितः ॥ सर्वकर्मफल
त्यागंततः कुरुयतात्मवान् ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ तेकरमकर
वांमां पण असमरथ होय तो मारे विशे अनन्य निशटारा
षीने जीतेंद्रिय थईने सरव करमफलनो त्याग कर ॥ ११ ॥ श्लो
क ॥ श्रेयाहिज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते ॥
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छांतिरनंतरम् ॥ १२ ॥ अ
र्थ ॥ अभ्यास करतां यनान सारुं छे गनान थकी ध्यान विशे
श छे अने ध्यान करमे फलत्याग विशेश छे कां के त्याग पछे मो
क्ष छे ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ अद्वेष्टासर्वभूतानां मैत्रः क
रुणएवच ॥ निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्ष
मी ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ नेने द्वेश नथी ने शरव भूतनो मैत्र

दयावान स्वभाव अहंकार ने मम ता ए रहीत ने ने शुख
दुःख समान ने न हे क्षमावान स्वभाव॰॥१३॥श्लोक॥ संतु
ष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ निश्चयः॥ मय्यर्पित मनो-
बुद्धिर्योमद्भक्तः सभे प्रियः॥१४॥ अर्थ॥ निरंतर स
न्न, जीतेंद्रिय दृढ निश्चयने ज्ञीमम बुधीमारे विशे
एवाने मारो भगत ते मने प्रियछे॰॥१४॥श्लोक॥य
स्मांनो द्विजते लोको लोकान्नो द्विजते चयः॥ हर्षाम
र्षभयो द्वेगैर्मुक्तोयः सचमे प्रियः॥१५॥ अर्थ॥ जे
थकी लोक उद्वेग पामता नथी ने लोक थकी उद्वेग पामतो
नथी ने हरख मछर न उद्वेग रहित छे ते मने वालोछे॥१५
॥श्लोक॥ अनपेक्षः शुचिर्दक्षः उदासीनो गतव्यथः
॥ सर्वारंभ परित्यागी यो मे भक्तः स मे प्रियः॥१६॥

।।अर्थ ।। जेने कोये वातनी आशा नथी ने पवित्र छे
उदासीन पीडा रहीत अने शरव वेपारनो त्याग करनारो
एवो जे मारो भगत तेमने वाहालो छे ।।१६ ।। श्लोक ।। योन
हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न कांक्षति ।। शुभाशुभपरि
त्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः ।।१७ ।। अर्थ ।। जे हर
ख पामतो नथी ने द्वेश करतो नथी ने आकांक्षा राखतो न
थी एवो शाशानर शानो त्याग करनार जे भगतीवालो ते म
ने वाहालो छे ।।१७ ।। श्लोक ।। समः शत्रौ च मित्रे च
तथा मानापमानयोः ।। शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सं
ग विवर्जितः ।। १८ ।। अर्थ ।। शत्रु मित्रने विशे मान
अपमानने विशे टाढ गरमी एना सुख दुःखने विशे स
मान रहे छे एवो अने संग रहित ।।१८ ।। श्लोक ।। तुल्य

निंदास्तुतिर्मौनीसंतुष्टोयेनकेनचित् ॥ अनिकेत-
स्थिरमतिर्भक्तिमान्मेप्रियोनरः ॥ १९ ॥ अर्थ ॥ ने
ने निंदा अन अस्तुतीशामने मुनिवरद्वालोने ने छेश
वरछेम्छा अेडरीने प्राप्त थउ तेने शंतोषी घरबिनानुंने
स्थीरबुधिवालो भगतीवान पुरेष मने प्रियछे॰ ॥१९ ॥
श्लोक ॥ येतुधर्म्यामृतमिदं यथोक्तंमर्युपासते ॥ श्र
द्दधानामत्परमा भक्तास्तेतीव मेप्रियाः ॥ २० ॥ इ-
तिश्रीमद्भगवद्गीता॰ भक्तियोगोनाम द्वादशोऽध्या
यः ॥ १२ ॥ छ ॥ ॥ अर्थ ॥ ने भगत शरधानु
गतनेमारे परायेणने आधरम रुपी अमरतने डेया पर
मारेउपासेछे॰ तेमने अत्यंतवालोछे॰ ॥ २० ॥ इतिश्री
भगव॰ भगतिजोगोनाम [illegible] ध्यायः ॥ १२ ॥ छ ॥

॥ श्लोक ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ इदं शरीरं कौंतेय
क्षेत्रमित्यभिधीयते ॥ एतद्यो वेत्तितं प्राहुः क्षेत्रज्ञ
मितितद्विदः ॥ १ ॥ अर्थ ॥ श्री कृष्ण कहेछे हे कौंतेय आ
शरीरने क्षेत्र कहेछे अने जे क्षेत्रनो जाणनार तेने क्षेत्रज्ञ क
हेछे ॥ १ ॥ श्लोक ॥ क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु
भारत ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ॥ २ ॥
अर्थ ॥ सर्व देहने विषे क्षेत्रज्ञ मने हुं छुं क्षेत्र अने क्षेत्र-
गन जेम छे एम अने जे जाणवुं तेनुं नाम ज्ञान ए मारो
मत छे ॥ २ ॥ श्लोक ॥ तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च यद्विकारि
यतश्च यत् ॥ स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे
शृणु ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ जे ते क्षेत्र जेवुं ने जे विकारवाळुं ने जे
थकीने विकारवाळुं ने जे थकीने प्रकारने जे महिमावाळुं

ते संक्षेपे करीने मारायी शांभल ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ ऋ
षिभिर्बहुधागीतं छंदोभिर्विविधैः पृथक् ॥ ब्रह्म-
सूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥ ४ ॥ अर्थ ॥
ने ऋषीए अनेक प्रकारे वरणव्युं छे. ने वेद प्रतिशाख्या
मां अनेक प्रकारे गायुं छे ने ते हेतु करीने निश्चितार्थ
एवा ब्रह्मसूत्र ने पदे करीयुं छे ते शांभल ॥ ४ ॥ श्लो-
क ॥ महाभूतान्यहंकारो बुद्धिरव्यक्तमेव च ॥ इं-
द्रियाणि दशैकं च पंच चेंद्रियगोचराः ॥ ५ ॥ अर्थ ॥
क्षेत्र एटले पंच महाभूत अहंकार बुध्धी अव्यगत अ-
ग्यार इंद्रियो पांच इंद्रीयोना विषय ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ इ-
च्छा द्वेषः सुखं दुःखं संघातश्चेतना धृतिः ॥ एतत्क्षे-
त्रं समासेन सविकारमुदाहृतम् ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ ई

इच्छा द्वेष सुख दुःख संघात चेतना धृति एटलाने व
जोगते विकारी क्षेत्रतत्त्वने संक्षेपे करीने कह्युं ॥६॥ श्लो-
क ॥ अमानित्वमदंभित्वमहिंसाक्षांतिरार्जवम् ॥
आचार्योपासनं शौचंस्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥७
॥ अर्थ ॥ हवे ज्ञान कहुं छुं ने शोलक अमानी पणुं, अ
दंभी पणुं, अहिंसा शांती निरमळ पणुं आचारजनी
भगती पवित्र पणुं ने आतमाने जीतवुं ॥७॥ श्लोक॥
इंद्रियार्थेषुवैराग्य मनहंकार एवच ॥ जन्ममृत्युजरा-
व्याधिदुःखदोषानुदर्शनं ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ इंद्रीयोना
विषयमां वेराग निरहंकार जनम मृत्यु जरा रोगने विशे-
दुःख अने दीनता एवा दोष एने वारंवार जोवुं ॥८॥
॥ श्लोक ॥ असक्तिसरभिष्वंगः पुत्रदारगृहादिषु ॥

नित्यंचसमचित्तत्व मिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ पुत्र स्त्री घर एटलाने विशे आशक्ती ममता नहीं ते नेतेकु नहीं एम मानवुं. प्रियने अप्रिय विशे सर्घ एसमचित्तपणु ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ मयिचानन्ययोगेनभक्तिरव्यभिचारिणी ॥ विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥ १० ॥ अर्थ ॥ अनन्यजोगे करीने मारे विशे आशायविनानी लगती एडांते रेहेवुं ने माणशनी शलामां अभीती ॥ १० ॥ श्लोक ॥ अध्यात्मज्ञान नित्यत्वं तत्वज्ञानार्थदर्शनम् ॥ एतज्ज्ञान मिति प्रोक्तमज्ञानंयदतोन्यथा ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ अध्यातमगनानमां नित्य विचारने ततवगनाननो अरथनुंलेवुं एटला ते गनान एमकहेछे. ए विनाने भिन्नु तेने अज्ञानन्ने

णा॥११॥श्लोक॥ज्ञेयंयत्तत्प्रवक्ष्यामियज्ज्ञात्वामृ
तमश्नुते॥अनादिमत्परंब्रह्मनसत्तन्नासदुच्यते॥
॥अर्थ॥ हवेजेजाणछेतेकहुंछुंजेजेजाण्याथीमोक्षम
ळेछे तेनेआदीनथी तेज परब्रह्म छे· तेनेशाकतकहे छे वातुंन
थीअनेअसत्य पण कहेवातुंनथी ॥१२॥ श्लोक ॥स
र्वतःपाणिपादंतत्सर्वतोक्षिसिरोमुखम्॥सर्वतः
श्रुतिमल्लोकेसर्वमावृत्यतिष्ठति॥१३॥अर्थ॥जे
नेशरवेठेकाणेहाथपगमोढांआंख्योमाथांअनेकानछे
मछे तेशरवलोकमांव्यापीनेरहेलुंछे॥१३॥ श्लोक॥
सर्वेंद्रियगुणाभासंसर्वेंद्रियविवर्जितम्॥असक्तं
सर्वभृच्चैवनिर्गुणंगुणभोक्तृच॥१४॥अर्थ॥तेसर
ईंद्रीयविनाछे तेशरवईंद्रीय तथा विषय अने सरष्णुं

त्वासेछे· शक्ती रहितने शरवनुं धारणकरनार निरगु
ण अने गुणनो भोग करनार ते सृष्टिना माहे अने पाहे
रछे· ते चर अने अचर छे· ॥१४॥ श्लोक ॥ बहिरंत-
श्चभूतानामचरंचरमेवच ॥ सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयंदू
रस्थंचांतिकेचतत् ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ अने घणाजीणा
पणाथी जणातुं नथी ते घणुं दुरछेने पासे पणछे ॥१५
॥ श्लोक ॥ अविभक्तंचभूतेषु विभक्तमिवचस्थि
तम् ॥ भूतभर्तृंच तज्ज्ञेयंग्रसिष्णुप्रभविष्णुच ॥
१६ ॥ अर्थ ॥ भागविनाछेने शरव प्राणीमांवायुनी
पेठे रयुंछे· ते प्राणीमात्रनी उतपत्ती स्थिती अनेलय-
अनेकरनारछे ॥१६॥ श्लोक ॥ ज्योतिषामपितज्ज्यो
तिस्तमसः परमुच्यते ॥ ज्ञानंज्ञेयंज्ञानगम्यंहृदि स·

वेस्यधिष्ठितम् ॥१७॥ अर्थ ॥ ते ज्योतीनुं ज्योती छे
तेने अंधकारथी पर एम केहे छे. ते गनान गनेय ने गनान-
गम्य छे. ते शरवना हृदयमां छे. ॥१७॥ श्लोक ॥ इति-
क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः ॥ मद्भक्त एतद्वि
ज्ञाय मद्भावायोपपद्यते ॥१८॥ अर्थ ॥ एम करे क्षे
त्र गनान गनेय एवा ते तमने संक्षेपे करीने नीरूपण करी
उं छे. एने जाणीने माहारो भगत माहारा भावने पा
मे छे. ॥१८॥ श्लोक ॥ प्रकृतिं पुरुषं चैव विध्यनादि
उभावपि ॥ विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसंभ-
वम् ॥१९॥ अर्थ ॥ प्रकरती अने पुरुष एवोने अनाधी
एम जाणजो. सतव रज अने तम ए त्रण गुण अने वि
कार केहेतां गुण थकी थयां ते कारज एम प्रकरती थकी थयां

ऋजेमन्नएाक्ने ॥१९॥ श्लोक ॥ कार्यकारणकर्तृत्वेहे
तुःप्रकृतिरुच्यते ॥ पुरुषः सुखदुःखानांभोक्तृत्वे
हेतुरुच्यते ॥२०॥ अर्थ ॥ कार्य कारण अने कर्तृ-
त्व अने विशे प्रकरती कारणछे॰ अने शुष्य दुःखना त्नो
गववाने विशे पुरुष कारणछे॰॥२०॥ श्लोक ॥ पुरुषः
प्रकृतिस्थोहि भुंक्ते प्रकृतिजान् गुणान् ॥ कारणंगु
णसंगोऽस्यसदसद्योनिजन्मसु ॥२१॥ अर्थ ॥ पु-
रुष प्रकृतीमां रह्योछतो॰ प्रकरतीथ थएला गुणने त्नागते छे॰
पुरुषने शारीनरसीन्नेनीने विशे अवतारनुं कारणगुण
नो संगछे॰॥२१॥ श्लोक ॥ उपद्रष्टानुमंताच भर्ताभो
क्ता महेश्वरः ॥ परमात्मेतिचाप्युक्तोदेहेऽस्मिन्पुरु
षःपरः ॥२२॥ अर्थ ॥ पुरुषते परमातमान्ने महेशव

र एमकहेछे नेतेजा देहने विशे उपद्रष्टा अनुमंता भर-
ताने भागताछे॥२२॥ श्लोक॥ य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृ-
तिंच गुणैःसह॥ सर्वथावर्तमानोपि नसभूयोऽभि-
जायते॥ २३ ॥ अर्थ॥ एमप्रकारे प्रकृती अने पुरुषनेगु-
णसहित जाणेछे·तेकेम वर्तता होयतोपण फरीथीं
जनमनेपामेछे·॥२३॥ श्लोक॥ ध्यानेनात्मनि पश्यं-
ति केचिदात्मानमात्मना॥ अन्येसांख्येन योगेनक-
र्मयोगेनचापरे॥ २४ ॥ अर्थ॥ केटलाएक पोताने-
विशे ध्याने करीने आतमाए आतमाने जुवेछे केट-
लाएक सांख्यजोगे करीने केटलाक करमजोगे करीने·
केटलाक नजाणतां छतां बीजापासेथीं सांभळीने ते-
ने विशे मन राखेछे· ते पण श्रुति पण थतां छतां मृत्युने

तरीजायछे ॥२५॥ श्लोक ॥ अन्येत्वेवमजानंतः श्रु
त्वाऽन्येभ्यउपासते ॥ तेऽपिचातितरंत्येवमृत्युं श्रु
तिपरायणाः ॥ २५ ॥ यावत्संजायतेकिंचित्सत्वंस्था
वरजंगमम् ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात् तद्विद्धि भरत
र्षभ ॥ २७ ॥ अर्थ ॥ हे नरतरतश्रेष्ठ जेटला स्थावर जंग
म प्राणीउतपन थायछे ते क्षेत्र क्षेत्रज्ञने जोगे करीने थाय
छे एम जाण ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ समंसर्वेषुभूतेषु
तिष्ठंतंपरमेश्वरम् ॥ विनश्यत्स्वविनश्यंतंयःपश्य
तिसपश्यति ॥ २७ ॥ अर्थ ॥ सर्व प्राणीमां रहेनारे
हेनाशवंतमांनाशपामनारा एव तेने समान जुवे छे
॥ २७ ॥ श्लोक ॥ समंपश्यन्हि सर्वत्र समवस्थित
मीश्वरम् ॥ नहिनस्त्यात्मनात्मानं ततोयातिपरां

तिम् ॥ २८ ॥ अर्थ ॥ सर्वने विशे रह्या ईश्वरने जे
समान जुवेछे॰ ते पोतपोताने घातन करता छतां पर
मगतिने पामेछे॰ ॥ २८ ॥ श्लोक ॥ प्रकृत्यैवच कर्मा
णि क्रियमाणानि सर्वशः ॥ यः पश्यति तथात्मानं म
कर्तारं स पश्यति ॥ २९ ॥ अर्थ ॥ प्रकृती वडे सर्व कर
मने करेछे॰ अने पोते अकर्ता एम जुवेछे॰ ते देखेछे॰ ॥ २९
॥ श्लोक ॥ यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनु पश्यति ॥
तत एवच विस्तारं ब्रह्म संपद्यते तथा ॥ ३० ॥ अर्थ ॥
जे काले प्राणी मात्रनानो आत्मा वने एक ठेकाणे जुवे
छे अने ते नथकी विस्तार जुवेछे जे काले ते परब्रह्मरूप
थायछे॰ ॥ ३० ॥ श्लोक ॥ अनादित्वान्निर्गुणत्वात्प
रमात्मायमव्ययः ॥ शरीरस्थोपि कौंतेय न करोति

नलिप्यते ॥ ३१ ॥ अर्थ ॥ हे कौंतेय आ अव्यय आत
मा शरीरमां रह्यो छे तोपण कांई एक करतो नथी अने
लेपातो पण नथी. कां के ते अनादि ने निरगुण छे. ॥ ३१ ॥
श्लोक ॥ यथासर्वगतंसौक्ष्म्यादाकाशंनोपलिप्य-
ते ॥ सर्वत्रावस्थितोदेहे तथात्मानोप लिप्यते ॥
३२ ॥ अर्थ ॥ जेम सरव ठेकाणे रहेलो आकाश सूक्ष्-
म छे. ने लेपातुं नथी. तेम ज शरव व्यापक आतमा दे
हनी विषे लेपातो नथी ॥ ३२ ॥ श्लोक ॥ यथाप्रका
शयत्येकः कृत्स्नंलोकमिमंरविः ॥ क्षेत्रंक्षेत्रीत
थाकृत्स्नंप्रकाशयतिभारत ॥ ३३ ॥ अर्थ ॥ जेम
एक सुरज सरव लोकोने प्रकाशे छे तेम ए क्षेत्रज्ञ शा
रव लोकोने प्रकाशे छे. ॥ ३३ ॥ श्लोक ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञ

योरेवमंतरंज्ञानचक्षुषा ॥ भूतप्रकृतिमोक्षंच-
योविदुर्यांतितेपरम् ॥ ३४ ॥ ॥ इतिश्रीमद्भ
ग० क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोगोनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥
१३ ॥ छ ॥ ॥ અર્થ ॥ એ ગનાન ચક્ષુએ કરીને-
ક્ષેત્ર ક્ષેત્રગનનું અંતર જુવેછે. અને ભૂત પ્રકરતી-
થકી મોક્ષ પામેછે. એમ જાણેછે. તે પરમ પદને પા
મેછે ॥ ૩૪ ॥ ॥ઈતિશ્રી મદ્ભગવત૰ ક્ષેત્ર ક્ષેત્રગ
નયોગો નામ ત્રયોદશોઽધ્યાયઃ ॥ ૧૩ ॥ છ ॥
श्रीभगवानुवाच ॥ ॥ परंभूयः प्रवक्ष्यामिज्ञाना
नांज्ञानमुत्तमम् ॥ यज्ज्ञात्वामुनयः सर्वेपरांसि-
द्धिमितोगता ॥ १ ॥ અર્થ ॥ શ્રીકૃષ્ણ કેહેછે ફરીથી-
હે અર્જુન ગનાન મો ઉત્તમ ગનાન તેને કહીશ તને જાણી

नेशरव मुनीश आशंशारथडी परम सिधीनेपा मे
आछेॱ॥१॥ श्लोक ॥ इदंज्ञानमुपाश्रित्य ममासा
धर्म्यमागताः॥ सर्गेऽपिनोपजायंते प्रलयेनव्य-
थंतिच॥ २॥ अर्थ॥ मेगनानना आशरय डीने
मारा शमान पणाने पामेला पुरुषशरशटीमां न न-
म घरतानथी नेप्रलयमांनाश पामतानथी॥२॥ प
श्लोक ॥ ममयोनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भंदधाम्य-
हम्॥ संभवः सर्वभूतानां ततोभवतिभारत॥
३॥ अर्थ॥मारी योनी एटले गरलाधान स्थानम
हत ब्रह्म एटले गुणात्मक माया छे तेने विशे हुंगर
लधारण करुंछुं तेथकी शरव प्राणीनी उतपत्ती था
एछे॥३॥ श्लोक ॥ सर्वयोनिषुकौंतेयमूर्तयः सं

भवंतिया: ॥ नासांब्रह्म मह द्यो निरहं बीजप्रद: पि
ता ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ शरव प्राणीने विशे नाना प्रकारनी
ने मुरती ओ उतपन थायछे तेनु उतपती स्थान मायाने
बीजकरतांहुंछुं ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ सत्वंरजस्तम इति गु
णा: प्रकृतिसंभवा: ॥ निबध्नंति महाबाहो देहे देहि
नमव्ययम् ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ प्रकरतीथी त्रणगुण थयाछे
तवरन्नने तमते देहने विशे अविनाशी आतमाने बंध
न करेछे ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ तत्रसत्वं निर्मलत्वात्प्रकाश
कमनामयम् ॥ सुखसंगेनबध्नाति ज्ञानसंगेनचान
घ ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ ते मध्ये अनामय एटले रजतम र
हित निरमल सत्वगुन प्रकाश करनारो ते गनान संगे क
रीने आतमाने बांधेछे ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ रजो रागा

त्मकं विद्धि तृष्णासंगसमुद्भवम् ॥ तन्निबध्नाति –
कौंतेय कर्मसंगेन देहिनम् ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ रजोगुणने मी
तत्रशणा संगते करम संगे करीने देहाभिमानीने व्या
पे छे ॥ ॥ ७ ॥ ॥ श्लोक ॥ तमस्त्वज्ञानजं विद्धि
मोहनं सर्वदेहिनाम् ॥ प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्नि
बध्नाति भारत ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ तमोगुण अने अज्ञाना
न थको॰ तेसर्व जीवने मोह करनारो जाणवो ते प्र
माद आलस अने निद्रा ए करीने आतमाने बंधन
करे छे॰ ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ सत्वं सुखे संजयति रजः कर्मा
णि भारत ॥ ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत ॥
॥ ९ ॥ अर्थ ॥ सतवगुणनी वधी सुखने विशे रजो
गुणनी वधी करमने विशे तमोगुणनी वधी गनानबुध्या

वरण करीने अज्ञानमां रहेछे. ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ रजस्त
मश्चाभिभूय सत्वंभवति भारत ॥ रजःसत्वंतमश्चै
व तमःसत्वंरजस्तथा ॥ १० ॥ अर्थ ॥ सतव गुण र
जस्तमने पराल्लव करेछे. रजोगुण सतव तमने पराल्ल
व करेछे. तमोगुण शतवरजने पराल्लव करेछे ॥ १० ॥ श्लो
क ॥ सर्वद्वारेषु देहेस्मिन् प्रकाशउपजायते ॥ ज्ञानं
यदातदाविद्याद्विवृद्धं सत्वमित्युत ॥ ११ ॥ अर्थ ॥
जेशमे देहमां शरव द्वारे प्रकाश अने ग्नान थायछे.
तेशमे सतवगुणनी वृद्धी जाणवी. ॥ ११ ॥ श्लोक ॥
लोभः प्रवृत्तिरारंभः कर्मणामशमः स्पृहा ॥ रज-
स्येतानिजायंते विवृद्धे भरतर्षभ ॥ १२ ॥ अर्थ ॥
रजोगुणनी वरधी थायछे. तारे लोभ प्रवृत्ति करम-

नोआरंतअशांति वासनाग्मेथायछे. ॥ १२ ॥श्लो
क॥ अप्रकाशो प्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एवच ॥ तम
स्येतानिजायंते विवृद्धे कुरुनंदन॥ १३ ॥अर्थ ॥
तमोगुणवधीथी पामवाथी अप्रकाश अप्रवृत्ति प्रमा
द मोह थाञ्रेछे. ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ यदासत्वेप्रवृद्धेतु
प्रलयंयातिदेहभृत् ॥ तदोत्तमविदांल्लोकानमला
न्प्रतिपद्यते ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ देह धरी प्राणनोग्राया
वानीवखत शतव गुणनी वधी छतां उत्तम देवतानां
निरमल लोकने पामेछे. ॥ १४ ॥ श्लोक॥ सजसि प्र
लयंगत्वाकर्मसंगेषुजायते॥ तथा प्रलीनस्तमसि
मूढयोनिषुजायते ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ रजोगुणने विशे
देह मुकेछे ते करम संगीजनने विशे उतपन थाग्मेछे. ते

मोगुणमांहे मुइछे. ते मूढ योनीने विशे जनमपामे
छे. ॥१५॥ श्लोक ॥ कर्मणःसुकृतःस्याहुः सात्वि-
कंनिर्मलंफलम् ॥ रजसस्तुफलंदुःखमज्ञानंतम
सः फलम् ॥ १६ ॥ अर्थ ॥ सातवीककरमनुंफळ नि
रमळ ग्नान वैराग्यादीक छे. राजशाकरमनुंफळदुःख
छे. तामसकरमनुंफळअज्ञानछे. ॥१६॥ श्लोक ॥ स
त्वात्संजायतेज्ञानंरजसोलोभएवच ॥ प्रमादमोहौ
तमसोभवतोज्ञानमेवच ॥ १७ ॥ अर्थ ॥ सत्वगुण-
थकीज्ञानथाएछे. रजोगुणथकीलोभथाएछे. तमो
गुणथकीप्रमादमोह अने अज्ञानथाएछे. ॥१७॥
श्लोक ॥ ऊर्ध्वंगच्छंतिसत्वस्थामध्येतिष्ठंतिराजसाः
॥ जघन्यगुणवृत्तिस्था अधोगच्छंतितामसाः ॥१८॥

अर्थ ॥ सतव गुणवालानी उरधवगती थाअेछे. र
जोगुणवालानी आलू लोकनीगती थाअेछे. तमोगु
णवालानी गती नरकमां थाअेछे. ॥ १८ ॥ श्लोक ॥-
नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति ॥ गुणेभ्य
श्च परं वेत्ति मद्भावं सोधिगच्छति ॥ १९ ॥ अर्थ ॥ ज
रे जे नार गुण थकी करता बीजे छे. अेम जेतो नथी अ
ने गुणने करनार अेम जुवेछे जे आतमाने गुणथ-
की पर जाणेछे. तारे तेपरम भावने पामेछे. ॥ १९ ॥
॥ श्लोक ॥ गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवा-
न् ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिविमुक्तोमृतमश्नुते ॥
२० ॥ अर्थ ॥ जीव आ स्थूलदेहनां उपजवनां कारण
गुणने छोडीने जनम मृत्यु जरा दुःखे करीने मुकत थतो छे

तो मोक्ष पामेछे ॥ २० ॥ श्लोक ॥ अर्जुनउवाच ॥
कैर्लिंगैस्त्रीनृगुणानेतानतीतोभवति प्रभो ॥ किमा
चारः कथंचैतांस्त्रीनृगुणानतिवर्तते ॥ २१ ॥ अर्थ ॥
अरजुन पुछेछे के हे प्रभो त्रिगुण रहितने कीये लक्ष
णे करीने ओलखीये. तेनो आचार केवो. अने त्रण गु-
णने केम करे छोडे. ॥ २१ ॥ श्लोक ॥ श्रीभगवानुवाच
॥ प्रकाशंच प्रवृत्तिंच मोहमेवच पांडव ॥ नद्वेष्टिसंप्रवृत्ता
निननिवृत्तानिकांक्षति ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ श्रीकृष्ण कहे छे हे
पांडव ज्ञानीने प्रकाश प्रवृत्ति मोह एछतां एनो द्वेश करे अ
ने एनछतां एनी इच्छा करतो नथी ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ उ
दासीनवदासीनो गुणैर्योनविचाल्यते ॥ गुणावर्तंत
इत्येवयोवतिष्ठतिनेंगते ॥ २३ ॥ अर्थ ॥ जे उदासी

नी पेठे रेहेछेने गुणेकरीने च्यालतोनथी॰ अनेगुणावरत
छतां च्यालतोनथी॰२३॥ श्लोक॥ समदुःखसुखःस्व
स्थःसमलोष्टाश्मकांचनः॥ तुल्यप्रियाप्रियोधीर
स्तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः॥२४॥ अर्थ॥ जे पोतानाग
नानने विशे रयोछेनेजेने सुखदुःखसमान छेने माटी पा-
णानेशोनुं तेने समानछेतं नेप्रिय अने अप्रिय तुल्यछे जे
ने निंदाने स्तुती समानछें॰ अनेधीरजवान एवो॥२४॥श्लो
क॥ मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः॥
सर्वारंभपरित्यागी गुणातीतःसउच्यते॥२५॥ अर्थ॥
जेमानमां अने अपमानमां अनेमित्रमाने शत्रुमां शमानप
णुंछेअनेउद्योगनेपरित्यागकरेतेनेगुणातीतकहेछे॥२५॥
॥श्लोक॥ मांचयोऽव्यभिचारेण भक्तियोगेनसेवते॥

सगुणान् समतीत्यैतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥२६॥
अर्थ ॥ ने फलाकांक्षा रहीत भगती योगे करीने मने सेवे छे
ते ए त्रिगुणने अतिक्रमण करीने ब्रह्मभावने जोग थाये
छे ॥२६॥ श्लोक ॥ ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्या-
व्ययस्य च ॥ शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकांति
कस्य च ॥२७॥ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गी० गुण-
त्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥ छ
अर्थ ॥ अविनाशी अने मोक्षनुं साधन ब्रह्मने वेदनी
प्रतिष्ठा परवचनानस्थान हुं छुं अने अव्यभिचारी सु-
खनी प्रतिष्ठा एटले फलरूप हुं छुं ने प्रकाशवरो हुं छुं ने शाश्
वत धरमनी प्रतिष्ठानुं फल हुं छुं २७ इति श्रीमद्भगवद्गु
णत्रयविभागयोगोनाम चतुरदशोऽध्यायः ॥१४॥॥

॥श्रीभगवानुवाच॥ ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं
प्राहुरव्ययम् ॥ छंदांसियस्यपर्णानियस्तंवेदसवेद
वित्॥ १ ॥ अर्थ ॥ श्री कृष्ण कहे छे जेनुं मुळ ऊंचुं अने शा
खाओ नीचे छे जेना पानडां छे एवा पीपळना झाडने अवि
नाशी कहे छे. जे तेने जाणे छे ते वेदने जाणे छे. ॥ १ ॥ श्लो
क॥अधश्चोर्ध्वंप्रसृतास्तस्यशाखागुणप्रवृद्धा वि
षयप्रवालाः॥अधश्चमूलान्यनुसंततानिकर्मानु
बंधीनिमनुष्यलोके॥ २ ॥ अर्थ ॥ संसार रूप पीप
ळो ते क्षणमां नाश पामे छे एवुं जाणीने तेनुं मूळ ऊंचुं जे
ब्रह्म परमने तेथकी थयां जे माया ने महत्तत्व ने अहंकारादि
कने तेनी शाखाने नीचे गुणे करीने वधी पामेला विषय
रूप नां पानडां ने पीपळानी शाखा उपर अने नीचे फेलाणी छे.

ने तेना मूळ्डरमानुसारी थतां छतां नीचे मनुष्यलोकमां
विस्तारीयां छे ॥२॥ श्लोक ॥ न रूपमस्येह तथोपल-
भ्यते नांतो न चादिर्न च संप्रतिष्ठा ॥ अश्वत्थमेनं सुवि-
रूढमूलमसंगशस्त्रेण दृढेन छित्वा ॥ ३ ॥ अर्थ ॥
ऐहां एनुं रूप अने आदि अंत अने मध्य समन्नतुं प
णनथी अत्यंत ऊंडा गएलां जेनां मूळ एवी पीपळाने
असंगरूप कुवाडे छेदिने ॥३॥ श्लोक ॥ ततः पदं तत्परि
मार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तंति भूयः ॥ तमेव चा
द्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः ॥ प्रवृतिः प्रसृता पुराणि ॥ ४ ॥
अर्थ ॥ ता रपछीते पद शोधवुं जे पदने विशे गएला करीथी प्र
वृत्ति पामतो नथी अने एवी लावना राखवी के ज्योथी पेली
प्रवृत्ति थई तेना आदिपुरुषने शरण हुं जउं छौं ॥ ४ ॥ श्लोक ॥

निर्मानमोहा जितसंगदोषा अध्यात्मनित्याविनिवृत्तका-
माः ॥ द्वंद्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैर्गच्छंत्यमूढाः पदम
व्ययंतत् ॥५॥ अर्थ ॥ જેહ માન મોહ રહિત જેણે સંગ દોષ
જીત્યાં જે અધ્યાત્મપર ને જે નિવૃત્તમનાની વસ્તીને પામેછે તે
મ સુખ દુઃખાદી દ્વંદ્વ કરીને મુકાયા એવા જ્ઞાની અવિનાશી
પદને પામેછે. ॥५॥ श्लोक ॥ नतद्भासयते सूर्यो नशशां
कोनपावकः ॥ यद्गत्वाननिवर्तंते तद्धाम परमंमम ॥
६ ॥ अर्थ ॥ જે પદથકી ફરીથી નિવરતી નથી તે પદ મારૂં
ધામછે. તેને સૂરજ ચંદ્ર ને અગની પ્રકાશ કરી શકતા નથી
તે સ્વયં પ્રકાશ છે. ॥६॥ श्लोक ॥ ममैवांशो जीवलो
केजीवभूतः सनातनः ॥ मनःषष्ठानींद्रियाणिप्रकृ
तिस्थानिकर्षति ॥७॥ अर्थ ॥ જીવલોકને વિશે સના-

तन एवो जीवमांरोन एश छे. तेम कृतीमां रयां अवां मन
सुधां ईद्रीयोने आकरशण करे छे. शामरथ एवो जीवने
ज्यारे शरीरने पामे छे ने तेनो त्याग करे छे. त्यारे जेम वायु पु
ष्पमाथीं सुगंध लईने जाय छे. तेम ते ईद्रीयोने लईने
जाय छे. ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ शरीरं यदवाप्नोती यच्चाप्युत्क्रा
मतीश्वरः ॥ गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गंधानिवाश
यात् ॥ ८ ॥ श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च ॥ अधि
ष्ठान मनश्चायं विषयानुपसेवते ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ कान आं
ख्य आमडी जीभ नाक मन एनो आशरो करीने विषयने सेवे
छे. ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ उत्क्रामंतं स्थितं वापि भुंजानं वा गुणा
न्वितम् ॥ विमूढानानुपश्यंति पश्यंति ज्ञानचक्षुषाः ॥
॥ १० ॥ अर्थ ॥ मूढ जन छे ते जीवने गुण अनुगत छतां अने ग

करतां छतां रहेतो छतां भोग भोगवतो छतां लेतो न
थी जेगनानी छे ते जीवने जुवे छे ॥१०॥ श्लोक ॥ यतं-
तो योगिनश्चैनं पश्यंत्यात्मन्यवस्थितम् ॥ यतंतोप्य
कृतात्मानो नैनं पश्यंत चेतसः ॥११॥ अर्थ ॥ जतन
करनारा जोगी बुधीने विषे रहेला जीवने जुवे छे जेणे चि
त्त शोध्युं नथी एवा मूढजन जतन करतां छतां पण जेने दे
खतां नथी ॥११॥ श्लोक ॥ यदादित्यगतं तेजो जगद्भा
सयतेखिलम् ॥ यच्चंद्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मा-
मकम् ॥१२॥ अर्थ ॥ सर्व जगतने प्रकाश करनारुं एवुं
जे सूर्यने चंद्रने अगनीमां रह्युं जे तेज ते तेज मारुं जाण ॥१२
॥ श्लोक ॥ गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोज
सा ॥ पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः ॥

॥ १३ ॥ अर्थ ॥ हुं पोताने शामरतेन गतमां प्रवेश क
रीने पृथवीमां थे प्रणीने धारण करी छुं अने नक्षत्रमय चं
द्र थईने शरव ओषधीनुं पोषण करुं छुं ॥ १३ ॥ श्लो-
क॥ अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः ॥
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥
॥ १४ ॥ ॥ अर्थ ॥ ॥ हुं अगनी थईने शरवनाल
यमां आश्रित जेवा प्राणीने अपानो जुगल छतो चतुर
विध अन्नने पाचन करुं छुं ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ सर्वस्य चाहं
हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ॥ वेदैश्च
सर्वैरहमेव वेद्यो वेदांतकृद्वेदविदेव चाहम् ॥ १५ ॥ अ
र्थ ॥ हुं शरवना हृदयमां रयो छुं स्मरण ज्ञानने विशमर
णज्ञान मारा थकी थाय छे ने शरव वेदे करीने जाणवा-

जेगते हुं वेदनो करता ने वेदनो वेत्ता पण हुंज छुं ॥१५॥
श्लोक ॥ द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च ॥ क्ष
रः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोक्षर उच्यते ॥१६॥ अर्थ
॥ जोडमां बे पुरुष प्रसिद्ध छे॰ क्षर अने अक्षर तेमां स
रव प्राणी क्षर एम केहे छे॰ अने जेनो लागववुं एवो संबं
धनथी तेहेने अक्षर केहे छे॥१६॥ श्लोक ॥ उत्तमः पु-
रुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः ॥ यो लोकत्रयमावि
श्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ॥१७॥ अर्थ ॥ ए थकी अ
न्य ते उत्तम पुरुष जेने परमातमा केहे छे॰ जे ईशवरमां आ-
उपाधी छतो उत्तम मध्यम ने अधम शरीर तेमां प्रवेश-
करीने तेनु धारण करे छे तथापी ते अविनाशी छे॥१७॥
श्लोक ॥ यस्मात्क्षरमतीतोहमक्षरादपि चोत्तमः ॥

अतोस्मिलोकेवेदेच प्रथितः पुरुषोत्तमः ॥१८॥अ
र्थ ॥ तेमाटे हुंक्षरनेमुकीने अक्षर थकी पण उत्तम छुं वा
शते हुं लोकने विशेने वेदने विशे पुरुषोत्तम करीने विख्या
त छुं ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ योमामेवमसंमूढोजानातिपु
रुषोत्तमम् ॥ससर्वविद्भजतिमां सर्वभावेनभारत
॥१९॥अर्थ॥ ने ज्ञानी मने पुरुषोत्तम एम जाणेछे
ते सर्वने जाणे छे ने सर्वभावे मने भजेछे ॥१९॥श्लो
क॥ इतिगुह्यतमंशास्त्रमिदमुक्तंमयानघ ॥ एतद्बु
द्ध्वाबुद्धिमान्स्यात् कृतकृत्यश्चभारत॥ २०॥ ॥इ
तिश्रीमद्भगव० पुरुषोत्तमयोगोनामपंचदशोऽध्यायः
॥१५॥अर्थ॥ हे भारत एमकरे अत्यंत गुह्य शास्त्र
मे तमनेकहुं एने जाणीने पुरुष बुद्धीमान अने पवित्र थशे॥

अध्याय १५ मो पुरुषोत्तमनामे पंधरमो अध्यायः ॥१५॥

॥श्रीभगवानुवाच॥ ॥अभयंसत्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थि
तिः॥दानंदमश्चयज्ञश्चस्वाध्यायस्तपआर्जवम्॥१॥अर्थ
श्रीकृष्णकहेछे अभयपणुंचित्तनुंनिर्मलपणुंज्ञाननेयोगनेविषे
रहेवुंदानदमनयज्ञनुंभणवुंतपनम्रपणुं॥१॥श्लोक॥अहिंसा
सत्यमक्रोधस्त्यागःशांतिरपैशुनम्॥दयाभूतेष्वलोलुत्वंमा
र्दवंह्रीरचापलम्॥२॥अर्थ॥अहिंसासत्यनेक्रोधत्याग
शांतिपैशून्यभूतदयाअलोभपणुंमार्दवलज्जाअचपलतापण
श्लोक॥अर्थ॥तेजःक्षमाधृतिःशौचमद्रोहोनातिमानिता
॥भवंतिसंपदंदैवीमभिजातस्यभारत॥३॥अर्थ॥तेजक्षमाध
वीशुध्धताअद्रोहअभिमानरहितपणुंएटलांलक्षणनेदैवीसंप
त्तीहोयतेनाछे॥३॥श्लोक॥दंभोदर्पोऽभिमानश्चक्रोधःपारुष्यमेव

व ॥ अज्ञानंचाभिजातस्यपार्थसंपदमासुरीम् ॥४॥ अर्थ ॥ आ
सुरीसंपत्तिनालक्षणकहुंछुंतेशां दंभ दर्प अभिमान क्रोध कठणवचन
अज्ञान ॥४॥ श्लोक ॥ दैवीसंपद्विमोक्षायनिबंधायासु
रीमता ॥ माशुचःसंपदंदैवीमभिजातोसिपांडव ॥५॥ अर्थ
दैवी संपत्ती मोक्षार्थ छे. ने आसुरी संपत्ती बंधार्थ छे. हे
पांडव तुं शोक करीश नहीं कांने तारो जन्म दैवी संपत्ति मांथ
यो छे ॥५॥ श्लोक ॥ द्वौभूतसर्गौलोकेस्मिन् दैवआ
सुरएवच ॥ दैवोविस्तरशःप्रोक्तआसुरंपार्थमेशृणु ॥
अर्थ ॥ ए प्रकारे आ लोकमां दैवी अने आसुरी एवा बे
प्राणीना स्वभाव छे. तेमां दैवी स्वरग विशे विस्तारे करी
ने कह्यो. आसुरी स्वरग विस्तारे कहुं छुं ते शांभळ ॥६॥ श्लो
क ॥ प्रवृत्तिंचनिवृत्तिंचजनानविदुरसुराः ॥ नशौचंना

पिवाचारो नसत्यंतेषुविद्यते ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ आसुरी
जनप्रवृतीने निवृतिजे येने जाणता नथी॰ने तेने विशेष
विजपणुं आचारने सत्य नथी ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ असत्यम-
प्रतिष्ठंतेजगदाहुरनीश्वरं ॥ अपरस्परसंभूतं कि
मन्यत्कामहैतुकम् ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ आजगतने सत्य
सहितने ईश्वर विनानु केहेछे॰ ने जीननु कांई परस्परउ
रणीभूत एवो धरम वाशना ईनाशात पण केवा तुं न
थी एम केहेछे॰ स्त्रीपुरुषना संजोगे करीने थाएछे॰ जीननुं॰
कांईनथी॰ शरवकाम हेतु केछे॰ एम केहेछे॰ ॥ ८ ॥ श्लोक ॥
एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः ॥ प्रभवंत्यु
ग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ एस
मनणाबुद्धिने नाश थयोछे॰ आतमाजेनो एवा अने अल्पबु

घी अने उगरकरम करनार हिंसा करनार अेवा ने थतंत हाय
ने अरथे उतपन थाअे छे ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ काममाश्रित्य
दुष्पूरं दंभमानमदान्विताः ॥ मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्र
वर्त्ततेशुचिव्रताः ॥ १० ॥ अर्थ ॥ ते मोहो करीने खोटी स
मजणने समजीने दुःपूर अेवा कामनो आशरो करीने दंभमा
नमदे करीने अनुगत तेना वरत अपवित्र अेवा करम करे छे
॥ १० ॥ श्लोक ॥ चिंतामपरिमेयांच प्रलयांतामुपाश्रि
ताः ॥ कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥ ११ ॥
अर्थ ॥ ने तेनो पार नहीं अेवी चितानो मरण परजंत आश
रो करे छे अने कामभोग ज पुरुषा रथ छे अेवा निशचय करी
ने रहे छे ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ आशापाशशतैर्बद्धाः का
मक्रोधपरायणाः ॥ ईहंते कामभोगार्थ मन्यायेना-

र्थसंचयान् ॥ १२ ॥ अर्थ ॥ अने अनेक आशापासे करीने बंधाएलोने काम क्रोधने परायण छतो काम भोगनो अर्थ अन्याये करीने द्रव्य संचयनो उद्दियोग करे छे ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ इदमद्य मयालब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम् ॥ इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम् ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ आजमें ओ मेळव्युने आ मनोरथने पामीश आटलुं द्रव्य मारे पासे छे आटलुं वळीने मने माल थशे ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि ॥ ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान् सुखी ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ आ शत्रुमे मार्यो अने बीजा शत्रुने हुं मारीश हुं मोटो हुं भोगवालो हुं शीघ्र हुं बलवान हुं सुखी ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो म

या ॥ यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः
॥ १५ ॥ अर्थ ॥ हुं पूरण कुलीन छौं ने मारा सरखो कोडो
ण छे. हुं जगन करीश आनंद पामीश ए प्रकारे ते अज्ञान
मोहितने जाणेछे ॥ १५ ॥ श्लोक ॥ अनेकचित्तवि-
भ्रांता मोहजालसमावृताः ॥ प्रसक्ताः कामभोगेषु
पतंति नरकेशुचौ ॥ १६ ॥ अर्थ ॥ अनेक चित्तने भ्रांती
ने मोहरूप जाले करीने विंटेला अनेक कामना भोगमां आशक्त
थता अपवित्र नरकमां पडेछे ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ आत्म
संभाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः ॥ यजंते ना
मयज्ञैस्ते दंभेनाविधिपूर्वकं ॥ १७ ॥ अर्थ ॥ ते पो-
ताने मोटा मानगरवतावाळोने धनमान नेम करीने अलग
त छतां दंभे करीने नाममात्र यज्ञनो यत्न करेछे. विधि पूर

कुकरतोनथी ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ अहंकारंबलंदर्पंकामं
क्रोधंचसंश्रिताः ॥ मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषतोभ्य
सूयकाः ॥ १८ ॥ अर्थ ॥ अने अहंकार बल अभीमा
न काम क्रोध एमनो आश्रो करीने सारा मारगनी निंदा
करेछे॰ अने पोताने ने पारकी देहमां मारो द्वेश करेछे॰ ॥१८
॥ श्लोक ॥ तानहंद्विषतः क्रूरान्संसारेषुनराधमा
न् ॥ क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेवयोनिषु ॥ १९ ॥
अर्थ ॥ एवा द्वेषी अने लुंडा अने अशुभने पुरुषमा हुं ते
नेकुं लोकमां आसुरी योनीमां निरंतर नाखुंछुं ॥ १९ ॥ ॥
श्लोक ॥ आसुरींयोनिमापन्नामूढाजन्मनिजन्मनि
॥ मामप्राप्यैवकौंतेयततोयांत्यधमांगतिम् ॥ २० ॥
अर्थ ॥ एवा मूढ ते जनमो जनममां आसुरी योनी पामी

ने मारी माठी नथतां अंते अधमगतीने पामेछे ॥२०॥ श्लो

क ॥ त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ॥ कामः

क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥ २१ ॥ अ

र्थ ॥ पोतानो नाशडरनारा एवा डाम ड्रोध अने लोभ ए

त्रण नरडनुं बारणुं माटे ए त्रणनो त्याग डरवो ॥२१॥ श्लो

क ॥ एतैर्विमुक्तः कौंतेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः ॥ आचा

रत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम् ॥ २२ ॥ अर्थ ॥

डले ए त्रण नरडने बारणेडरीने मुडाएलो पुरुष पोतानुं

डल्याण आचरेछे अने परिणामे परमगतीने पामेछे

॥२२॥ श्लोक ॥ यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते काम

कारतः ॥ न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्

॥२३॥ अर्थ ॥ जे शास्त्र विधी छोडीने पोताने गमे तेम

चालेछे ते सीधी सुखने परमगतीने पामतो नथी-नारड

॥श्लोक॥ तस्माच्छास्त्रंप्रमाणंते कार्याकार्यव्यव-
स्थितौ ॥ ज्ञात्वाशास्त्रविधानोक्तं कर्मकर्तुमिहार्ह-
सि॥ २४॥ ॥इतिश्रीमद्भगवद्गीतायां दैवासुरसं
पद्विभागयोगोनाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६॥ छ॥

अर्थ ॥ माटे तुं करवा करवुं ते मां शास्त्रप्रमाण जाणीने
शास्त्रविधी जे कहेलुं कर्मकर ॥२४॥ इतिश्रीमद्
भगवत० दैवासुर संपत विभाग योगोनाम षोडशोऽ
ध्यायः॥१६॥ छ ॥श्लोक॥ अर्जुनउवाच ॥ये
शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजंते श्रद्धयान्विताः ॥ तेषांनि
ष्ठातुकाकृष्णसत्वमाहोरजस्तमः ॥ १ ॥ अर्थ ॥ अ
र्जुन प्रश्न करेछे. जे शास्त्रविधी छोडीने श्रद्धा अनुगतछ

पांचननउरे छे तेनी निष्ठाथीं सत्वरज अथवा तमते
रुहे ॥ १ ॥ श्लोक ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ त्रिविधाभ
वतिश्रद्धादेहिनांसास्वभावजा ॥ सात्विकीराजसी
चैवतामसीचेतितांशृणु ॥ २ ॥ अर्थ ॥ श्रीभगवान
कहेछे जीवने सात्विक राजसीने तामसी एवी त्रिविध
श्रधाथाएछे ते स्वभावथींनछे. तेने सांभल ॥ २ ॥ ए
॥ श्लोक ॥ सत्वानुरूपासर्वस्यश्रद्धाभवतिभारत ॥
श्रद्धामयोयंपुरुषोयोयच्छ्रद्धःसएवसः ॥ ३ ॥ अ
र्थ ॥ शरवनी शरधा सत्वनुं रुपछे. आ पुरुष श्रद्धामय
छे जेनी जे श्रद्धा ते तेनेंअनुसारेपथाएछे ॥ ३ ॥ श्लो
क ॥ यजंतेसात्विकादेवान्यक्षरक्षांसिराजसाः ॥
प्रेतान्भूतगणांश्चान्येयजंतेतामसाजनाः ॥ ४ ॥

॥અર્થ॥ સાત્વિક જન દેવનું ને રાજસ યક્ષ રાક્ષસનું ને-
તામસ ભૂત પ્રેતનું યજન કરે છે ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ अशा-
स्त्रविहितं घोरं तप्यंते ये तपो जनाः ॥ दंभाहंकारसं-
युक्ताः कामरागबलान्विताः ॥ ५ ॥ અર્થ ॥ જે શાસ્ત્ર-
માં નહીં કહું એવું ઘોર તપ કરે છે. દંભ અને અહંકાર એણે
કરીને યુગત અને કામ રાગ બળે કરીને યુગત છે. ॥ ५ ॥
॥ श्लोक ॥ कर्षयंतः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः ॥
मांचैवांतः शरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान् ॥ ६ ॥
અર્થ ॥ તે મુરખ્ય શરીરમાં રહ્યો જે ભૂતગ્રામ ઇંદ્રિયનો સ-
મૂહ ને તે અંતરમાં રહ્યો તે વો હું તેને પીડા કરે છે તેને આસુરી
નિશ્ચયવાળા જાણ ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ आहारस्त्वपि सर्-
वस्य त्रिविधो भवति प्रियः ॥ यज्ञस्तपस्तथा दानं ते

षां भेदमिमं शृणु ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ सर्वने त्रण प्रकारनो
आहार प्रियछे. अनेजग्न तपने दान अपण ए
त्रण प्रकारना छे. तेनाभेद सांभल ॥ ७ ॥ श्लोक ॥
आयुः सत्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः ॥ रस्याः
स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्विकप्रियाः ॥ ८
॥ अर्थ ॥ आयुष्य सत्वबल आरोग्य सुख प्रीति ए
ओने वधारनारा रसवान चिकणा स्थीर अने प्री
तिकरनारा एवा आहार सात्विकने प्रियछेण ॥ ८ ॥
श्लोक ॥ कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः
॥ आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ॥ ९ ॥ अ
र्थ ॥ अत्यंत कडवा खारा घणाउनाती खाटुं खालरवां
एवां दुखशोकरोगने देनारां जे आहार ते राजसने प्रिय

छे ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ यातयामं गतरसं पूतिपर्युषितं
च यत् ॥ उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्
॥१०॥ अर्थ ॥ जे पोहोरना आगल थी थएला अनरस
रहित दुरगंध लुगतडाठां जेडां अभंगल जेवां आहार
तेतामसने प्रियछे ॥ १० ॥ श्लोक ॥ अफलाकांक्षि-
भिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते ॥ यष्टव्यमेवेति मनः स
माधाय स सात्विकः ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ इच्छा छोडी
ने जगननीरक्षणं जेम निश्चे करीने ने विधिथी कहा
परमाणे जगनने आचरे छे ते जगन सात्विक छे ॥ ११
॥ अभिसंधाय तु फलं दंभार्थमपि चैव यत् ॥ इज्य
ते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम् ॥ १२ ॥ अर्थ ॥ फ
लोनुं संधाने करीने अथवा दंभारथ ने यजन करे छे ते

जगनने राजस एम कह्या ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ विधिहीनमसृष्टान्नंमंत्रहीनमदक्षिणम् ॥ श्रद्धा विरहितंयज्ञंतामसंपरिचक्षते ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ विधी हीन अने जेमां अन्न शामरपण नहीं अने मंत्र दक्षिणा हीन अने श्रद्धारहीत एवा जगनने तामस कहे छे ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनंशौचमार्जवम् ॥ ब्रह्मचर्यमहिंसाचशारीरंतपउच्यते ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ देव ब्राह्मण गुरु अने ज्ञानी एमनुं पुजन अने पवित्रता शरलताने ब्रह्मचर्य अने अहिंसा एने देहे करी तप कहे छे ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ अनुद्वेगकरंवाक्यंसत्यंप्रीयहितंचयत् ॥ स्वाध्यायाभ्यसनंचैव वाङ्मयं तप उच्यते ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ सत्यप्रियहितनेउद्वेगनकरना

एवुं नाहीं ने लाषण अने वेदाध्ययन अने वाचीक तप
कहेछे ॥ १५ ॥ श्लोक ॥ मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौन
मात्मविनिग्रहः ॥ भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानस
मुच्यते ॥ १६ ॥ अर्थ ॥ मननी प्रसंनताने कोमळपणुं मु
नीवरत मनवश्य करवुं कपटरहित पणुं अेने मानसत
प कहेछे ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ श्रद्धया परया तप्तं तपस्त-
त्त्रिविधं नरैः ॥ अफलाकांक्षिभिर्युक्तैः सात्विकं परि
चक्षते ॥ १७ ॥ अर्थ ॥ अेत्रणप्रकारनो तप फलेच्छा-
छोडीने सावधानपणे श्रद्धाराखीने करेछे. तेने सात्वि
क तप कहेछे ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ सत्कार मान पूजार्थं तपो
दंभेन चैव यत् ॥ क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रु
वम् ॥ १८ ॥ अर्थ ॥ जे सतकार मान पूजाने अर्थे हेतो

करीनें करेलां तपनें तामस कहे छे ते त्यजने अनुवछे ॥
१८ ॥ श्लोक ॥ मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते त
पः ॥ परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम् ॥
१९ ॥ अर्थ ॥ अविवेकने कुशल आग्रहे करीने शरीरने
पीडा करीने पारका नाशने अरथे करेलां तपने तामस
कहे छे ॥१९॥ श्लोक ॥ दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽ
नुपकारिणे ॥ देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्विकं स्मृ
तं ॥ २० ॥ अर्थ ॥ आपवुं ए बुधी ए करीने सामाथी
उपकारनुं अनुसंधान नकरतां देश काळने पात्रने विशे जे
आपवुं ते सातवीक दान छे ॥२०॥ श्लोक ॥ यत्तु
प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः ॥ दीयते च परि
क्लिष्टं तद्राजसमुदाहृतम् ॥ २१ ॥ अर्थ ॥ प्रत्युप-

कार सारि अथवा फलोद्देशे करीने अने क्लेशे करीने
रव्य आपवुं तेने राजसदान केहेछे ॥२१॥ श्लोक ॥
अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते ॥ असत्कृ
तमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम् ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ स
त्कार विनाने अनादर जुगत तेमज अपवित्र देशाने
विशे परावणी विना अनउपात्रने ने दान देशे ते तामस
दान केहेछे ॥२२॥ श्लोक ॥ ॐतत्सदिति निर्देशो
ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः ॥ ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च
यज्ञाश्च विहिताः पुरा ॥ २३ ॥ अर्थ ॥ ॐतत्स
त् ए त्रण प्रकारनी ब्रह्मनी संगना छे तेणे करीने ब्र
ह्मा ए आगल ने विशे ब्राह्मण जगनने वेद कर्या ॥२३॥
श्लोक ॥ तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः

॥ प्रवर्त्तंते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनां ॥२४॥
अर्थ ॥ माटे ब्रह्मवेत्ता बि क्रिया जगन दाननें तपशास्त्रो
क्तने आत्मे वो उच्चार करीने निरंतर प्रवरतें छे ॥ श्लोक
॥ तदित्यनभिसंधाय फलं यज्ञतपःक्रियाः ॥ दान
क्रियाश्च विविधाः क्रियंते मोक्षकांक्षिभिः ॥२५॥
अर्थ ॥ ते मुमुक्षु फलाभिसंधान रहित अेवां छतां तत्
अेवो उच्चार करीने विविध जगन दान तप क्रिया करे छे ॥
२५॥ श्लोक ॥ सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयु
ज्यते ॥ प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते
॥२६॥ अर्थ ॥ सद्भावने विशेने साधुभावने विशे
सत् शब्दनो प्रयोग करे छे तेमज हे पारथ प्रशस्त करमने
विशे सत् शब्दनो प्रयोग करे छे ॥२६॥ श्लोक ॥ य-

यज्ञेतपसिदानेचस्थितिःसदितिचोच्यते ॥ कर्मचै
वतदर्थीयंसदित्येवाभिधीयते ॥२७॥ अर्थ ॥ यज्ञ
दान तपनेविशे जे रहेवुं तेनेसतकहेछे ॥ फलनेपरमेश्व
रनीप्रीति अनेअर्थेनेपणसतकहेछे ॥२७॥ श्लोक ॥ अ
श्रद्धयाहुतंदत्तंतपस्तप्तंकृतंचयत् ॥ असदित्युच्य
तेपार्थनचतत्प्रेत्यनोइह ॥२८॥ इतिश्रीमद्भ॰
श्रद्धात्रयविभागयोगोनामसप्तदशोऽध्यायः ॥१७
॥ अर्थ ॥ होम दान तपजेकांइंकरेते अश्रद्धाए क
रीहोय तो तेने असत कहेछे॰ आलोकने विशे कांइंका
मनुनथी ॥२८॥ इतिश्रीमद्भ॰ श्रद्धात्रयविभा
गयोगोनामसप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥ छ ॥
॥ अर्जुनउवाच ॥ संन्यासस्यमहाबाहोतत

त्वमिच्छामिवेदितम् ॥ त्यागस्यचहृषीकेशपृथ-
क्केशिनिषूदन ॥ १ ॥ अर्थ ॥ अरजुन पुछे छे हे महा
बाहो हे ह्रषीकेश हे केशी दैत्यने मारनार सन्यास
अने त्यागीनुं तत्वनुं जुगवुं जाणवाने इछुं छुं ॥ १ ॥
श्लोक ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ काम्यानां कर्मणांन्या
संसंन्यासंकवयोविदुः ॥ सर्वकर्मफलत्यागंप्राहु
स्त्यागंविचक्षणा ॥ २ ॥ अर्थ ॥ श्रीकृष्ण कहे छे का
मनाना करम छोडवाने संन्यास जोगविद्वान कहे छे अ
ने सरव करमना फलत्यागने त्याग एम कहे छे ॥ २ ॥
श्लोक ॥ त्याज्यंदोषवदित्येके कर्मप्राहुर्मनीषिणः
॥ यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यमितिचापरे ॥ ३ ॥ अ
र्थ ॥ केटला एक पुरुषो मान करम दोषनी पेठे कोई छोड

વું એમ કેહેછે. કેટલા એક જગન દાન તપ અને કર
મ એને છોડવા એમ કેહેછે. ત્યાગી વિશે મારો નિશ્ચય
છું તે સાંભળજે ॥ श्लोक ॥ निश्चयं शृणु मे तत्र
त्यागे भरतसत्तम ॥ त्यागो हि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः
संप्रकीर्तितः ॥ ४ ॥ यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं का
र्यमेव तत् ॥ यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणा
म् ॥ ५ ॥ અર્થ ॥ ત્યાગ ત્રણ પ્રકારનો કેહેછે. તે જગ
ન દાન તપને કરમ એ છોડવા એનહીં પણ કરવાં તે કેમજે
જગન દાન તપને કરમ આ નિષ્કામ પુરૂષને કરમચિત્તની
શુદ્ધિ કરેછે માટે ॥ श्लोक ॥ एतान्यपि तु कर्माणि सं
गं त्यक्त्वा फलानि च ॥ कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चि
तं मतमुत्तमम् ॥ ६ ॥ અર્થ ॥ માટે એ જ કરમ સંગ

અનેફલ છોડીને કરવાં એમામારે નિશ્ચે ઉત્તમ મતછે
॥ ६ ॥ श्लोक ॥ नियतस्यतु सन्यास कर्मणो नोपप
द्यते ॥ मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः
॥ ७ ॥ અર્થ ॥ નિત્યકરમનો ત્યાગ યોગ્યનથી. અજ્ઞા
ને કરીને તે કરમનો ત્યાગ કરે તેને તામસત્યાગ કેહેછે.
॥ ७ ॥ श्लोक ॥ दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभया
त्यजेत् ॥ सकृत्वा राजसंत्यागं नैवत्यागफलं लभे-
त् ॥ ८ ॥ અર્થ ॥ કરમ દુઃખરૂપછે. એમમાનીને તેને શરી
રકલેશ લયથકી ત્યાગ કરેછે. તે ત્યાગ રાજસછે તે કરીને
પુરૂષ ત્યાગમુફલ પામનાર નથી. ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ कार्य
नित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेर्ऽजुन ॥ संगत्यक्त्वा फ
लंचैव सत्यागः सात्विकोमतः ॥ ९ ॥ અર્થ ॥ કરમ

अवश्यकरतव्य छे एम जाणीने नियतकरम संग अ-
ने फल छोडीने करे छे ते त्याग सात्विक मान्यो छे ॥९॥
॥श्लोक॥ नद्वेष्ट्यकुशलंकर्म कुशलेनानुषज्जते॥
त्यागीसत्वसमाविष्टोमेधावीछिन्नसंशयः ॥१०॥
अर्थ ॥ ते माटे जे पुरुष सात्विक ते त्यागी छे. ते बु-
द्धीमानने विनाश छे छतो असुख देणनारो करम-
नो द्वेश करतो नथी. ॥१०॥ श्लोक ॥ नहिदेहभृता
शक्यंत्यक्तुंकर्माण्यशेषतः ॥ यस्तुकर्मफलत्या-
गीसत्यागीत्यभिधीयते ॥११॥ अर्थ ॥ देहधारी
पुरुषने सरवे करमनो त्याग अशक्य छे. ते माटे जे कर-
मफलनो छोडनारो तेने त्यागी एम यथारथ कहे छे ॥११॥
॥श्लोक॥ अनिष्टमिष्टंमिश्रंच त्रिविधंकर्मणः फलं

॥भवत्यत्यागिनांप्रेत्यनतुसन्यासिनां क्वचित्॥१२
॥ अर्थ ॥ करमना त्रिविध फलछे ईस्ट अनिस्ट ने
मिश्रीत फलते त्यागनकरनारने मरणपछी प्राप्तथा-
यछे ने त्यागकरनारने कदापी प्रापत थतानथी॥१२॥
श्लोक ॥ पंचैतानिमहाबाहो कारणानिनिबोधमे॥
सांख्येकृतांतेप्रोक्तानि सिद्धयेसर्वकर्मणाम् ॥
१३॥ अर्थ ॥ हे माहाबाहो ने मध्ये करमनी परीसमा
पतीछे एवा वेदांत शास्त्रमां सरव करमनी सीधी
ने अर्थे पांच कारण कयांछे तेसांभल ॥१३॥ श्लो-
क॥ अधिष्ठानंतथाकर्ता करणंचपृथक्विधम्॥
विविधाश्चपृथक्चेष्टादैवंचैवात्रपंचमम् ॥१४॥
अर्थ ॥ देह अहंकार ईंद्रियो नाना प्रकारनी व्यापारने

पंचमंदैवं ॥१४॥ श्लोक ॥ शरीरवाङ्मनोभिर्य-
त्कर्मप्रारंभतेनरः ॥ न्याय्यंवाविपरीतंवापंचैतेत
स्यहेतवः ॥१५॥ अर्थ ॥ मनुष्य कांइ काया वाचा मन
सीक जे धरम अधरम करम आरंभे छे॰ तेने ए पांच हेतु छे॰
॥१५॥ श्लोक ॥ तत्रैवंसतिकर्तारमात्मानंकेवलं
तुयः ॥ पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्नसपश्यतिदुर्मतिः
॥ १६ ॥ अर्थ ॥ एवा पांच कारणे करीने करम थतां
छतां अग्यान थकी जे पोताने जकरता जाणे छे ते दुरम
ती कांइ जाणतो नथी ॥१६॥ श्लोक ॥ यस्यनाहं-
कृतोभावोबुद्धिर्यस्यनलिप्यते ॥ हत्वापिसइमां-
ल्लोकान्नहंतिननिबध्यते ॥१७॥ अर्थ ॥ जेहने अ
हंकार नथी अने जेनी बुद्धी लोपातां नथी॰ ते पुरष आ

लोकने मारीनें पण मारतो नथी अने बंध पामतो न
थी ॥१७॥ श्लोक ॥ ज्ञानंज्ञेयंपरिज्ञातात्रिविधाक
र्मचोदना ॥ कारणंकर्मकर्तेतित्रिविधः कर्मसंग्रहः
॥१८॥ अर्थ ॥ ग्नानग्नेयने परिज्ञाता ओत्रणकरम
प्रवरत करेछे॰ तेमकरम संग्रह पण कारणकरम अने
करता ओत्रण प्रकारनुंछे॰ ॥१८॥ श्लोक ॥ ज्ञानंकर्मच
कर्ताचत्रिधैवगुणभेदतः ॥ प्रोच्यते गुणसंख्याने य
थावच्छृणुतान्यपि ॥ १९ ॥ अर्थ ॥ ग्नान करमने
करता ओत्रणने शांख्यशास्त्रमां गुणनाभेदकरीनेंविवि
धकयांछे॰ तेपणयथास्थित सांभल ॥१९॥ श्लोक
॥ सर्वभूतेषुयेनैकं भावमव्ययमीक्षते ॥ अविभक्तं
विभक्तेषु तज्ज्ञानंविद्धिसात्विकम् ॥२०॥ अर्थ ॥

वेंच्यांअेला अेवां सरव भूतने विशे नथी वेंच्या ओअे
वो अेक अविनाशी पदारथ जाणे करीने जुवे छे॰ तेगना
न सातवीक जाण ॥२०॥ श्लोक ॥ पृथक्त्वेनतु यज्ज्ञानं
नानाभावान्पृथग्विधान् ॥ वेत्तिसर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञा
नं विद्धिराजसम् ॥ २१ ॥ अर्थ ॥ जेणे करीने प्राणी
मां नाना प्रकारना पदारथ देख्याय छे तेगनान राजस
जाण ॥२१॥ श्लोक ॥ यस्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्-
कार्ये सक्तमहैतुकम् ॥ अतत्त्वार्थवदल्पंच तत्तामस
मुदाहृतम् ॥ २२ ॥ अर्थ ॥ जे अलपने अेक कार
जने विशे पूरणवत जाणे छे अने ततवारथ रहित तेग
नान तामस कहुं छे ॥२२॥ श्लोक ॥ नियतं संगरहि
तमरागद्वेषतः कृतम् ॥ अफलप्रेप्सुना कर्मयत्त

त्सात्त्विकमुच्यते ॥ २३ ॥ अर्थ ॥ फलनी इछानथी
अनारो संगने राग द्वेष छोडीने नियत करम करे ते करम
ने सात्विक करम कहेछे ॥ २३ ॥ यत्तुकामेप्सुनाकर्म
साहंकारेणवापुनः ॥ क्रियतेबहुलायासं तद्राज-
समुदाहृतम् ॥ २४ ॥ अर्थ ॥ सकाम अथवा अहं
कार जुगतने अत्यंत मेहनतने जुगत पुरुषने करम
आचरेछे तेराजस करम कहेछे ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ अ
नुबंधंक्षयंहिंसामनपेक्ष्यचपौरुषम् ॥ मोहादार
भ्यतेकर्मयत्तत्तामस मुच्यते ॥ २५ ॥ अर्थ ॥ ने कर
म मोह करीने परनाशपरपीडा अने पुरुषातन ए ओ
नो विचार नकरतां आरंभ्युं तेने तामस कहेछे ॥ २५ ॥
॥ श्लोक ॥ मुक्तसंगोनहंवादीधृत्युत्साहसमन्वि

तः ॥ सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्तासात्त्विक उच्य
ते ॥ २६ ॥ अर्थ ॥ असंग अहंकार करीने जे जो जनार
धैरजने उच्छाह करीने जुगत सिधी अने असीधीने विशे
निरविकार एहेवा करताने सात्विक केहेछे ॥ २६ ॥ श्लो
क ॥ रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः
॥ हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः ॥ २७
॥ अर्थ ॥ विषय लंपट अने करम फलनी इच्छा करनारो
ने लोभीने जीवने दुःख देनारो अभगज अे ओने इ
ष्ट अनीष्टनी प्रापतीने विशे हरख शोक पामनारो अे
वा करताने राजस केहेछे ॥ २७ ॥ श्लोक ॥ अयुक्तः
प्राकृतः स्तब्धः शठो नैष्कृतिकोऽलसः ॥ विषादी
दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते ॥ २८ ॥ अर्थ ॥

विनासावधानने संशयकार विनानी बुधीने स्तब्
ध मूर्ष्यने डग आलशी दीरघ अनेदीरघसूत्री ए-
वाकरताने तामस कहेछे ॥ २८ ॥ श्लोक ॥ बुद्धेर्भेदं धृ
तेश्चैवगुणतस्त्रिविधंशृणु ॥ प्रोच्यमानमशेषेण
पृथक्त्वेन धनंजय ॥ २९ ॥ अर्थ ॥ बुधीअने धीरज
नागुणेकरीने त्रणप्रकारना भेदतेनेनजुजवाकहुंछूं
तेशांभल ॥ २९ ॥ श्लोक ॥ प्रवृत्तिंच निवृत्तिंच का
र्याकार्येभयाभये ॥ बंधमोक्षंचयावेत्ति बुद्धिःसा
पार्थसात्विकी ॥ ३० ॥ अर्थ ॥ प्रवृत्तीने निवृत्ती-
नेकरवने अकरवनभयने अभयबंधने मोक्ष एने
जेजाणेछे ते बुधी सात्विकी जाणवी ॥ ३० ॥ श्लोक
॥ ययाधर्ममधर्मंचकार्यंचाकार्यमेवच ॥ अयथा

वत्प्रजानातिबुद्धिः सापार्थराजसी॥ ३१ ॥ अर्थ॥
जेबुधी धरम अधरम करन अकरन एने जेमछे
तेम जाणतीनथी ते राजसीछे॥ ३१ ॥ श्लोक॥ अ
धर्मं धर्ममितियामन्यते तमसावृताः ॥ सर्वार्थी
न् विपरीतांश्चबुद्धिःसापार्थतामसी ॥३२॥अर्थ
॥ तेम मोगुणे घेरी छती अधरमने धरमने शास्त्रअ
रथने विपरीत मानेछे जेबुधी तामसी छे॥ ३२ ॥
॥श्लोक॥ धृत्यायया धारयते मनः प्राणेंद्रियः
क्रियाः॥ योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सापार्थसा
त्विकी॥ ३३॥ अर्थ॥ जे अचल धारणा एकरीने म
न प्राणने इंद्रीय एमनी क्रियाने एकाग्रता थे धारण
करेछे ते धारणा सात्वीक छे॥ ३३ ॥ श्लोक ॥यया॰

तु धर्मकामार्थान् धृत्या धारयतेऽर्जुन ॥ प्रसंगेन
फलाकांक्षी धृतिः सा पार्थ राजसी ॥ ३४ ॥ अर्थ ॥
जे धारणा ए करीने धरम काम ने अर्थ एनुं धारण
करे छे. अने तेनो ते संबंध करीने फलने इच्छे छे ते धा
रणा राजसी छे ॥ ३४ ॥ श्लोक ॥ यया स्वप्नं भयं शो
कं विषादं मदमेव च ॥ न विमुंचति दुर्मेधा धृतिः सा
पार्थ तामसी ॥ ३५ ॥ अर्थ ॥ जेणे करीने दुरमति
पुरुष नींद्रा भय शोक विषाद मदने छोडतो नथी ते.
धारणा तामसी छे. ॥ ३५ ॥ श्लोक ॥ सुखं त्विदा
नीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ ॥ अभ्यासाद्रमते
यत्र दुःखांतं च निगच्छति ॥ ३६ ॥ अर्थ ॥ हवे
त्रण प्रकारना सुख सांभळ जे सुखने विशे अभ्यासे

करीने रमेछे अने दुःखना अंतने पामेछे ॥ ३६॥
श्लोक ॥ यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ॥
तत्सुखं सात्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ॥
३७॥ अर्थ ॥ जे आरंभमां झेरजेवुं अने परिणामे
अमृतसरखुं एवुं पोतानी बुद्धीनी प्रसन्नताथकी
थएलुं जे सुख तेने सात्वीक कहेछे ॥ ३७ ॥ श्लोक ॥
विषयेंद्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् ॥ परि
णामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम् ॥ ३८॥ अ
र्थ ॥ जे सुख विषय अने इंद्रीयना जोगे करीने थाएछे
जे आरंभमां अमृत सरखुं ने परिणामे विषजेवुं सु
ख राजसछे ॥ ३८॥ श्लोक ॥ यदग्रे चानुबंधे च सु
खं मोहनमात्मनः ॥ निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्ता-

मसमुदाहृतम् ॥ ३९ ॥ अर्थ ॥ आरंभने परिणामे
बुधीने मोहकारक अने निद्रा आलस्य प्रमाद ए
थकी थईने सुख ते तामस कहुं छे ॥ ३९ ॥ श्लोक ॥
नतदस्ति पृथिव्यांवा दिविदेवेषुवापुनः ॥ सत्वंप्र
कृतिजैर्मुक्तंयदेभिःस्यात्त्रिभिर्गुणैः ॥ ४० ॥ अ
र्थ ॥ आलोकने विशे अथवा परलोकने विशे देवताओ
मां जे मायाथकी थयां ने त्रण गुण तेने करीने मुकाए
लो कोई पुरुष नथी ॥ ४० ॥ श्लोक ॥ ब्राह्मणक्षत्रिय
विशांशूद्राणांचपरंतप ॥ कर्माणि प्रविभक्तानि
स्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥ ४१ ॥ अर्थ ॥ ब्राह्मणक्षत्रि
य वैश्य ने शूद्र जे मनाकरमने जे प्रकृती थकी त्रण गुणे
करीने वंच्या छेलो छे ॥ ४१ ॥ श्लोक ॥ शमोदमःतपः

शौचंक्षांतिरार्जवमेवच ॥ ज्ञानंविज्ञानमास्तिक्यं
ब्रह्मकर्मस्वभावजम् ॥ ४२ ॥ अर्थ ॥ शम दम तप
पवित्रता शांती आरजव ज्ञानविज्ञान आस्तिकता ए स्व
भावीक ब्राह्मणनुं करम छे ॥ ४२ ॥ श्लोक ॥ शौर्यंतेजो
धृतिर्दाक्ष्यंयुद्धेचाप्यपलायनम् ॥ दानमीश्वरभा
वश्चक्षात्रंकर्मस्वभावजम् ॥ ४३ ॥ अर्थ ॥ शूरवी
रपणुं तेज धीरज डाहापणुं युधने विषे भागवुं नहि दानने
नियमे राखवुं ए स्वभावीक क्षत्रीयनुं करम छे ॥ ४३ ॥
श्लोक ॥ कृषिगोरक्षवाणिज्यंवैश्यंकर्मस्वभाव
जम् ॥ परिचर्यात्मकंकर्मशूद्रस्यापिस्वभावज
म् ॥ ४४ ॥ अर्थ ॥ खेती गायोनी रक्षा अने व्यापार
ए स्वभावीक नित्य वैश्य करम छे अने शूद्रनुं स्वाभा

વિકરમસેવાછે ॥ ૪૪ ॥ શ્લોક ॥ स्वेस्वेकर्मण्य-
भिरतः संसिद्धिं लभतेनरः ॥ स्वकर्मनिरतः सि-
द्धिं यथाविंदति तच्छृणु ॥ ૪૫ ॥ અર્થ ॥ પોતપો-
તાનું કરમમાં રહેલો પુરૂષ સિધીને પામેછે તે સિધી-
નો પ્રકાર સાંભળ ॥ ૪૫ ॥ શ્લોક ॥ यतः प्रवृत्तिर्भू-
तानां येन सर्वमिदं ततम् ॥ स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सि-
द्धिं विंदति मानवः ॥ ४६ ॥ અર્થ ॥ જે થકી પ્રાણીની
પ્રવૃતિ અને જેણે આ સરવ વ્યાપ્યું છે તેને પોતાના કરમે
કરીને આરાધીને સીધી પામેછે ॥ ૪૬ ॥ શ્લોક ॥ श्रे-
यान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ॥ स्व-
भावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषं ॥ ४७ ॥
અર્થ ॥ ને પરધરમ ઉત્તમ પ્રકારે આચર્યો ને સ્વ-

घरम अगारे अंगहीन छे॰ तथापी तेतेना करतां अत्यं-
त स्रेष्ट छे॥४७॥श्लोक॥ सहजं कर्म कौंतेय स-
दोषमपि न त्यजेत्॥ सर्वारंभा हि दोषेण धूमेना-
ग्निरिवावृताः॥४८॥अर्थ॥ पुरुष स्वभावनीयत
करतो छतो दोष पामतो नथी स्वभावी क करम सदोष
होय तोपण छोडवुं नहीं धुंवाडेने म अगनी विंटाएलो
छे तेम सरव करम दोष विंटाएला छे॥ श्लोक॥ अ-
सक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः॥ नैष्कर्म्य
सिद्धिं परमां सन्यासेनाधिगच्छति॥४९॥अर्थ
॥ सरव ठेकाणे आशकती विनानी बुधीनेनी आ-
तमो ने जीतेल एवो ने जेमां स्पृहा नहीं एवो पुरुष
संन्यासे करीने परम निःकरम सिधीने पामे छे॥४९॥

श्लोक ॥ सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति नि-
बोध मे ॥ समासेनैव कौंतेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा
॥ ५० ॥ अर्थ ॥ ते सीधीने पामीने तेने प्रकारे ब्रह्म
मां मळे छे. ते प्रकार संक्षेपे करीने मारायीं ज्ञाननेगना
ननी निष्ठा उतम छे ॥ ५० ॥ श्लोक ॥ बुद्ध्या विशुद्ध-
या युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च ॥ शब्दादीन् विषयां
स्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च ॥ ५१ ॥ अर्थ ॥ विशुद्ध
बुधी जे करीने जुगत जेवो धैरये करीने इंद्रीयने नि
यम मां राखीने शब्दादी विषयने रागद्वेष छोडीने ॥ ५१ ॥
श्लोक ॥ विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः
॥ ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥ ५२ ॥
अर्थ ॥ जे एकांत मां रे हे ने थोडु जमनार ने वाणी दे

हने मनने नियममां राखे अेवे निरंतर ध्यान योग
वाळो ते वैराग योग वाळानो आश्रो करी ओ छे अे
वो पुरुष ॥ ५२ ॥ श्लोक ॥ अहंकारबलंदर्पंकामं-
क्रोधंपरिग्रहम् ॥ विमुच्यनिर्ममःशांतोब्रह्मभू
यायकल्पते ॥ ५३ ॥ अर्थ ॥ अहंकार बळ दरप को
म क्रोध परिग्रह करीने ममता रहित शांत थतो
छतो ब्राह्मण पणाने योग्य थाय छे ॥ ५३ ॥ श्लोक
॥ ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मानशोचतिनकांक्षति ॥ स-
मःसर्वेषुभूतेषुमद्भक्तिंलभतेपराम् ॥ ५४ ॥ अर्थ
॥ ते ब्रह्मपुरुष प्रसन्न चित्त थको छतो शोक अने इच्छा
करतो छतो अेवो अने सरव प्राणीना सम अेवो पर अे-
वी भक्तिलगतीने पामीने ॥ ५४ ॥ श्लोक ॥ भक्त्या

मामभिजानातियावान्यश्चास्मितत्त्वतः ॥ ततो
मां तत्त्वतोज्ञात्वा विशतेतदनंतरम् ॥ ५५ ॥ अर्थ ॥
तेआयोगे करीने मारुं व्यापकत्व तथा स्वरूप अने तत्व
थकी जाणेछे तारपछी मारामय थायछे ॥ ५५ ॥ श्लो
क ॥ सर्वकर्माण्यपिसदाकुर्वाणोमद्व्यपाश्रयः ॥
मत्प्रसादादवाप्नोतिशाश्वतंपदमव्ययम् ॥ ५६ ॥
अर्थ ॥ मनुष्य मारोज आश्रय करीने निरंतर स्वरग
करम करतो छतो पण मारी प्रशन्नता एकरीने शा-
श्वत एवुं परमपदने पामेछे ॥ ५६ ॥ श्लोक ॥ चे
तसासर्वकर्माणिमयिसंन्यस्यमत्परः ॥ बुद्धियो
गमुपाश्रित्यमच्चित्तःसततंभव ॥ ५७ ॥ अर्थ ॥
चीत करीने सरव करमनुं मारे विषे अरपण करनेमा

रा परायण थतो छतो. बुधीयोगनो आश्रय करीने नि-
रंतर मच्चित्त था ॥५७॥ श्लोक ॥ मच्चित्तः सर्वदुर्गा-
णि मत्प्रसादात्तरिष्यसि॥ अथचेत्वमहंकारान्न-
श्रोष्यसि विनंक्ष्यसि ॥५८॥ अर्थ ॥ कांके एम करा
थीं तुमारी प्रसन्नता एकरीने सरव संकटने तरीश अने
तुं मारो वचन अहंकार करीने नहीं मानतो नाश पामी
श ॥५८॥ श्लोक ॥ यदहंकारमाश्रित्य नयोत्स्य इति
मन्यसे ॥ मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्य
ति॥५९॥ अर्थ ॥ जे अहंकारनो आशरो करीने जु
ध नहीं करीश एम मानीश तो एतारो निशचय मिथ्या
छे॥५९॥ श्लोक॥ स्वभावजेन कौंतेय निबद्धः स्वे
न कर्मणा ॥ कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशो॥

पितत् ॥ ६० ॥ अर्थ ॥ कौंते स्वभावतने तेतरकर्मना
वशे मोहकरीने नेमलबाने ईच्छतो नथी तेम स्वभा
वीक अेवा पोताना करमे करीने अंधाअेल अेवोने परव
श थतो छतो करीश ॥ ६० ॥ श्लोक ॥ ईश्वरः सर्वभू-
तानां हृद्देशेऽर्जुनतिष्ठति ॥ भ्रामयन्सर्वभूताना-
यंत्रारूढानि मायया ॥ ६१ ॥ अर्थ ॥ ईश्वर मायाअ
करीने सरव प्राणीने काल चक्र उपर चडेलां अेवाने भ्र
मण करावता छतां तेमना हृदय देशमां रहाछे ॥ ६१ ॥
श्लोक ॥ तमेवशरणंगच्छ सर्वभावेनभारत ॥ त-
त्प्रसादात्परांशांतिंस्थानं प्राप्स्यसिशाश्वतम् ॥
६२ ॥ अर्थ ॥ हे भारत तेने सरव भावे करीने शरण
जाउं तेनी प्रसन्नता अे करीने परम गतीने अने श

श्वतस्थानने पामीश ॥ ६२ ॥ श्लोक ॥ इतिते ज्ञा-
नमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया ॥ विमृश्यैतदशेषेण
यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ६३ ॥ अर्थ ॥ एवुं घणुं छा-
नामां छानुं ग्नान मेतने कह्युं एशारववनो विचारकरप
छेतने सारुं देख्या तेमकर ॥ ६३ ॥ श्लोक ॥ सर्वगु
ह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः ॥ इष्टोसि मे दृढम-
तिस्ततो वक्ष्यामि ते हितम् ॥ ६४ ॥ अर्थ ॥ सरवगु
ह्यमां अतिगुह्य एवुं मारुं शरेस्ट वचन श्रीथी॰ सां-
भळ तुं मारो इष्टछेने मित्र छे एमाटे तारा हीतने
अरथे कहुंछुं ॥ ६४ ॥ श्लोक ॥ मन्मना भव मद्भ-
क्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ॥ मामेवैष्यसि सत्यं ते
प्रतिजाने प्रियोसि मे ॥ ६५ ॥ अर्थ ॥ मारे विशेमि

त ऐवो महारो भगतथाने मारीनयतप करने मने न
नमस्कारकर ऐटले मने पामीश ऐतने हुं सतज्ञापुरी
वक सत्य कहुं छों॰ कांके तुं मारो प्रियछे॥ ६५ ॥श्लो
क॥ सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज॥ अ
हंत्वांसर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुच॥ ६६ ॥
अर्थ॥ सरव धरमने छोडीने मने ऐकने शरणपो
मकुं तने शरव पापथकी मुकत करीश शोक करीश नहीं
॥ ६६ ॥श्लोक॥ इदंतेनातपस्काय नाभक्ताय-
कदाचन॥ नचाशुश्रूषवे वाच्यंनचमांयोभ्यसूय
ति॥ ६७ ॥ अर्थ॥ ऐ आगले कहुं ते गनान तपरहि
तने अने अभगतने अने गुरुसेवानकरनारने मारीर्छ
रस्याकरनारने ऐवापुरुषने तुं कदी ऐ कहीश नहीं॥

॥ ६७ ॥ श्लोक ॥ यइदं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभि
धास्यति ॥ भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंश
यः ॥ ६८ ॥ अर्थ ॥ जे पुरुष ए परम गुह्य माहारा-
भगतने केहे छे ते मारे विशे परम भगती ए करीने निः
संशय मने पामशे ॥ ६८ ॥ श्लोक ॥ नचतस्मान्मनु
ष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः ॥ भविता नच मे तस्मा
दन्यः प्रियतरो भुवि ॥ ६९ ॥ अर्थ ॥ ते विना मने म
नुष्य मां कोय अत्यंत प्रिय करनार नथी ने ते विना मने
प्रथवी मां प्रिय अत्यंत बिजो कोय नथी ॥ ६९ ॥ श्लोक
॥ अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः ज्ञानय
ज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥ ७० ॥ अर्थ ॥
ए आपणां परम संवा[illegible] ने जे [illegible]न करशे ते पुरुष-

ज्ञान जगनेडरीने भरियनन डरेअेवी भारी मतीछे॥
७०॥ श्लोक॥ श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपियोन
रः॥ सोपिमुक्तः शुभान्लोकान् प्राप्नुयात् पुण्यकर्म
णाम्॥ ७१॥ अर्थ॥ जे पुरुष दोष दृष्टी रहित सरधा
अेडरीने आसंवादनुं श्रवण मात्र डरशे तेपण मुडत थै
यो छतो पुन्य डरनाराशुभलोडनेपामशे॥ ७१॥ श्लोक
॥ कच्चिदेतच्छ्रुतंपार्थत्वयैकाग्रेणचेतसा॥ कच्चि
दज्ञानसंमोहः प्रनष्टस्ते धनंजय॥ ७२॥ अर्थ॥ हे
अरजुन मेंने डहुं ते अेडाग्रचित्ते सांभलयुं छे॰ हे धनंज
य तारो अज्ञाननो संमोह गयोशुं॥ ७३॥ श्लोक॥
अर्जुनउवाच॥ नष्टोमोहस्मृतिर्लब्ध्वात्वत्प्रसादा
न्मयाऽच्युतास्थितोस्मिगतसंदेहः करिष्येवचनंतव

॥ ७३ ॥ अर्थ ॥ अरजुन कहे छे- हे अच्युत तमारी
परशाद ताए मारो मोहनाश पाम्यो मने स्मरती-
आवी छे संदेहथआ हवे तमे कहेशो तेम करीश ॥७३
॥ श्लोक ॥ संजयउवाच ॥ इत्यहं वासुदेवस्य-
पार्थस्यच महात्मनः ॥ संवाद मिममश्रोषमद्भु
तंरोमहर्षणम् ॥ ७४ ॥ अर्थ ॥ संजय कहे छे- हे रा
जन एप्रकारे महातमाएवा वासुदेव अने अरजुन
ए बेनो अद्भुतरुवाडांने हरखाथाए एवो संवा
द तेने मे सांभल्यो ॥७४॥ श्लोक ॥ व्यासप्रसादा
च्छ्रुतवानेतद्गुह्यमहंपरं ॥ योगंयोगेश्वरात्कृ-
ष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम् ॥ ७५ ॥ अर्थ ॥ व्या
सजीनी प्रसन्नताए करीने ए [illegible] छानो साक्षात्

श्री कृष्णना मुखथकी सांभळ्यो पछी अने में भगवान
नुं विश्वरूप पण जोयुं छे ॥ ७५ ॥ श्लोक ॥ राजन्सं-
स्मृत्य संस्मृत्य संवाद मिमम द्भुतम् ॥ केशवार्जु-
नयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः ॥ ७६ ॥ अर्थ ॥
हे राजा ए पवित्र ने अद्भुत एवा श्री कृष्णने अर्जुन
ना संवादने वारंवार संभारण करीने हुं वारंवार हरख पा-
मुं छुं ॥ ७६ ॥ श्लोक ॥ तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपम
त्यद्भुतं हरेः ॥ विस्मयो मे महान् राजन् हृष्यामि च
पुनः पुनः ॥ ७७ ॥ अर्थ ॥ अने ते हरीनो अद्भुत रू-
पने वारंवार स्मरण करीने मोटो विस्मय थाय छे ने वा-
रंवार हरख पामुं छुं ॥ ७७ ॥ श्लोक ॥ यत्र योगेश्वरः
कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ॥ तत्र श्रीर्विजयो भूति-

त्वा ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ ७८ ॥ ॥ इतिश्रीम
द्भगवद्गीता० सन्यासयोगो नामाष्टादशोऽध्यायः
॥ १८ ॥ छ ॥ अर्थ ॥ ज्हां जोगेश्वर कृष्ण ने ज्
हां धनुरधर अरजुन त्हां लक्ष्मी विजय ने ऐश्वरी
य अने अचल नीती रहे छे. एवी मारी मती छे. ॥
७८ ॥ ॥ इतिश्री महत्भगवतगीतारथ टीपीकायाम्
मोक्ष सन्यास जोगो नाम अशटादशोऽध्यायः ॥ १८
॥ ॥ श्री गोपालकृष्णार्पणमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥
आपुस्तक नवे हनुमान गलीमा बापु सदाशीव शेट शेटये श्रीवर्धनक
र अने पंडीत सीवजी लाग्यधर अने पासे तयार करीने हुं सुधारीने
सने १८७८ ना आकटबर प्रमाणे रजिस्टर करेला छे. मिति पोषवाद रवी
वार शाके १८१० तारीख २० जनेवारी सन १८८९ इसवी.

॥ अथ चतुश्लोकी ॥ सर्वदासर्वभावेनभजनीयोव्रजा-
धिपः ॥ स्वस्यायमेवधर्मोहिनान्यः क्वापिकदाचन ॥
१ ॥ येवंसदास्मकर्त्तव्यं स्वयमेवकरिष्यति ॥ प्रभुःसर्वस-
मर्थोहिततोनिश्चिंततांव्रजेत् ॥ २ ॥ यदिश्रीगोकुलाधी-
शो धृतःसर्वात्मनाहृदि ॥ ततःकिमपरंब्रूहिलौकिकैर्वै-
दिकैरपि ॥ ३ ॥ अतःसर्वात्माशस्वत् गोकुलेश्वरपादयो
स्मरणंभजनंचापिनत्याज्यमितिमेमतिः ॥ ४ ॥ इ-
तिश्रीवल्लभाचार्य विरचितं चतुश्लोकीसमासम् ॥ आ
स्तोत्र लिषनारव्यास शिवजी भाग्यचंद ॥ ॥ ॥

इति श्रीमद्भगवद्गीता

सटीक गुजराथी समाप्तः